वर्ष 29 | चैत्र-वैशाख | अप्रैल-2024 | अंक 04 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन
आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
मूल्य 10/- रुपये
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2024-2026

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

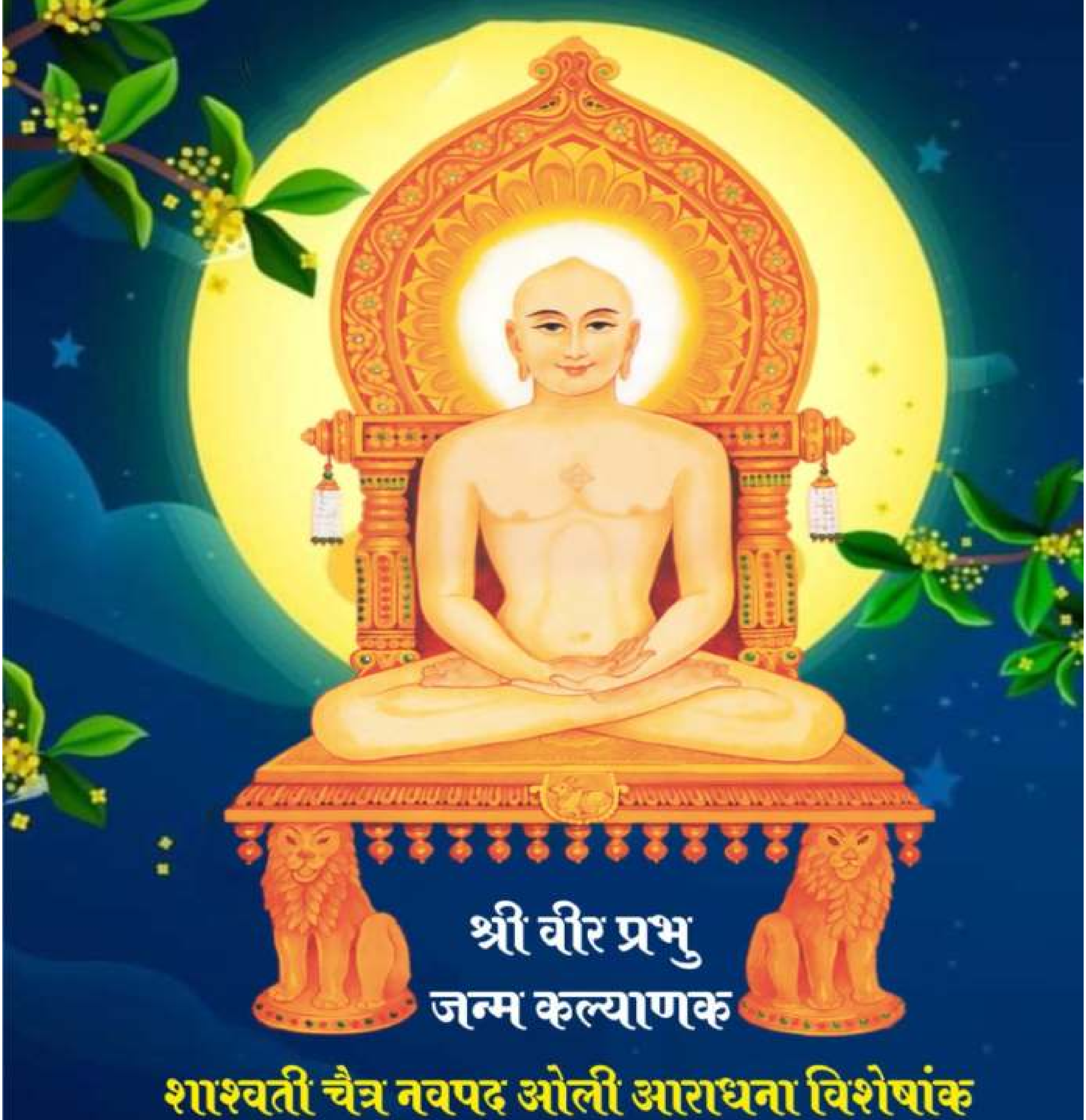

श्री वीर प्रभु जन्म कल्याणक

शाश्वती चैत्र नवपद ओली आराधना विशेषांक

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन

उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897

1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in

2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन "पप्पू"

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

पानी स्वभाव से ही शीतल है तो भी उसे किसी बरतन में रखकर, नीचे यदि आग जलती रखें तो, उसकी इच्छा न होने पर भी वह पानी उष्ण बनता है; उसी तरह यह व्यवसाय भी, समाधि से शीतल ऐसे पुरुष के प्रति उष्णता का कारण बनता है।

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

परम पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

चत्तारी परमंगाणि, दुल्लहाणीह जंतुणो।
माणुसुत्तं सुई सद्धा, संजमम्मि य वीरियं॥

सांसारिक प्राणी के चार परम अंग अत्यन्त दुर्लभ है- 1-मनुष्य भव, 2- धर्म श्रवण, 3- धर्म में श्रद्धा, 4- संयम में वीर्य-पराक्रम। ***- उत्तरा. सूत्र, 3.1***

पाथेय

हे नाथ ! मैं अधीर एवं अशान्त हुए बिना, प्रतीक्षा कर रहा हूं उस शुभ मुहूर्त की जब तुम्हारे और मेरे बीच से हट जाएगा एक और आवरण और हमारी एकता हो जाएगी अधिक पुष्ट एवं संघन। मैं जानता हूं कि यह आवरण निर्मित हुआ है छोटी-छोटी त्रुटियों से, अनेक अपूर्णताओं और आसक्तियों से फिर यह कैसे दूर होगा, हमारी सत्ता से ? बिना विचलित हुए धीरे-धीरे, सतर्कता से तथा अनेक प्रयासों द्वारा अथवा तुम्हारे प्रेम के सर्व समर्थ प्रकाश द्वारा। तब अकस्मात यह पर्दा फट जाएगा और सभी त्रुटियां एवं अपूर्णताएं हो जाएंगी रुपान्तरित पूर्ण प्रकाश में। प्रभु मैं अज्ञान हूं नहीं कर कर सकता अपने से प्रश्न, बस प्रतीक्षा करता हूं इस विश्वास के साथ कि तुम्हारे संकल्प के समक्ष नहीं टिक सकेगा कोई व्यवधान। तुम कर्त्ता हो मैं तुम्हारा यंत्र हूं,बनाओ अपने इस यंत्र को अधिकाधिक योग्य एवं कुशल।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-29 चैत्र-वैशाख अप्रेल 2024 अंक-4

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय 3

2- विषय सूची 4

3- धर्मचक्र की धूरी : परमात्मा और तप -(सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन 5-6
कर्मो का फल दुःख.... एस.सी.कटारिया

4- नानाजी म.सा. नेमसागरजी म.सा. का जीवन परिचय- प.पू.मोक्षरत्नसागर म. 7-9
त्रिशला न न्दन वीर की.... - डॉ. दिलीप धींग, गोचरी

5- प्रेरणा पूंज परम पूज्य आचार्य श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी म.सा.-श्रीमती प्रभा जैन 10

6- आज भी प्रासंगिक भ गवान महावीर-संदीप फाफरिया 11

7- पर्वतों में यशस्वी-श्रेष्ठ है मेरु, ज्ञात पुत्रों में श्रेष्ठ महावीर-शांतिलाल सगरावत, 12
ज्ञानदृष्टि-ज्ञान दीपक

8- श्रमण भगवान महावीर प्रभु का 18 वां भव त्रिपृष्ठ वासुदेव 13-16
हमारे महत्वपूर्ण तीज त्यौहार

9- श्री महावीर भगवान के महाश्राक, व्यक्तित्व की अमिट छाप, ज्ञानी 17-18

10- परिवार का खाता संभाल कर रखिये-रामेश्वरदास गुप्त 19-20

11- कल तुम्हारा है.... डॉ. एम.एस. अग्रवाल,आयंबिल 21-22

12- चौबीस तीर्थकरों का परिचय 23

13- प.पू.उपकारी संगीत सम्राट आ.भ.श्री जिनचंद्रसागरजी म.सा. का गुणानुवाद 24
-मोक्षरत्नसागर म.

14- जीव दया फण्ड (विज्ञापन) 25

15- वर्गपहेली- 347 - जयंतीलाल जैन,रतलाम 26

16- ज्ञान गंगोत्री- 347-आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा., अभक्ष्य क्या है ? 27

17- शासन-समाचार 28-41

18- हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक 42
प्रतिनिधि नियुक्त करना है,सबके बिंदु-दुःख का सागर

संपादकीय

धर्मचक्र की धुरी : परमात्मा और तप

जैन संस्कृति के चिर अतीत की स्वर्णिम गौरव गरिमा की भाव भीनी चर्चा, प्रशस्ति अनादिकाल से होती आ रही है विश्व को जैन संस्कृति जो ज्ञान दिया और जो कुछ आज प्रगति का स्वरुप हमें दिखाई दे रहा है उसके मूल में प्रथम तीर्थंकर परमात्मा श्री ऋषभदेव प्रभु द्वारा प्रदत्त की गई संस्कृति ही है। संस्कृति अपने उत्कर्ष और उन्मेष के लिये सुसंस्कृत महान आत्माओं को दृंढ़ कर उन्हें संसार के उत्थान के लिये सामने लाती है। नवसृजन अभियान के अंतर्गत विश्व के जन मानस को या यूं कहें अनगढ़ मानव को देवमानव बना देने के लिये व्यक्ति के सांस्कृतिक और संस्कार परिष्कार की प्रक्रिया को पुर्न स्थापित करने का कार्य जिन महान आत्मन के द्वारा किया गया उसमें प्रथम स्थान, प्रथम तीर्थंकर परमात्मा श्री ऋषभदेव प्रभु का ही आता है। प्रभु ने जगत के जीवमात्र के कल्याण के लिये असि-मसि -कृषि का उपदेश देकर मनुष्य को सुसंस्कृत बनाने और जीवन निर्माण करने की अद्भूत शिक्षा देकर मनुष्य ही नहीं जीवमात्र का कल्याण किया है। प्रथम तीर्थंकर परमात्मा से लेकर वर्तमान युग में चौबीसवें तीर्थंकर परमात्मा वर्तमान शासनाधिपति श्रीप्रभुवीर के शासन में भी यह प्रक्रिया निरंतर विद्यमान है।

हमारी संस्कृति का मूलभूत एक उद्देश्य है वह है **''श्रेष्ठ संस्कारवान मानव का निर्माण''** मनुष्य को सृष्टा की सर्वोत्कृष्ट कृत्ति माना जाता है। प्राणजगत में इसीलिये उसका स्थान विशिष्टता लिये हुए हैं, समय-समय पर उसकी समर्थता मानसिक बुद्धिमत्ता और गुण संपन्नता को विकसित करने के लिये महान महार्षियों का आगमन इस धरा पर होता रहा है। कुसंस्कारों से मुक्ति एवं सुसंस्कारिता के उपार्जन हेतु, मनुष्य रुपी भटके हुए देवता के भटकाव को निरस्त करने के लिये एक राजमार्ग, देवसंस्कृति के निर्धारकों, मनीषियों द्वारा निर्धारित किया गया है वह धर्मतंत्र द्वारा मनुष्य के अनैतिक और ब्राह्य चेतना को परिष्कृत किया जाये इस हेतु मानव को दान शील तप और भाव रुपी चार रत्नों का उपहार दिया गया जिनका योग्य रुप से उपयोग कर मानव अपने जीवन को सार्थक कर सकता है।

मानव मन को परिष्कृत करने में इन चार रत्नों में जो श्रेष्ठता की गिनती में आता है वह है तप। भाव के साथ जुड़कर जब मनुष्य त्याग की भावना के साथ अपने जीवन में दान के भाव लाता है तो उसमें तप भाव का जागरण हो जाता है, यह तप की भावना ही उसके जीवन की दशा और दिशा बदल देती है। सूत्रकृतांग सूत्र में तप के बारे उसके पुण्य प्रभाव से अवगत कराया गया है किः-

साउणी जह पंसुगुंड्यिां,विहुणिय धंसयइ सिंध इंय।
एवं रवि योवहाणंठ कंम्प खवइ तपस्मि माहणे ॥

अर्थात् पक्षी जिस प्रकार अपने परों को फड़फड़ाकर उन पर लगी धूल को झटक देता है उसी प्रकार तप कर तपस्वी भी अपने कर्मो का अपनयन यथा शीघ्र कर देता है तप की महिमा महान है, तप द्वारा ही मनुष्य अपने अभीष्ट पद को प्राप्त कर सकता है, पाप यह अपनी अपूर्णता को दूर कर अपने चारित्र को उज्जवल तथा पवित्र बनाता है। घीर पुरुष तप द्वारा संसार में उन्नति के शिखर पर विराजमान होता है।

हाँ! मैं आपसे हमारी श्रेष्ठतम तपाराधना शाश्वती ओली की ही बात कर रहा है जो इस माह 15 अप्रेल से आरंभ होगी। वर्ष में दो बार चैत्र और आसोज मास से आनेवाली अखण्ड इस तप साधना से हजारों लाखों आराधकों ने अपने जीवन में परिवर्तन अनुभव किया है। आयंबिल के नाम से जगत विख्यात इस तप में विगई अर्थात् तला गला घी तेल से रहित रुखा-सुखा आहार एक बार एक स्थान पर बैठकर अनासक्त भाव से शरीर की रक्षा एवं रसेन्द्रिय पर कंट्रोल कर हमारे संस्कारों को पुष्ट करने का काम करता है।

शासन तंत्र और धर्म तंत्र की तुलना करने पर प्रतीत होता है कि शासन का, सत्ता का प्रभाव तो मात्र भौतिक क्षेत्र पर ही होता है जबकि तप और धर्म तंत्र, व्यक्तित्व के गहन क्षेत्र में प्रवेश करके भावश्रद्धा प्रखर प्रज्ञा और आदर्श कर्म निष्ठा को उभारकर मनुष्य में देवत्व का उदय करता है। राजतंत्र में श्रद्धा जगाने तथा संयमी उदार जीवन की प्रेरणा देने वाले दूर-दूर तक कहीं नजर नहीं आते हैं जबकि धर्मतप देवीय सम्पदाओं से लबालब भरा हुआ है, यह अनुभव हजारों हजार तपस्वी के जीवन में होते है और वे आत्म संतोष को पाते हैं। चिंतिनऔर चरित्र में उत्कृष्टता भर देनेवाली यह

आयंबिल तप की आराधना मानव के लिये आत्म कल्याण साधने का अचूक उपाय है। मानवीय कायाधारी इस संसार में करोड़ों अरबों की संख्या में है, असंख्य जन्म लेकर मृत्यु को प्राप्त हो चुके है और असंख्य आनेवाले समय में जन्म लेने की प्रतीक्षा में है पर इनमें से कितनों को यह सर्वश्रेष्ठ तप करने का सौभाग्य मिलता है ? कितने है जो श्रेष्ठ अनुकरणीय धर्म क्रियाओं से जुड़कर अपने जीवन को सफल बना पाते है। अल्प संख्या में होने के बाद भी हमारी संस्कृति हमें यह श्रेष्ठ आराधना करने का स्वर्णिम अवसर प्रदान करती है।

जैन धर्म जबर्जस्त है लेकिन यहां कोई जबरजस्ती किसी पर नहीं होती है। हम अपनी शक्ति के अनुसार नवकारसी से लेकर मासक्षमण, 100 ओली तक कर सकते हैं। यह सब हमारी शारीरिक क्षमता और भाव पर निर्भर करता है। आपके लिये सब मार्ग खुले है, समभाव और कर्म निर्जरा करने के लिये आयंबिल तप मंगल अवसर प्रदान करता है।

इसी माह हम संवत्सर में भी प्रवेश करने जा रहे है। बंसत कुछ दिन पूर्व ही जीवन में आनंद धोलकर उत्साहमय जीवन जीने की प्रेरणा देकर गया है और नववर्ष का शुभारंभ एक बार फिर हममें नई संकल्प शक्ति की अभिवृद्धि कर कषाय कल्मषों के निराकरण तथा जीवन में नव जागरण लाने के लिए प्रस्तुत हुआ है तो आईये ! धर्म चक्र की धुरी पर चलते हुए जीवन में नव संकल्प का जागरण कर उत्साहमय भावों की अभिवृद्धि करें। यह मंगल कामना !

- डॉ. सुभाष जैन

कर्मो का फल दुःख....

✱ एस.सी.कटारिया, रतलाम

संसार में प्रायः देखा जाता है कि विद्वान, दरिद्र होता है जिसमें विद्वता नहीं हो वह धनवान दिखाई देता है। ऐसा एकांत नियम तो नहीं है फिर भी लोकोति है कि लक्ष्मी और सरस्वती का परस्पर पर झगड़ा है। लक्ष्मी देवी प्रसन्न तो सरस्वती नाराज और सरस्वती प्रसन्न तो लक्ष्मी नाराज। व्यक्ति में जो दुःख आता है वह उसके कर्मो का ही फल होता है। शहर के बस्ती में एक मर्तबा मुनिश्री पधारे वे अपने भक्त के यहां गोचरी (आहार पानी) लेने गये। मुनिश्री ने देखा कि उनका श्रावक इतना धर्म आराधक और विद्वान, परन्तु लक्ष्मी इससे नाराज, मुनिश्री को विचार आया कि उनका श्रावक थोड़ा सम्पन्न हो जाय तो अच्छा। एक दिन मुनिराज ने बातों में ही अपने इन श्रावक से पूछा कि- कैसी स्थिति चल रही है आपकी ? श्रावकजी उनसे बोले कि- गुरुदेव अशुभ कर्म का उदय भोग रहा हूं। तब मुनिराज द्रवित होकर कोई मंत्र-तंत्र का कागज उन्हें देने लगे और कहा- इसे रख लो, थोड़े दिन में सब ठीक हो जाएगा। सुश्रावक ने इस पर कहा- गुरुदेव ! मैं तो अपने अशुभ कर्म के उदय को भोग रहा हूं, इसमें मुझे कुछ भी आकुलता नहीं है। मैं अपने कर्म को समभाव से भोग कर इसे नष्ट करने का पुरुषार्थ कर रहा हूं, पर आप प्रबल पुरुषार्थ से प्राप्त अपने चरित्र में इस तुच्छ कार्य के लिये दोष लगा रहे है। प्रभु ! मेरे शुभ कर्म का जब उदय होगा तो सब अपने आप ठीक हो जाएगा।

ऐसे सुश्रावक को धन्य है क्योंकि कर्मो का फल भगवान महावीर को भी भोगना पड़ा, कर्म किसी को नहीं छोड़ते, कर्मो का फल यदि दुःख के रुप में मिलता है तो उसे भोगना पड़ता है। इसलिए यदि किसी विद्वान पर लक्ष्मी की कृपा नहीं होता उसके कर्मो का ही फल है, जिसके कारण अर्थ अभाव में आए दुःखों को भोगना है। मुनिश्री अपने द्वारा दिया गया जा रहा श्रावक को मंत्र-तंत्र का नुस्खा वापस लेते हुए उनके मुख से निकला धन्य है, श्रावक श्रेष्ठ होता है, तुम्हारी दृढ़ समभाव एवं कर्म भोग की इच्छा शक्ति की मनोभावना की दशा को।

समस्त जगत के जीव कुछ न कुछ पाकर सुख प्राप्त करना चाहते हैं। महान चक्रवर्ती राजा भी बढ़ते हुए वैभव और परिग्रह के संकल्प में प्रयत्नशील रहता है और प्राप्त करने में सुख मानता है। परन्तु अहो ! ज्ञानियों ने तो उससे उलटा ही सुख का मार्ग निर्णित किया है कि किंचित मात्र भी ग्रहण करना यही सुख का नाश है।

नानाजी म.सा. नेमसागरजी म.सा. का जीवन परिचय

✻ प.पू. मोक्षरत्नसागर म.

उपकारियों के उपकार को कैसे भुलाये ?

मेरा सर्व परिवार संयमी बने ऐसी भावनावाले

जन्म- कालियावाड़ी (नवसारी)

दीक्षा- विक्रम संवत् 2010 कालियावाड़ी (नवसारी)

दीक्षा समय उम्र- 55 साल

दीक्षा पर्याय- 25 साल

दीक्षा गुरुदेव- प.पू. गच्छाधिपति आ.भ. श्री देवेन्द्र सागर सूरीश्वरजी म.सा.

विशेषज्ञ- गुरुदेवश्रीजी को समर्पित।

कालधर्म- बहुचराजी (गुजरात) भमराओं का उपसर्ग में समाधि।

प्रायः दीक्षा लेने के बाद अपने उपकारी गुरुदेव से पहली बार अलग होना पड़ा । रामपुरा-भंकोड़ा (गुजरात) प्राण प्रतिष्ठादि महोत्सव बाद।

आपश्रीजी प.पू. उपकारी गुरुदेवश्रीजी के 9 वें शिष्यरत्न थे। अपने संसारीपने में संयम लेने से पहले आपने अपने से जिनको जो देना बाकी था, उन सबको बुलाकर अपने घर पर जिमाकर जितनी आपकी शक्ति थी उस मुताबिक देकर उनको संतुष्ट कर आपने संयम ग्रहण किया। अपने गुरुदेव के दाहिना हाथ बनकर पत्र व्यवहार एवं उपधानादि प्रसंग में आराधकों को अणहारी दवादि देकर समाधि-शांति प्रदान करने का कार्य संभाला।

एक बार अपने गुरुदेव ने आपको सबके बीच अपमान जनक शब्दों से नवाजा तब किसी ने आपको पूछा कि- **''आपको गुरुदेव ने भला-बुरा कहा तो आपको बुरा न लगा ?'' तब हंसते-हंसते आपने कहा कि- ''उपकारी गुरुदेव मुझको गलती होने पर न कहेंगे तो कौन कहेगा ?'' यह तो मेरा अहोभाव है ।**

खुद संयमी बनने के बाद प्रायः विक्रम संवत 2014 याने 4 साल बाद अपनी धर्मपत्नी सुश्राविका लक्ष्मणी बेन (साध्वीजी तत्वरसा श्रीजी म.) और बेटी मधु बेन (साध्वीजी) मोहजिताश्रीजी को भी संयमी बनाया।

लघुवय दीक्षिता विदुषी साध्वी मृगेन्द्रजी म. की शिष्या नानीजी म. साध्वीजी तत्वरसाश्रीजी म. बने और साध्वीजी तत्वरसा श्रीजी म. की शिष्या बेटी म. साध्वी श्री मोहजित श्रीजी म. बने।

मेरे उपकारी गुरुदेव मालव भूषण आ.भ.श्री नवरत्न सागर सूरीश्वरजी म.सा. को आचार्य पदवी लेने के बाद साध्वीजी मृगेन्द्रश्रीजी म. ने कहा- ''आपश्रीजी आचार्य पदवी के योग्य होने पर भी आचार्य पद स्वीकारने में क्यों मना कर रहे हो ?''

विदुषी साध्वीजी मृगेन्द्रश्रीजी म.का उपकार याद कर शेषकाल में विहार दौरान जब मेरे उपकारी गुरुदेवश्रीजी को ज्ञात हुआ कि- साध्वीजी मृगेन्द्रश्रीजी म. कालधर्म को पाये है तब आपश्रीजी के नयन आंसुओं से भर गये। नानीजी म. के गुरुणीजी प्रायः 300 शिष्या-प्रशिष्या के गुरुणीजी थे। साध्वीजी तत्वरसाश्रीजी साध्वीजी मृगेन्द्रश्रीजी म. समाधि पूर्वक पालीताणा आरीसा भवन धर्मशाला में कालधर्म पाये।

मासीजी म. साध्वीजी मोहजितश्रीजी म. अपने दादीजी म. साध्वीजी मृगेन्द्रश्रीजी म. के पास यथाशक्य अभ्यास एवं विनयादि आराधना करते विदुषी साध्वीजी म. गुरुणीजी की कृपाबल से बने।

अपने शिष्य परिवार में 1- साध्वीजी मार्दवताश्रीजी म., 2- बेन म. साध्वीजी मोक्षरताश्रीजी, 3- साध्वीजी विशद्गुणा श्रीजी म., 4- बेन म. विरक्ता श्रीजी म., 5- साध्वीजी प्रशमरताजी म. ने अपने स्वयं 100 ओलीजी वर्धमान तप की नहीं कि लेकिन आपश्रीजी की प्रेरणा-निश्रा में अपनी प्रायः 5 शिष्या ने 100 ओलीजी सशातापूर्वक पूर्ण की।

मासीजी म. साध्वीजी मोहजिताश्रीजी म. असोज चैत्र मास की शाश्वती नवपदजी ओलीजी में तबियत ठीक नही होने पर भी प्रायः जीवनभर आपने यह दोनों ओलीजी में आयंबिल तप को छोड़ा नहीं। वे कोई श्रावक या श्राविका को धार्मिक अभ्यास करना हो उनको उनकी अनुकूलतानुसार अभ्यासादि कराते थे। भाषा समिति के उपयोगवाले थे। शंखेश्वर महातीर्थ में प्रभु उपकारी गुरुदेव मालव भूषण पंन्यास प्रवर नवरत्नसागर म.सा. की निश्रा में हुए। उपधान तप में अपने भानेज मितेष को कहते थे कि- हम दोपहर में 3 को मिलेंगे। ऐसा वाक्य नहीं बोलना चाहिये क्योंकि सुननेवाले श्रावक या श्राविका नहीं जानते है कि साध्वीजी म. उनके मासीजी म. है। इसलिये खूब संभलकर बोलना चाहिये जिससे

अन्य लोगों के लिए वचन अन्यर्थक न बने और प्रशंसा करने कहते थे कि तुम कॉलेज B.Sc पढ़े हो उनकी पहचान ऐसे हो जाती कि किसी को कुछ कहना हो तो सबके बीच कहने के बजाय जिनको कहना हो उनके पास जाकर कोई दूसरा न सुन सके। इसी तरह जो बात जिनसे जो कहनी होती उनको कह देते।

साध्वीजी मोहजिता श्रीजी म. (मासीजी म.) को अपने मुनि मोक्षरत्नसागर म. (भाणेज म.) के होनेवाले वर्धमान तप के 100 वीं ओलीजी पारणा महोत्सव के लिये खुब ही उत्साह उमंग था और उसके लिये अपने पास आनेवाले भक्तों को प्रेरणा देकर अपने भाणेज म. के पारणा महोत्सव के लिये यथायोग्य व्यवस्था कर दी थी और अपने चारित्र जीवन के सारभव भाणेज म. (मुनि श्री मोक्षरत्नसागर म.) को सलाह देते थे कि वर्धमान तप को प्राथमिकता दो और दूसरे तप 100 ओलीजी के पूर्णाहुति के बाद करना। जगत के सभी जीव जिनशासन में जुड़े ऐसी भावनावाले प्रथम बहन म., साध्वीजी मोक्षरता श्रीजी म. ने नवसारी (गुजरात) में प्रायः कॉलेज पास करके सूरत में 4 मुमुक्षुओं की सामूहिक दीक्षा महोत्सव में प.पू.उपकारी आ.भ. श्री चंद्रोदय सूरीश्वरजी म.सा. (पूज्य नेमि सूरीश्वरजी समुदाय के) की निश्रा में चारित्र जीवन स्वीकारा।

प्रायः 50 साल का दीक्षा पर्याय में 100 ओलीजी वर्धमान तप को पूर्ण करके 100 ओलीजी का पारणा मुंबई (वाशी) मुकाम पर समर्थ गच्छाधिपति प.पू. सूर्योदय सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में शासन प्रभावना पूर्वक सम्पन्न किया। पहले बेन म. साध्वीजी मोक्षरता श्रीजी म. ने प्रेरणा देकर अपनी 1- साध्वीजी व्रतरता श्रीजी म., 2- साध्वीजी समरता श्रीजी म. (अहमदाबाद के) 3- साध्वीजी वात्सल्यरता श्रीजी म. (मुंबई के) को शिष्या परिवार में जोड़ा। ज्योतिष्यादि का अभ्यासदि जोरदार था। अपने गुरुणीजी मासीजी म. (साध्वीजी मोहजिताश्रीजी म.) के साथ और स्वतंत्र चौमासा भी शासन प्रभावना पूर्वक करते थे। सुख मुकामे अंतिम समय में महावीर हॉस्पिटल (अठवा गेट) में रोगों की पीड़ा के बीच समाधिपूर्वक कालधर्म पाये। अपने छोटे भाई म. (मुनि मोक्षरत्नसागर) के ऊपर बहुत ही प्रेम रखते थे। भाई म. को ये वस्तु लगेगी कि यह पातरे, नवकारवाली-पुस्तकादि, कामली, संथारादि को संभालकर रखते थे। अंतिम प्रायः 16 साल पूर्व नंदिगाम (गुजरात) मुकामे मिलने के बाद परलोक प्रयाण किया।

बहन म. साध्वीजी विरक्ताश्रीजी म. की दीक्षा प्यारा मुकाम में प.पू.आ.भ.श्री देवेन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. के कर कमलों से सम्पन्न हुई। नंदुबार (महाराष्ट्र) में वर्षा बहन (साध्वी विरक्ताश्रीजी म) ने मोक्ष माला, 10 उपवास करके परिधान की दीक्षा लेने के दिन भी अपने संसारी पिताजी जयंतिभाई, अनाज किराना की दुकान को प्रायः आपने संभाला।

बहन म. साध्वीजी विरक्ता श्रीजी का संयम जीवन, आराधनामय जीवन, परमात्मा भक्तिमय जीवन गुरुणीजी मासी म. (साध्वीजी मोक्षजिता श्रीजी म.) को समर्पित जीवन प्रायः सुरेन्द्रनगर चौमासा में साध्वीजी म. मोक्षरता श्रीजी म. ने 30 उपवास और साध्वीजी विरक्ताश्रीजी म. ने 45 उपवास की भीष्म तपस्या सशाता की।

साध्वीजी विरक्ताश्रीजी म. के 100 वर्धमान ओलीजी का पारणा महोत्सव प.पू. उपकारी गुरुदेव मालव भूषण आ.भ. श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में श्री गिरि विहार धर्मशाला पालीताणा में सम्पन्न हुआ। चवविहार छट्ठ करके सात यात्रा प्रायः 95 से 100 ओलीजी तक आप ने सशातापूर्वक की। संयमी बनने की प्रेरणा करते कहते थे कि -संयमी मरण समय अपने उपकारी गुरुदेव को परमात्मा को और नवकार महामंत्र को याद करना। जबकि संसारी मरण समय अपना पैसा-परिवार-पत्नी, पुत्र-पुत्रवधु वगैरह याद करेगा और दुर्ध्यान करके दुर्गति में चला जायेगा। और कहा करते थे कि- अनंत सिद्धों की भूमि में यात्रा दौरान ''नमो सिद्धाणं'' का जाप करना चाहिये। मुनि मोक्षरत्नसागर म. को संयमी बनाने में संयम में आगे बढ़ाने में विशेष आपका मार्गदर्शन था। साध्वीजी विरक्ताश्रीजी म. प्रेम से इस वैकल्पिक सूत्र की गाथा **''जयं चरे जयं सिद्धे''** यह गाथा का अर्थ प.पू. उपकारी गुरुदेव आचार्य मालव भूषण श्री नवरत्नसागरजी म.सा. को वंदन विनयादि करके पढ़ने का बनाते थे। प.पू.उपकारी गुरुदेव जयणा धर्म के लिये और भाषा समिति का पालन करने के लिये अपना कहा हुआ शिष्य न माने के वह बात साध्वीजी विरक्ताश्रीजी म. (बहन म.) को बताकर बहन म. के द्वारा अपने शिष्य को संयम जीवन में आगे बढ़ाने का प्रबल पुरुषार्थ करते थे।

जीवन के अंत में समय में महावीर हॉस्पिटल (अठवा गेट के पास, सूरत) में अपने छोटे भाई म. मोक्षरत्नसागर म.

से अंतिम बात संसारी संगीता बेन के द्वारा की। यह बात कराने में उपकारी आचार्य भ. वागड़ (राज.) विभूषण श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा. का उपकार रहा। फागण सुदि-2 सुबह 2.15 मिनिट प्रायः लीमड़े का उपाश्रय, गोपीपुरा, सूरत, संसारी चेतना बेन के मुख से नवकार महामंत्र का श्रवण करते हुए यह नश्वर देह का त्याग करके परलोक पथ के लिये प्रस्थान किया।

भूल-चुक सुधारना। उपकारी प.पू. मुनिराज श्री नेमसागरजी म.सा. (नानाजी म.सा.) साध्वीजी तत्वरसा श्रीजी म. (नानीजी म.) साध्वीजी मोहजिता श्रीजी म. (मासीजी म.) साध्वीजी मोक्षरता श्रीजी म. (बहन म.) साध्वीजी विरक्ता श्रीजी म. (बहन म.) का जीवन चरित्र मेरे क्षयोपशम अनुसार लिखा है। जीवन चरित्र लिखने में वीतराग की आज्ञा विरुद्ध मन-वचन-काया से जो विराधना हुई हो उसका त्रिविधिपूर्वक मिच्छामि दुक्कडं। लिखी मोक्षरत्नसागर - 29/2/2024 दर्भावती तीर्थ

गोचरी

हुआ समय गोचरी का तो घर के द्वार खोल दो,
राह देखों संतों की घंटी की आशा छोड़दो,
''धर्मलाभ'' का स्वर सुना तो, पधारो ''साहेबजी बोल दो'',
विनय पूर्वक खड़े होकर ''मत्थेण वंदामी'' बोल दो।
पाटे पर थाली, थाली में पात्र, करो सुपात्र दान,
समस्त परिवार लाभ ले, नन्हों को भी दे ज्ञान,
कच्चे जल से दूर रहे, नीचे गिरे नहीं, रखे इतना ध्यान,
फूंक न मारो गर्म दूध में, जयणा का है विधान।
रसोई पूर्व संतों को याद नहीं, बनने के बाद भूलना नहीं,
विनय पूर्वक वहोराओ, टीवी बंद चालू करो नहीं,
केला आधा ही वहोराओ, छिलका पूरा उतारो नहीं,
बहनों माथे ओढ़कर, भाईयों गणवेश बिगाड़े नहीं।
श्रावक का घर स्वयं बताए, नौकर पुजारी नहीं,
उपाश्रय तक साथ चले, रास्ता इंगित करें नहीं,
जैनेतर भी विचार करें, इन निर्मोही संतों का,
मन ही मन आनंद उठे, सानिध्य मिल गुरु भगवंतों का।
गोचरी का महत्व समझो, मिलता है पुण्य से लाभ,
वर्षो तक संतों के दर्शन नहीं, तरसते है हम और आप,
नयसार और धन्ना सार्थवाह, पामे समकित ज्ञान,
हम भी उनकी राह चले, जो करते है कल्याण।

त्रिशला नन्दन वीर की....

✻ डॉ. दिलीप धींग

त्रिशला नन्दन वीर की, जय बोलो महावीर की॥
सिद्धार्थ के घर-आंगन में, चेत सुदी तेरस को जन्मे।
कुंडग्राम का कण-कण हर्षित, सुशियां छाई जन-जन में।
देव-देवियां जश्न मनाएँ, मेरु शिखर सुनीर की ।।
त्रिशला नन्दन वीर की, जय बोलो महावीर की ।।1।।

धन-धान्य में अतिशय वृद्धि, वर्धमान है पहला नाम।
निर्भय, निडर अभय के साधक, महावीर को कोटि प्रणाम।
कर्म-युद्ध के अनुपम योद्धा, आत्म-विजेता वीर की।
त्रिशला नन्दन वीर की, जय बोलो महावीर की ।।2।।

तीस बरस का स्वर्णिम यौवन, मगसर बद दसमी का मान।
वर्धमान ने दीक्षा ले ली, करके वर्षीदान महान।
बोले सुरनर जय हो, जय हो, महात्यागी अतिवीर की।
त्रिशला नन्दन वीर की, जय बोलो महावीर की ।।3।।

साढ़े बारह वर्ष साधना, कष्ट अपार सहे समभाव।
ज्ञान-ध्यान का सूरज मानो, चला धरा पर पाँव-पाँव।
पापों का तम हरने वाले, परम धीर, गंभीर की,
त्रिशला नन्दन वीर की, जय बोलो महावीर की ।।4।।

ऋजुबालुका का तट आया, कलकल सरिता शाम सुहानी।
सुद वैशाख तिथि दसमी को, बने सन्मति केवलज्ञानी।
देव-दुंदुभि बोली जय-जय, तीर्थकर महावीर की।
त्रिशला नन्दन वीर की, जय बोलो महावीर की ।।5।।

प्रभु पधारे मध्यम पावा, इक उजला इतिहास बना।
सुद बैशाख तिथि ग्यारस को, चार तीर्थ की स्थापना।
समवसरण में बहने वाले, शीतल मंद समीर की।
त्रिशला नन्दन वीर की, जय बोलो महावीर की ।।6।।

तीस बरस तक अमृत बरसा, लाखों प्राणी हुए अमर।
कार्तिक बदी अमावस के दिन, मोक्ष पधारे वीर प्रभुवीर।
आत्मदीप की दीवाली के, सूत्रधार महावीर की।
त्रिशला नन्दन वीर की, जय बोलो महावीर की ।।7।।

प्रेरणा पूंज परम पूज्य आचार्य श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी म.सा.

✼ श्रीमती प्रभा जैन, देवास

भारत के इस धरातल पर एक उच्च पवित्र महान विभूतियों अवतरित हो चुके हैं, उन्होंने अपनी कठिन साधना से कई सिद्धियां प्राप्त की है व अपनी आत्मा को उज्जवल बनाया। अपनी आत्मा को संयम मार्ग से जूटने पर कई महान पवित्र आत्माओं को घर परिवार, समाज से संघर्ष भी करना पड़ा। ऐसे ही युगपुरुष आचार्य श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी म.सा. भी थे। उन्होंने अपने ज्ञान के आलोक से जन-जन के मन को आलोकित किया।

आपका जीवन गंगा सा निर्मल, मेरु सा उच्च, समुद्र सा गंभीर चन्द्र सा शीतल, सूर्य सा तेजस्वी और मोती सा उज्जवल था।

आचार्य श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी म.सा. के जीवन चरित्र को देखते है तो पता चलता है कि उनमें कई अलौकिक, अनुपम, अद्वितीय विशेषताएं थी, वे ज्ञान के तो भंडार थे, सरस्वती की उन पर महती कृपा थी।

वे एक ऐसे महान महापुरुष थे जिनकी दीक्षा मध्य रात्रि को 1.30 पर हुई थी। वे जन्म से पटेल थे, उन्होंने 14 वर्ष की उम्र में पहली बार नवकार मंत्र सुना था। 18 वर्ष की उम्र में तो पहली बार उन्होंने गुरु भगवंत के दर्शन किये। 19 वें वर्ष में पहली बार दीक्षा लेने के लिये वैरागी बने और उनको रजोहरण आगमोद्धारक आनंदसागरजी म.सा. ने प्रदान किया था।

वे एक ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने दीक्षा के बाद प्रथम बार राई प्रतिक्रमण किया, उन्होंने आधी रात को भागकर दीक्षा ली और अकेले ही 67 कि.मी. का पहला विहार किया इतना ही नहीं दीक्षा से लेकर बड़ी दीक्षा तक उनको उपाश्रय में छिपाकर रखा गया क्योंकि पटेल समुदाय दीक्षा का घोर विरोधी था।

ये एक ऐसे महापुरुष थे जिनको दीक्षित होने तक केवल नवकार मंत्र और करेमि भंते, दो सूत्र जानते थे। दीक्षा के बाद तो उन्होंने 12 दिन में पंच प्रतिक्रमण, 6 दिन में 6 कर्म ग्रंथ, एक दिन में दशवैकालिक सूत्र, 6 दिन में श्री उत्तराध्ययन सूत्र, 8 दिन में आचारांग सूत्र, 36 घंटे में नवस्मरण, एक दिन में वीतरागस्तोत्र जैसे सूत्र कंठस्थ कर लिए थे। मैं सोचती हूं वहां तक ये एक मात्र महानपुरुष होंगे जिनको 45 आगम कंठस्थ थे। ये सब उनकी तीक्ष्ण बुद्धि से ही संभावित हो सका।

उन्होंने छट्ठ के पारणे छट्ठ और 5 विगई का त्याग कर वर्षीतप किया। उनके जीवन की एक ओर विशेषता है कि उन्होंने जीवनभर विसमलैंगिक (साध्वीजी/बहन) का नाम शुद्ध नहीं लिखा। वे एक प्रतिभाशाली पुरुष थे जिन्होंने दीक्षा से लेकर 37 वर्षों तक प्रतिदिन खड़े-खड़े 1008 लोगस्स का काउसग्ग किया और 1008 खमासणे दिए।

हमें गर्व है कि ऐसे महान साधक, महान तपस्वी जो सागर समुदाय के 900 साधु-साध्वी भगवंत से अधिक गणनायक थे, 103 वर्ष की उम्र में भी अपना कार्य अपने हाथों से करते थे। जिनशासन के दैदिव्यमान पूज्य गुरुवर 18 फरवरी 2024 को कालधर्म को प्राप्त हो गए। आज हमारे बीच नहीं है परन्तु ऐसी सौरभ छोड़ गये है कि हम उनको कभी भी नहीं भूल सकते। अंत में मैं यही कहूंगी कि-

नाम रोशन कर गये, गुणों का ना कोई पार है,
लेरवनी ना लिख सके, ऐसे आपके उपकार है ॥

भावभिनी श्रद्धांजलि!

आत्मा को जाना, सब जाना

ज्ञाते ह्यात्मनि नो भूयः ज्ञातव्यमवशिष्यते।
अज्ञाते पुनरेतस्मिन् ज्ञानमन्यन्निरर्थकम् ॥

अर्थात्- आत्मा को जाना लिया है उसे जानने जैसा कुछ भी बाकी नहीं है और जिसने आत्मा को नहीं जाना उसका सारा ज्ञान निरर्थक है।

✼ सत्समागम सत्शास्त्र और सदाचार में दृढ़ निवास, ये आत्मदशा होने के बलवान अवलंबन हैं। सत्समागम का योग होना दुर्लभ है तथापि मुमुक्षु जीव को उस योग की तीव्र जिज्ञासा रखना और उसको प्राप्त करना योग्य है। उस योग के अभाव में तो जीव को अवश्य ही सत्शास्त्ररुप विचार का अवलंबन करके सदाचार की जागृति रखना योग्य है।

आज भी प्रासंगिक भगवान महावीर

*** संदीप फाफरिया, ''सृजन''**

आज अधिक प्रासंगिक ,हो गया जिनवाणी संदेश ।''संदीप'' महावीर वाणी से उन्नत होंगे देश विदेश ।। परिवर्तन संसार का नियम है।

इस संसार में प्रतिपल नित नये परिवर्तन होते रहते हैं और परिवर्तन के साथ उस काल में हुए कार्यो की प्रासंगिकता समाप्त होती जाती है और नवीनता निरन्तर बढ़ती जाती है परन्तु कुछ चीजें ऐसी भी होती है जो कई हजार वर्षों बाद भी अपना अस्तित्व, अपनी प्रासंगिकता, अपना महत्व कायम ही नहीं रखती वरन् उसे विराट स्वरुप में जन-जन को उपयोगी होने का महत्व प्रतिपादित करती है। इन्हीं प्राचीन किन्तु प्रासंगिक चीजों में यदि सर्वाधिक प्रासंगिक चीज है तो वह है श्रीमहावीर की जनकल्याणकारी वाणी।

अब से करीब ढाई हजार साल पहले तीर्थकर श्रीमहावीर के सिद्धांतों ने दुनिया को जो नई दिशाएं दी थी। वे ही सिद्धांत आज ढाई हजार साल बीतने के बाद भी प्रासंगिक बने हुए हैं।

भगवान श्रीमहावीर ने अहिंसा को धर्म में सर्वोपरि स्थान प्रदान कर उसे धर्म की आत्मा के रुप में प्रतिपादित किया। वैसे तो अहिंसा दुनिया के सभी धर्मो में मौजूद है लेकिन जैन धर्म की अहिंसा अपनी विराटता के कारण अपना विशेष स्थान रखती है। विश्व में हो रही हिंसा और आपसी टकराव, तीसरे विश्वयुद्ध की संभावनाओं को श्रीमहावीर की अहिंसा से ही रोका जा सकता है। विचारधाराओं से संभावित हिंसा के अलावा दुनिया के अनेक देश आपसी संघर्ष में लगे हुए हैं और हिंसा के केन्द्र बिन्दु बन चुके हैं। इतना ही नहीं देश के प्रदेश और शहरों गांवों में भी हिंसा बड़ी है।

विचारधाराओं और हिंसा से हो रहे संघर्षो को श्रीमहावीर के ''जीयो और जीने दो'' अहिंसा आधारित सिद्धांतों से समाप्त किया जा सकता है।

विज्ञान की प्रगति ने परिग्रह को बहुत अधिक बढ़ावा दिया है और परिग्रह ही सामाजिक, आर्थिक अपराध का मूल कारण है। अपराध, हत्याएं, भ्रष्टाचार, दहेजप्रथा- ये सभी परिग्रह की ही देन है। तीर्थकर श्रीमहावीर ने कहा कि- ''उतना रखो जितनी आवश्यकता है, यानि पेट भरो पेटी नहीं।'' यदि आज हम श्रीमहावीर के इस सिद्धांत को मान लें और इसका अनुसरण करें, तो विश्वभर में सामाजिक खुशहाली होगी और सच्चा समाजवाद स्थापित हो सकेगा।

तीर्थकर श्रीमहावीर ने संसार को अनेकान्तवाद का आदर्श पाठ सिखाया यानि- ''मैं जो कह रहा हूं, वह भी सत्य है और जो दूसरे कह रहे हैं वह भी सत्य हो सकता है। देश-विदेश हो, समाज हो, जाति हो, जाति हो या परिवार आपसी संघर्ष का मुख्य कारण है वैचारिक वैमनस्यता लेकिन अनेकान्तवाद ही एक मात्र औषधि है जो इस वैचारिक वैमनस्यता'' की बीमारी को जड़ से समाप्त कर सकती है।

भगवान श्रीमहावीर ने चरित्र के निर्माण पर बहुत जोर दिया। आज चारित्रिक पतन की वजह से चारों और अनैतिकता का वातावरण व्याप्त है। लोग भयंकर जानलेवा बीमारियों से ग्रसित हो रहे है और इसका समाधान है तीर्थकर श्रीमहावीर के आदर्श चरित्र निर्माण की प्रेरणा का अनुसरण।

इनके अलावा भी जैसे-सत्याचरण करना, शाकाहार रात्रि भोजन त्याग आदि छोटे किन्तु बहुत अधिक प्रासंगिक और महत्वपूर्ण सिद्धांत तीर्थंकर श्रीमहावीर ने बताए, जो बीते समय में तो प्रासंगिक थे ही, वर्तमान में भी प्रासंगिक है और भविष्य में और भी अधिक प्रासंगिक होंगे।

भगवान श्रीमहावीर के जन्म कल्याण दिवस के पावन पुनीत अवसर पर हम यह प्रतिज्ञा करें कि कम से कम अपने स्वयं के जीवन में उनके सिद्धांतों को सतत् अपनाते चलेंगे और भविष्य में अखिल विश्व में भगवान श्रीमहावीर के सिद्धांत जन-जन को बताकर उनको अनुसरण में लाने का प्रयत्न करेंगे।

यही मंगलकामना इस पावन पर्व पर है तीर्थकर महावीर के चरणों में वन्दन के साथ आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं!

श्री जिन भगवान जैसे जन्म-त्यागी भी जिसे छोड़कर चल दिये ऐसे भय के हेतु रुप उपाधियोग की निवृत्ति करते करते यदि यह पामर जीव काल व्यतीत करेगा तो अश्रेय होगा।

पर्वतों में यशस्वी-श्रेष्ठ है मेरु, ज्ञात पुत्रों में श्रेष्ठ महावीर

✻ शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर

संसार में पर्वतों के राजा सुमेरु यशस्वी है, उसी प्रकार प्रभु महावीर स्वामी तीन लोक में महान यशस्वी है। जैसे सुमेरु अपने गुणों के द्वारा सब पर्वतों में श्रेष्ठ है, इसी तरह धर्म साधना में अतीत अग्र श्रम करनेवाले ज्ञात पुत्र श्रमण महावीर जाति, यश, दर्शन, ज्ञान और शील आदि सद्‌गुण श्रेष्ठ है।

सुमेरु पर्वत उर्द्ध, अधः और मध्य तीनों लोकों में अवस्थित है वैसे ही भगवान तीनों लोकों में व्याप्त होकर प्रभावशाली है। भूमि, स्वर्ग और वैडूर्यमय सुमेरु के तीन काण्ड विभाग है, भगवान के भी सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चरित्र रुप रत्नत्रय शोभित है। सुमेरु पर्वत के मस्तक पर पण्डलवन उसकी पताका सम शोभित है, वैसे ही श्रीवीर प्रभु भी तीर्थंकर पद नाम शीर्षस्थ पद से सुशोभित है।

सूर्य-चन्द्र आदि ग्रहगण सदैव उसके प्रदक्षिणारत रहते हैं वैसे ही भगवान के चारों ओर महामण्डलेश्वर प्रदक्षिणा देकर उपदेश सुनने को लालायित रहते हैं। भगवान महावीर के सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह अस्तेय आदि सिद्धांत सुमेरु पर्वत के समान ही उर्ध्वमुखी है। सुमेरु की स्वर्णीम क्रांति से जैसे नन्दनवनादि सुशोभित है वैसे ही भगवान की दिव्य क्रांतिमय शरीर पीत वर्ण का है। सुमेरु पर्वत के मस्तक पर चार नन्दनादि वन में महेन्द्रगण भी स्वर्ग से भी अधिक रमणीय गुणों से युक्त होने से क्रीड़ा करते है उसी प्रकार प्राणी मात्र भगवान वीर प्रभु के चरणों में शरण पाकर आध्यात्मिक शाश्वत आनन्द का अनुभव करके भगवान महावीर को विश्वशांति का एक मात्र आराधना केन्द्र मानते हैं।

मन्दर, मेरु, सुदर्शन और सुरगिरी आदि नामों से जैसे मेरु पर्वत जगत् प्रसिद्ध है वैसे ही वीर भगवान वर्धमान, महावीर त्रिशलानंदन, ज्ञानपुत्र आदि अनेकों नामों से प्रसिद्ध है। सुमेरु की कन्दराओं से उठनेवाली देवों की कोमल ध्वनि जैसे दूर-दूर तक मनमोहती है वैसे ही वीर प्रभु की अतीव ओगस्वी, गंभीर, सारगर्भित दिव्य ध्वनि वाली वाणी श्रोताओं के अन्तर हृदय पर अपना प्रभाव डालती थी और आज भी प्रवचनों में उससे हम लाभान्वित होते है। सोने की तरह शुद्ध और चिकना सुमेरु का वर्ण है, वैसा ही वीर प्रभु का वर्ण शुद्ध सोने सा है। सुमेरु पर्वत के समान ही भगवान से बढ़कर युगों से युगों कोई श्रेष्ठ नहीं। ऊँची-ऊँची मेरुलाओं से जैसे सुमेरु पर्वत दुर्गम है वैसे वीर प्रभु का अनेकान्तवाद सिद्धांत कहीं भी पराजित न होकर अजेय दुर्ग समान है।

मंगलगृह सम अति उज्जवल क्रांतिवाले सुमेरु की तरह ही भगवान महावीर भी उज्जवल क्रांति से शोभायमान है। मेरु पर्वत अनेक औषधियों ज्वाजल्यमान है वैसे ही भगवान अनन्तानन्त गुणों का खजाना है प्रकाशमान है। भूमण्डल के ठीक बीचोंबीच सुमेरु पर्वत है ठीक वैसे ही वीर प्रभु धर्मसाधकों की भावना के केन्द्र बिन्दु है।

मेरु पर्वतों का राजा है वैसे ही श्रीमहावीर प्रभु तपस्वी, त्यागी आराधकों के महाराजा है। हजारों हजार साधक प्रभु के अधिनायकत्व में वासना से मुक्त होकर मोक्षमार्ग के अधिकारी बने हैं। रत्नों की प्रभा से सुमेरु पर्वत रंग-बिरंगेपन की छटा बिखेरता है वैसे ही भगवान महावीर सत्य, शील, क्षमा, ज्ञान, दर्शन, चरित्र आदि गुणों के कारण अनंत मोक्षगामी गुणों के रुप है। दशों दिशाओं में जैसे सुमेरु के प्रकाश की उज्जवल किरणें अपने आलोक से उद्‌भासित करती है उसी तरह श्रीमहावीर प्रभु ज्ञान के प्रकाश को लोक अलोक में प्रसारित करें, ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जो उनके अनन्तज्ञान से वंचित हो। प्रभूतज्ञान और चारित्र में भगवान महावीर सबसे श्रेष्ठ और प्रधान है।

ज्ञानदृष्टि=ज्ञानदीपक

अस्ति चेद् ग्रन्थिभिज्ज्ञानं
किं चित्रैस्तन्त्रयन्त्राणैः ?
प्रदीपाः क्व ोपयुज्यन्ते
तमोघ्नी दृष्टिरेव चेत् ॥

अर्थात्- ग्रंथिओं को छेदने वाला ज्ञान अगर है तो, विचित्र तंत्र-यंत्रों की क्या जरुरत है ? जैसे दृष्टि ही स्वयं प्रकाशित हो तो दीपकों का क्या काम है ?....

श्रमण भगवान महावीर प्रभु का 18 वां भव त्रिपृष्ठ वासुदेव

श्रमण भगवान श्रीमहावीर प्रभु के सम्यग्दर्शन प्राप्ति से लगाकर मोक्षगमन तक के कुल 27 भवों के निरुपण में, 18 वें वासुदेव के भव संबंधी चर्चा हुई थी। प्रतिवासुदेव अश्वग्रीव का रणसंग्राम में वध हुआ । देवताओं ने त्रिपृष्ठकुमार पर पुष्पवृष्टि करते हुए उन्हें प्रथम वासुदेव के रुप में घोषित किया । प्रतिवासुदेव की आज्ञा मे रहे राजा और युद्ध में शामिल हुए अन्य छोटे-बड़े सभी राजाओं ने वासुदेव से क्षमा मांगते हुए, उनकी आज्ञा स्वीकार्य की । त्रिपृष्ठ वासुदेव ने भी सबको सांत्वना मिले, इस भाव से राज्य संचालन करने की अपील की । सबने आज्ञा स्वीकार करते हुए अपने-अपने राज्य में प्रयाण किया।

सुख का एकमात्र साधन धर्म ही है:- वासुदेव-नामकर्म फलस्वरुप, अब त्रिपृष्ठ वासुदेव **चक्र** एवं अन्य **सात रत्न** आदि से सज्ज होकर, अपने भाई अचलकुमार बलदेव को साथ लेकर, भरत क्षेत्र के तीनों खण्डों की साध्यता के लिए प्रयाण करते हैं । सर्वप्रथम लवण समुद्र के समीप आकर पूर्व दिशा में मगध देव की, दक्षिण में वरदामदेव की और पश्चिम दिशा में प्रभासदेव की साधना करने के पश्चात वैताढ्य पर्वत पर स्थित विद्याधरों के नगरों की दोनों श्रेणियों को अपने बल से साध्य करते हैं और अपने श्वसुर ज्वलनजटि को वहां की व्यवस्था का प्रशासक नियुक्त करते हैं। इस तरह वैताढ्य पर्वत के दक्षिण में लवण समुद्र तक, त्रिखण्ड-पृथ्वी का एक छत्र साम्राज्य हांसिल करने के बाद, वे अपनी राजधानी पोतनपुर की ओर प्रयाण करते हैं । लौटते समय चलते-चलते उनका काफि ला मगधदेश में पहुंचता है। यहां उनके शौर्य-बल को लोकसिद्ध प्रगट करने का प्रसंग बनता है । यहां एक विशाल-महा-भीमकाय पत्थर की शिला पर उनकी नजर पड़ती है। यह शिला इतनी भारी थी कि लाखों की भीड़ भी उसे हिला नहीं सकती थी । वासुदेव ने अपने बल की लीला का प्रदर्शन करने की मंशा से, उस शिला को सहजता से उठाकर फेंक दिया । उनके इस अद्भूत बल को देखकर उपस्थित जनसमुदाय आश्चर्य चकित रह गया।

जिस तरह चक्रवर्ती को अपने पुण्यबल से अद्भूत चौदह रत्नों की प्राप्ति होती है, उसी भांति वासुदेव को भी सात रत्नों की उपलब्धि होती है । चक्रवर्ती के शरीर में जितना बल और सामर्थ्य समाया होता है, उनसे आधा शारीरिक सामर्थ्य वासुदेव को प्राप्त होता है । दोनों मनुष्य भव वाले है, मगर हजारों देवता उनकी सेवा में सदा तैयार रहते हैं । इन सब शक्तियों एवं उपलब्धियों का एक मात्र कारण होता है- **पूर्व जन्म में की गई धर्म आराधना का प्रभाव ।** अभ्यंतर सुख एवं मोक्ष की प्राप्ति में तो धर्म ही एक मात्र साधन है, मगर शारीरिक बल, धान-दौलत और राजसत्ता आदि बाह्यसुख के साधन भी धर्म और उसके अनुरुप पुण्योदय से ही प्राप्त होते हैं। श्रुत-केवली भगवंत शय्यंभवसूरिजी महाराज दश वैकालिक सूत्र के प्रथम अध्ययन की गाथाओं में इसी बात को पुष्टि प्रदान करते हुए फरमाते हैं कि-

देवा विं तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ।

अर्थात्-जिन महानुभावों के मनमंदिर में धर्म-प्रकाश के कारण, संचित हुआ पुण्यबल विद्यमान है, उनके चरणों में स्वर्गलोक के देव भी नमस्कार करते हैं ।

व्यवहार और निश्चय इन दोनों प्रकार से अगर धर्म अविकृत अर्थात् अतिशुद्ध हो, तो ऐसा धर्म आत्मा को परम्परानुसार स्वर्गसुख के साथ, परिणाम स्वरुप मोक्ष लक्ष्य तक भी पहुंचाता है, यदि धर्म आंतरिक स्वरुप में अशुद्ध है, तो मात्र एक विशिष्टकाल तक बाह्यसुख की अनुकूलता मिल सकती है, मगर अंत में उस सुख के परिणाम से आत्मा दुर्गति की ही तरफ जायेगी ।

त्रिपृष्ठ वासुदेव को इस भव में तीन खण्ड पृथ्वी के वैभववाला जो साम्राज्य मिला है, वह शुद्ध धर्म की आराधना के कारण नहीं मिला है, बल्कि धर्म की अशुद्ध अवस्थाओं वाली पुण्य-प्रकृतियों मात्र के कारण मिला है । पूर्वजन्म में धर्म प्राप्त था, लेकिन उसमें अशुद्धताओं का आविर्भाव था, इसीलिये बाह्यसुख-समर्थ वासुदेव की आत्मा भी अंततः भवपूर्णाहूति पश्चात नरक गति में जाने वाली ही होती है, सोलहवें भव में संयम और तप की सुंदर आराधना का योग प्राप्त होने के बाद भी, उपहास-निमित्त की घटना के कारण महामुनि ने निदान किया था कि- ''मेरे संयम और तप के फलस्वरुप आगामी मनुष्य जन्म में इतना बल प्राप्त करुं, जिसके द्वारा मेरा उपहास उड़ानेवाले विशाखानंदी से बदला ले सकूं।''

संयम और तपयुक्त मोक्षसाधक शुद्ध धर्म मिला

था परन्तु आवेश में उत्पन्न हुए अनिष्ट भावों ने, उस शुद्धधर्म को भी अशुद्ध कर दिया। विशिष्ट बल प्राप्ति की इच्छा ने संयम और तप की दुर्गति का साधन बना दिया।

सारांश यही है कि,-जीवन में प्राप्त किसी भी वर्तमान सुख की अनुकूलता के पीछे पूर्व संचित धर्म के सिवाय अन्य कुछ भी नहीं है।

वासुदेव का राज्याभिषेक:- त्रिपृष्ठ वासुदेव विजय अभियान के पश्चात अपनी राजधानी पोतनपुर लौट आये हैं। प्रजाजनों ने उनका बड़ी आत्मीयता और गरिमामय स्वागत के साथ नगर प्रवेश करवाया। राजभवन में मणिरत्न-जड़ित सुवर्ण सिंहासन पर वासुदेव विराजमान हुए। महामंत्री सेनापति और अनेक गणमान्यों की उपस्थिति में उनका राज्याभिषेक हुआ। देवताओं ने भी इस समारोह के शुभकार्यो में यथाविधि अपना सहयोग दिया। इधर वासुदेव के भाई अचलकुमार को भी बलदेव के रुप में पदासीन किया गया। प्रजा अब दोनों बंधुओं की शरण में आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगी।

पोतनपुर में भगवान श्रीश्रेयांसनाथ का आगमन:- त्रिपृष्ठ वासुदेव, वर्तमान अवसर्पिणी में हुए 9 वासुदेवों में, प्रथम वासुदेव थे। जिस समय वर्तमान अवसर्पिणी काल के 11 वें तीर्थंकर भगवान श्रीश्रेयांसनाथ प्रभु का शासन चल रहा था, उसी दरम्यान त्रिपृष्ठ वासुदेव को तीन खण्डों का आधिपत्य प्राप्त हुआ था। घातिकर्मो का क्षयकर, केवलदर्शन की प्राप्ति पश्चात श्रेयांसनाथ प्रभु केवली अवस्था में ग्रामानुग्राम विहार करते हुए पोतनपुर नगर पधारे। यहां ईन्द्रादिक देवों ने समवसरण की रचना की। वनपालक द्वारा महाराज वासुदेव को भी यह समाचार मिला। वासुदेव यह शुभ समाचार सुनते ही हर्ष से आत्म विभोर हो उठे। वनपाल को करोड़ सोनामोहर से प्रसन्न किया और तुरन्त अपने बंधु अचलकुमार और राज-वैभव के परचम को साथ लेकर भगवान की देशना का लाभ लेने पहुंचे। पंचाभिगम उपयुक्तता पूर्वक तीन प्रदक्षिणा देकर, प्रभु को वंदन करने के पश्चात, योग्य स्थान पर बैठकर, प्रभु की योजनगामिनी अमृतमय देशना का श्रवण करने लगे।

श्रीश्रेयांस प्रभु की धर्मदेशना और संवर-निर्जरा का स्वरुप:- भगवान श्रीश्रेयांसनाथ प्रभु की देशना में मुख्यतया **संवर** और **निर्जरा** के तत्वबोध की प्रधानता थी। कर्मस्कंधों का अंतरभावों के साथ जितने भी प्रमाण में, जब तक संबंध बना हुआ है और नये-नये कर्मस्कंधों का आना भी चालू है, तब तक आत्मा मुक्त अवस्था प्राप्त नहीं कर सकती है और जन्म-मरण आदि दुःखों की परम्परा भी चलती रहती है।

आत्मा की मुक्त अवस्था के लिये सबसे बड़ा मुद्दा संवर और निर्जरा का है। सर्वर-निर्जरा के लिये सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चरित्र जरुरी है। सम्यग्दर्शन आत्मा के लिये शुद्ध उपयोग अथवा शुद्ध चेतना स्वरुप है। सम्यक् चारित्र भी आत्मा की शुद्ध चेतना ही है। जितनी-जितनी शुद्ध चेतना द्वारा आत्मा शुद्ध प्रयोग करेगी, उतनी मात्रा में कर्म की संवर और सकाम निर्जरा भी प्रगट होती रहेगी। किसी भी सुविहित धर्मानुष्ठान का शुद्ध ध्येय सिर्फ संवर और निर्जरा ही है। फिर आगे क्रमबद्ध चौदहवें अयोगी गुणस्थानक पर सर्व संवर और संपूर्ण निर्जरा का अनुपम योग आता है और आत्मा सर्व प्रकार से कर्म-रहित बनकर, मुक्त अवस्था को साध्य करती है। ऐसी अनुकूलताएं मात्र मनुष्य जीवन के अलावा अन्यत्र कहीं भी संभव नहीं है। मनुष्य जीवन में संभवतः चक्रवर्ती अथवा वासुदेव का पद पुण्ययोग से प्राप्त हो सकता है, मगर यह वैभव भी केवल अनित्य संयोगी है। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र रुपी आत्मा के ये स्त्वत्व गुण अगर क्षायिक भाव के साथ आत्ममंदिर में प्रगट हो गये, तो फिर ये गुण अनंतकाल तक अंतःकरण में सतत अवस्थित (विद्यमान) रहेंगे। कर्म की औदयिकता के कारण, जीवन में अनुकूल अथवा प्रतिकूल साधन मिलने के बाद भी, अगर संवर एवं निर्जरा करवानेवाली स्वभाव-दशा में आत्म-रमणता सक्रिय बनी रहे, तो जीवन अवश्य धान्य धान्य बनता है। उस समय श्रेयांसप्रभु की उपरोक्त देशना, परमात्मा प्रभु वीर की आत्मा शांतचित्त से श्रवण कर रही थी।

त्रिपृष्ठ वासुदेव को पुन: सम्यक्त्व की प्राप्ति:-

उपरोक्त बातें तो भगवान श्री श्रेयांसनाथ प्रभु की धर्म देशना का अतिसंक्षिप्त सारांश है। उस समय की साक्षात विस्तारित धर्मदेशना का त्रिपृष्ठ वासुदेव के अंतःकरण में जो व्यापक प्रभाव उत्पन्न हुआ, उस आनन्द का तो वर्णन ही अपरम्पार है। किसी भी महानुभाव की वर्तमान अवस्था, चाहे जैसी हो, परन्तु जिसके अंतःकरण में तीर्थंकर पद की योग्यता के गुण सतत प्रवाहित हो रहे हों और एक बार भी

अगर उसमें सम्यग्दर्शन की दिव्यज्योति प्रगट हो चुकी थी तो ऐसी भव्यात्मा जब-जब देव-गुरु-धर्म के संयोग प्राप्त करती है, तब-तब उस आत्मा का हृदयकमल नवपल्लवित बनकर निखर उठता है। मोह का आवरण दूर होकर आत्मा में पुनः सम्यक्त्व का प्रकाश प्रगट होता है।

निमित्तवासी आत्माः-

✻ भगवान हावीर प्रभु को नयसार के भव में सर्वप्रथम सम्यग्दर्शन प्रगट हुआ।

✻ मरीचि के भव में कपिल से समागम और उत्सूत्र-प्ररुपणा का निमित्त बनने से, उस सम्यग्दर्शन गुण का भाव तिरोहित हो गया था।

✻ सोलहवें विश्वभूति के भव में संयम ग्रहण का अवसर मिला और यह गुण फिर एक बार उत्पन्न हुआ।

✻ इसी भव में विशाखानंदी द्वारा उपहास से निदान करने के कारण, यही प्रकाश फिर लुप्त हो गया।

✻ अब यहां इस 18 वें भव में भगवान श्री श्रेयांसप्रभु की धर्म देशना का श्रवण करते-करते, यह प्रकाश एक बार पुनः जागृत होकर प्रभु की आत्मा में प्रकाशित होने लगा है।

एक बार पुनः जागृत होकर प्रभु की आत्मा में प्रकाशित होने लगा है।

एक बार सम्यग्दर्शन गुण का अंकुर खिल उठने के बाद, जब तक यह गुण आत्मा में क्षायिक भाव के साथ अति उज्जवल नहीं बन जाता, तब तक प्रायः इसके उदय और अस्त की परम्परा इसी तरह चलती रहती है। आत्महित के अनुकूल निमित्त मिलते ही, आत्मा में अनुकूलनाएं जागृत होती है और जैसे ही प्रतिकूल निमित्त जमा हुए कि, आत्मा में भी प्रतिकूलताएं खड़ी हो जाती है, परन्तु ये ऊपर-नीचे की अस्त उदयवाली परिस्थितियां भी प्रायः तभी बनती है, जब एक बार तो आत्मा ने निजानन्द का अनुभव कर लिया हो। उपरोक्त तथ्य ही निमित्तवासी आत्मा शब्द को चरितार्थ करती है।

त्रिपृष्ठ वासुदेव की विषयलोलुपताः-

भगवान श्रीश्रेयांसनाथ प्रभु की धर्मदेशना का श्रवण करते करते, त्रिपृष्ठ वासुदेव की आत्मा पर छाया दर्शन मोह का आचरण थोड़े समय के लिए छिटक कर दूर हो गया और सम्यग्दर्शन का प्रकाश फिर उभरने लगा।

आम तौर से वासुदेव की जीवनचर्या अधिकांश रुप से विषय लोलुपता में ही रची-बसी रहती है, इस वजह से सम्यग्दर्शन जैसे गुण उनके अंतःकरण में दीर्घकाल तक टिक नहीं पाते हैं। जिस तरह दीपक प्रज्वलित करने के बाद उसे हवा का कोई झोका बुझा न दे, इसलिये उसे कांच के कवच का संरक्षण दिया जाता है, ठीक उसी भांति आत्मगुणों के दीप की ज्याति को, सतत तेजोमय बनाये रखने के लिए, जीवन में तप और संयम का आधार अत्यन्त जरुरी होता है, अनंतकाल की विषय लालसा को तप और संयम के द्वारा ही दूर रखा जा सकता है, यह सनातन सत्य है। तप और संयम के परमार्थिक रहस्य के पीछे का सार यही है कि, विषय आसक्तियों में अभाव अथवा मंदता लाना।

देशना पूरी होने के बाद त्रिपृष्ठ वासुदेव भगवान को सविनय वंदन करते हुए, सपरिवार राजमहल में लौटते हैं।

त्रिपृष्ठ वासुदेव के जीवन में भी इन्द्रिय-विषयों की तीव्र आसक्तियां भरी थी, इनमें भी श्रवणेन्द्रिय रसिक लोलुपता तो सबसे अधिक थी। संगीत और नृत्यकलां में पारंगत अनेक संगीतकार और नृत्यकारों को दूरदराज के देशों से बुलवाकर उन्होंने अपनी राजधानी में बसाया था। राजसभा में हमेशा संगीत और नृत्य के रंगारंग आयोजन चलते रहते थे, इसके बावजूद वासुदेव के शयन-प्रसंग के लिये भी अलग से संगीत विशारद कलाकार उपस्थित रहते थे। रात्रि शयन से पूर्व संगीत की मधुर धुन का श्रवण करे बिना, उन्हें नींद नहीं आती थी। इतनी विषयाधीनता ने उन्हें घेरे रखा था।

सर्व अनिष्ट का मूल विषय-आसक्ति :-

ज्ञानी भगवंतों ने संसारी जीवों के जीवन में बाह्य एवं अंतरंग आपत्तियों का मूल कारण इन्द्रियों पर असंयम अथवा उनकी गुलामी को वर्णित किया है।

आपदां कथितः पन्था इन्द्रियाणां असंयमः ।
तज्जयः सम्पदां मार्गः येनेष्टं तेन गम्याताम् ।।

अर्थात्- ''असंयम, यह विपत्तियों का आगमन मार्ग है और इन्द्रियों के ऊपर विजय, यह सुख रुपी संपत्ति का मार्ग है। अतः हे आत्मन ! तेरे लिए जो इष्ट है, उसी मार्ग का अवलंब कर।

आश्रव तत्व के विवेचन संदर्भ में भी नवतत्व के समस्त आश्रवों का मूल कारण बतलाते हुए ''इंद्रिय कसाय अव्वय'' गाथा में, इन्द्रियों की गुलामी का वर्णन है। इन्द्रियों के असंयम अर्थात विषयों की आसक्ति द्वारा कषायभाव उत्पन्न होते हैं। कषाय भाव से हिंसक परिणाम जन्म लेते है और हिंसक परिणामों में से ही मन-वचन-काया के विपरीत व्यापार चलते

हैं। अंतःत प्रतिक्षण नित-नये कर्मो के बंध भी गति पकड़ने लगते हैं। सारांश यही है कि- सभी प्रकार के अनिष्टों का मूल कारण एक मात्र विषय लोलुपता ही है।

घटना ऐसी है कि, एक दिन त्रिपृष्ठ वासुदेव द्वारा अपने शय्यापालक को, रात्रि शयन करने से पूर्व आज्ञा दी गई कि, जो संगीतकार अपना मधुर संगीत प्रस्तुत कर रहे है, उस दरम्यान जैसे ही त्रिपृष्ठ वासुदेव को निंद्रा आ जाये, तब तत्काल संगीतकारों को अपना संगीत विराम करने की सूचना दी जाये, ताकि उनकी निन्द्रा में खलल न पड़े।

शय्यापालक ने अपने मालिक की आज्ञा तो शिरोधार्य कर ली, मगर वह खुद ही संगीत के मोह में ऐसा फंस गया कि, उस मधुर संगीत की तान में झपकी लगते निंद्राधीन हो गया। संगीत की यही तो करामत है कि, जिसे नींद न आती हो, उसे भी आ जाये। वासुदेव की भांति शय्यापालक भी सो गया, मगर संगीत चलता रहा। अचानक भरी नींद में संगीत की आवाज सुनकर वासुदेव जाग उठे। देखा कि संगीत तो अभी तक चल रहा है और शय्यापालक भी सो रहा है। आदेश का पालन नहीं करनेवाले शय्यापालक पर उन्हें तीव्र रोष उत्पन्न हुआ। दूसरे दिन शय्यापालक को राजसभा में हाजिर करवाया गया। वासुदेव ने उसके लिये दण्ड विधान किया- ''जिन कानों से आज्ञा सुनकर भी अवहेलना की और जिन कानों से संगीत सुनते-सुनते शय्यापालक सो गया था, उसके उन्हीं दोनों कानों में गरमागरम पिघले हुए सीसे का रस भरा जाये।'' शय्यापालक इस दुर्दान्त पीड़ादायी दण्ड को सहन नहीं कर पाया और वेदना से तड़फ-तड़फ कर मर गया। इस घटना के परिणाम स्वरुप त्रिपृष्ठ वासुदेव तीव्र आसक्ति और तीव्र कषायी आत्मदोष के कारण, अपना सम्यग्दर्शन तजकर, घोर पापवृत्ति में लीन बने और शेष जीवन पूरा करने के बाद सातवीं नरक के दरवाजे पर पहुंच गये। कुछ ऐसा था, परमात्मा श्रीमहावीर प्रभु का यह 18 वां भव।

बहुत से शास्त्र और वाक्यों के अभ्यास की अपेक्षा, अगर जीव ज्ञानी पुरुषों की एक एक आज्ञा की उपासना करें तो अनेक शास्त्रों से होनेवाला फल सहज में ही प्राप्त हो।

हमारे महत्वपूर्ण तीज त्यौहार

✻ वर्षीतप प्रारंभ दिन- चैत्र वद-आठम, दिनांक 2-4-2024, मंगलवार।

✻ आयंबिल ओली प्रारंभ- चैत्र सुद-सातम, दिनांक 15-4-2024, सोमवार।

✻ श्री महावीर प्रभु जन्म कल्याणक- चैत्र सुद-तेरस, दिनांक 21-4-2024, रविवार।

✻ आयंबिल ओली पूर्ण- चैत्र सुद-पूनम, दिनांक 23-4-2024, मंगलवार।

✻ वैशाख सुद-तीज (अक्षय तृतीया)- वैशाख सुद-तीज, दिनांक 10-5-2024, शुक्रवार।

✻ शासन स्थापना दिन - वैशाख सुद-अगियारस, दिनांक 19-5-2024, रविवार।

✻ चातुर्मास प्रारंभ (चौमासी पाखी पर्व आराधना)- अषाढ़ सुद-चौदस/पूनम, दिनांक 20-7-2024, शनिवार।

✻ मासक्षमण घर- श्रावण सुद-5,दिनांक 9-8-2024, शनिवार।

✻ पर्युषण पर्व प्रारंभ- श्रावण वद-तेरस, दिनांक 1-9-2024, रविवार

✻ प्रभु श्री महावीर जन्म वांचन- भादवा सुद-1, दिनांक 4-9-2024, गुरुवार।

✻ सवंत्सरी महापर्व- भादवा सुद-4, दिनांक 7-9-2024, शनिवार।

✻ आयंबिल ओली प्रारम्भ- आसोज सुद-छट्ठ, दिनांक 9-10-2024, बुधवार।

✻ आयंबिल ओली पूर्ण- आसोज सुद-पूनम, दिनांक 17-10-2024, गुरुवार।

✻ प्रभुश्री महावीर स्वामी निर्वाण कल्याणक (दीपावली पर्व)- आसोज वद-अमावस्य, दिनांक 1-11-2024,शुक्रवार।

✻ ज्ञान पंचमी- कार्तिक सुद-पांचम, दिनांक 6-11-2024 बुधवार।

✻ चातुर्मास पूर्णाहुति- कार्तिक सुद-पूनम, दिनांक 15-11-2024 शुक्रवार।

श्री महावीर भगवान के महाश्रावक

भगवान महावीर स्वामी के 10 महाश्रावक, भाव श्रावक धर्म का पालन करने वाले थे। संक्षेप में उन महाश्रावकों का परिचय इस प्रकार हैः-

1- आनंद श्रावकः-

आनंद श्रावक ने प्रभु महावीर के पास धर्म सुनकर हृष्ट-तुष्ट होकर प्रभु से श्रावक के बारह व्रत स्वीकार किये जिसमें परिग्रह परिमाण व्रत इस प्रकार लिया-कोष (भण्डार) में रखी हुई 4 करोड़ स्वर्ण मुद्राएं, व्यापार में लगी हुई 4 करोड़ स्वर्ण मुद्रा एवं घर संबंधी उपकरणों में लगी हुई, 4 करोड़ स्वर्ण मुद्राओं के सिवाय अन्य सबका त्याग।

एक गोकुल में 10 हजार गाय होती हैं, ऐसे में 4 गोकुल के सिवाय अन्य चतुष्पद का त्याग।

क्षेत्र-वास्तु के परिमाण में एक हल से सौ बीघा भूमि के हिसाब से 500 हल (50 हजार बीघा) भूमि के सिवाय अन्य भूमि का त्याग।

शकट (गाडा) के परिणाम में 500 पांच सौ यात्रा संबंधी और पांच सौ गृह उपकरण आदि ढोने के शकटों के सिवाय अन्य समस्त शकटों का त्याग।

वाहन- चार यात्रा के वाहन और चार माल ढोने वाले वाहनों के सिवाय अन्य का त्याग।

20 वर्ष पर्यन्त श्रावक धर्म का पालन किया।

2- कामदेव श्रावकः-

चम्पा नगरी में कामदेव नाम का गाथापति था, वह भी आनन्द श्रावक की तरह धन-धान्य में समृद्ध थे। छः करोड सोनैये उसके खजाने में थे, छः करोड़ व्यापार में थे, छः करोड़ लेन-देन में थे तथा छः वज्र थे।

कामदेव ने भी प्रभु महावीर के पास आनन्द श्रावक की तरह श्रावक धर्म का स्वीकार किया, तथा कुछ वर्षो के बाद गृहस्थ धर्म से निवृत्त होकर पौषधशाला में जाकर पौषध लेकर धर्म प्रज्ञप्ति को स्वीकार कर विचरने लगे।

एक बार रात्री के समय में एक मिथ्यादृष्टि देव ने आकर भयंकर रुप धारण कर, अनेक प्रकार से धर्म से चलायमान करने का प्रयत्न किन जब कामदेव धर्म-ध्यान से चलायमान नहीं हुए तब तलवार से कामदेव श्रावक के टुकड़े-टुकड़े करने लगा, कामदेव श्रावक उस तीव्र वेदना को सहन करने लगे परन्तु धर्म ध्यान से चलित नहीं हुए।

तब हाथी का रुप करके सूंड से पकड़कर आकाश में उछाल दिया और अपने तीखे दांतों पर झेलकर पैरों के नीचे मसल दिया, तब भी जब धर्मध्यान से चलित नहीं हुए।

तब उस देव ने महाकाय काले सर्प का रुप धारणकर उपसर्ग किया, लेकिन कामदेव श्रावक को धर्म-ध्यान में स्थिर देखकर, देवता अपने कुकार्य की क्षमायाचना करके स्व-स्थान चला जाता है।

कामदेव श्रावक ने भी आनन्द श्रावक की तरह 20 वर्ष तक भाव श्रावक धर्म का पालन किया।

3- चुलनीपिता श्रावकः-

चुलनीपिता वाराणसी (काशी) नगरी निवासी थे। उनकी पत्नी का नाम श्यामा था। वे बड़े धनवान थे। करोड़ स्वर्ण मुद्राओं के वे मालिक थे। आठ गोकुल थे। जब भगवान महावीर वाराणसी पधारे, तब चुलनीपिता ने भगवान का उपदेश सुनकर आनन्द श्रावक की तरह गृहस्थ धर्म का स्वीकार किया और कुछ वर्ष बाद गृहस्थ जीवन से निवृत्त होकर, पौषधशाला में जाकर विशिष्ट आराधना करने लगे। एक रात्रि के अंतिम प्रहर में चुलनीपिता के समक्ष एक देव प्रकट हुआ। हाथ में नीलकमल की तलवार लेकर बोला तुम अपना शील भंग नहीं करोगे तो तुम्हारे बड़े लड़के का घर से लाकर घात करुंगा, काटकर उसे कड़ाही में उबालूंगा। उससे तुम्हारे शरीर को सिचूंगा। अत्यंत दुःख और पीड़ा से तू मर जायेगा परन्तु चुलनीपिता निर्भय रहे, निश्चल रहे। दो तीन बार धमकी देने पर भी जब चुलनीपिता विचलित नहीं हुए, तो देव ने बड़े लड़के को लाकर घात करने की माया रची। उसके शरीर को कडाहे में डालकर उबाला, उसके रक्त और मांस से चुलनीपिता के शरीर पर लेप किया फिर भी चुलनीपिता निश्चल रहे।

देव ने दूसरे और तीसरे लड़के के वध वगैरह का वैसा ही माया जाल रचा, परन्तु चुलनीपिता अडिग रहे। देव ने क्रुद्ध होकर कहा- यदि तू अपने व्रत का भंग नहीं करता, तो तेरी माता भद्रा को घर से लाकर तेरे सामने ही प्राण लूंगा। तीन बार देव ने इस प्रकार डराने का प्रयत्न किया, फिर भी चुलनीपिता दृढ़ रहे। तीसरी बार देव ने जब मातृवध की बात कही तब चुलनीपिता ने विचार किया यह अनार्य पुरुष है।

इसने मेरे तीन पुत्रों का घात किया, अब मेरी माता का वध करना चाहता मैं वध नहीं करने दूंगा। चुलनीपिता कायोत्सर्ग ध्यान पूर्ण कर, देव को पकड़ने दौड़े। देव तो अदृश्य हो गया, चुलनीपिता एक स्तंभ को पकड़ कर जोर-जोर से चिल्लाने लगे।

उसकी आवाज सुनकर वहां भद्रमाता आई और चिल्लाने का कारण पूछा- चुलनीपिता ने सारी बात बता दी। माता ने कहा- ''वत्स, ऐसा कुछ भी नहीं हुआ, तीनों पुत्र सुखरुप है और मैं तेरे सामने हूं। वत्स, किसी देव ने तेरी परीक्षा करने के लिए यह मायाजाल रचा होगा। कषाय के उदय से चलित-चित्त होकर उसे मारने की तेरी प्रवृत्ति हुई। इस घात की प्रवृत्ति से स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत और पौषध व्रत का भंग हुआ। पोषध व्रत में सापराध और निरपराध सभी जीवों को मारने का त्याग होता है। इसलिए तुम आलोचना करो और गुरुसाक्षी से निन्दा-गर्हा करो, यथायोग्य तपश्चर्यारुप प्रायश्चित स्वीकार करो। चुलनीपिता ने वैसा ही किया।

4- सुरादेव श्रावकः-

वे भी वाराणसी नगरी के ही निवासी थे। उनकी पत्नी का नाम धन्या था। वे अट्ठारह करोड़ स्वर्ण मुद्राओं के मालिक थे। उनके 6 गोकुल थे। चुलनीपिता की तरह सुरादेव ने भी भगवान महावीर के पास श्रावक धर्म का स्वीकार किया था। कुछ वर्षों बाद संसार से निवृत्त हो गये

ज्ञानी

यूनान में वेल्फी के मंदिर में एक अतींद्रिय क्षमता जाग्रत देवी घोषणाएं करती और लोग विशेष अवसरों पर अपने व समाज के भविष्य की बातें पूछते। किसी ने भीड़ में से पूछ लिया कि इस समय यूनान में सबसे बुद्धिमान-ज्ञानी पुरुष कौन है ? देवी ने घोषणा की- ''सुकरात''। यह सुनकर लोग सुकरात के पास गए और बोले कि देवी ने ऐसी घोषणा की है। सुकरात ने कहा- ''गलत। मैं तो अज्ञानी हूं, वैसे ज्ञान प्राप्त करने की मेरी जिज्ञासा अवश्य है।'' सुनकर लोग फिर देवी के पास गए और बोले कि सुकरात को आपने यूनान का सबसे ज्ञानी पुरुष बतलाया था। वह तो इनकार करता है और कहता है कि वह तो अज्ञानी है। देवी ने कहा- ''बस इसीलिए तो सबसे बड़ा ज्ञानी है कि ज्ञानवान होते हुए भी उसे अपने ज्ञान का अहंकार नहीं है।''

व्यक्तित्व की अमिट छाप

भिक्षुणियों के विहार में भिक्षुणी गौतमी के मार्गदर्शन में पांच सौ भिक्षुणियां निवास करती थी। वे प्रायः बुद्ध या अन्य वरिष्ठ भिक्षुओं को जेतविहार से आकर धर्म-शिक्षा देने के लिए आमंत्रित करती थी। बुद्ध ने आनंद से कह रखा था कि -वह किसी वरिष्ठ भिक्षु को वहां भेजकर भिक्षुणियों को धर्म-शिक्षा देने की व्यवस्था कर दिया करें। एक दिन उन्होंने वरिष्ठ भिक्षु मांड को वहां जाने के लिए कहा। मान्य मांड साधना-अभ्यास के क्षेत्र में बहुत प्रगति कर चुके थे, किन्तु उन्हें भाषण-कला नहीं आती थी। अगले दिन भिक्षाटन करके वन में अकेले ही भोजन ग्रहण करने के बाद वे भिक्षुणियों के विहार गये। भिक्षुणियों ने उनका उत्साह पूर्वक स्वागत किया। भिक्षुणी गौतमी ने उनको मंच पर आसीन किया और धर्मोपदेश करने का अनुरोध किया। उन्होंने अपने आसन पर बैठकर देशना के स्थान पर छोटी सी कविता सुनाई, जिसका आशय भगवान बुद्ध द्वारा ध्यान की अनुभूति एवं भगवान बुद्ध के प्रति अपार प्रेम का प्रदर्शन था।

वरिष्ठ भिक्षु मांड ने इससे आगे कुछ नहीं कहा, वरन वहीं बैठे-बैठे गहन समाधि-अवस्था में पहुंच गये। यद्यपि उन्होंने कुछ ही शब्द बोले थे, किन्तु ध्यान की उच्च अवस्था होने के कारण उनकी उपस्थिति मात्र से शांति और प्रसन्नता से वातावरण भर गया था। हालांकि, कुछ युवा एवं प्रखर उद्बोधन में विश्वास करने वाली भिक्षुणियों ने गौतमी से कहा कि कृपया उनसे पूछिए कि वह कुछ और देशना करना चाहेंगे, किंतु मांड ने दोबारा वही कविता दोहरा दी और मंच से उतर आए।

कुछ दिन पश्चात बुद्ध को वरिष्ठ भिक्षु मांड के धर्मोपदेश के विषय में बताया गया। बुद्ध से कहा गया कि भविष्य में वे ऐसे प्रतिभावान मान्य भिक्षुओं को ही भेजा करें जो धर्म देशना पर अच्छे वक्ता हों किंतु भगवान बुद्ध ने कहा- ''शब्दों की अपेक्षा साधक व्यक्ति की उपस्थिति अधिक महत्वपूर्ण होती है। वाचाल, लच्छेदार उद्बोधनों की तुलना में व्यक्तित्व का प्रभाव अधिक छाप छोड़ता है। चरित्र, आचरण एवं व्यक्तित्व की अमिट छाप ही श्रोताओं पर पड़ती है, वक्तृता की नहीं।

परिवार का खाता संभाल कर रखिये

✱ रामेश्वरदास गुप्त

मेरे छुटपन में दिल्ली क्लाथ मार्केट के सामने कम्पनी बाग में एक वयोवृद्ध व्यक्ति पागलों की तरह बैठा रहता था अथवा घूमता रहता था। वह आवाज लगाया करता था- एक लाख रुपये लूंगा, एक बात बताऊंगा। मैंने अपने कानों से उसकी यह आवाज सुनी थी परन्तु मैं उसका अर्थ नहीं समझ पाया था। मैं समझता था कि वह पागल है। कहीं एक लाख रुपये की एक बात भी होती है ?

हर चीज, हर बात, हर विचार समय और आयु के बिना भी समझ नहीं आते हैं। ज्यों-ज्यों मेरी आयु बढ़ती गई, त्यों-त्यों उस पागल की बात मेरे मस्तिष्क में समय-समय पर जागृत होती रही। अंत में मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि बात को सुनकर उस पर अमल किया जाए और उसे अपने आचरण में ढाला जाए तो उससे जो लाभ होगा, उस लाभ को एक लाख रुपये से तो क्या शायद लाखों रुपये से भी उसकी बराबरी नहीं की जा सकती और हां, यदि हम उस बात को एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल दें तो वह बात लाख रुपये की तो क्या एक कौड़ी की भी नहीं रह जाती।

बन्धुओं ! आज मैं भी आपको एक बात कहने जा रहा हूं। घबराइए नहीं, मैं लाख रुपये नहीं मांगूगा। हां, यह जरुर चाहूंगा कि आप मेरी इस बात पर आचरण करें, इसको कार्य रुप में परिणत करें। यदि आपको इसे कार्य रुप में परिणत किया तो आप स्वयं तो अमर हो ही जाएंगे, साथ ही अपने परिवार को भी हमेशा के लिए अमर बना देगें।

तो सुनिये ! जब मैं किसी से पूछता हूं कि तुम्हारे दादा के दादा का क्या नाम है ? क्या काम करते थे ? उनकी पत्नी का क्या नाम था ? वह क्या ब्याहे थे ? उनकी कितनी संतानें थीं ? आदि-आदि। तो इन प्रश्नों का उत्तर उनके पास नहीं होता। तब आप सोचिए कि जिस प्रकार तुम्हारे दादा के दादा के विषय में तुम्हें कोई जानकारी नहीं है, इसी प्रकार आगे चलकर तुम्हारी आने वाली पीढ़ियों को, संतानों को तुम्हारे विषय में भी कोई जानकारी नहीं होगी। जिस प्रकार तुम्हारे दादा और उससे पहले का वंश तथा वंश का इतिहास समाप्त हो गया, उसी प्रकार तुम, तुम्हारा नाम, तुम्हारा वंश, तुम्हारा परिवार और तुम्हारा इतिहास भी एक दिन समाप्त हो जायेगा। इसलिए अपने नाम को, अपने आपको, अपने परिवार को सदा-सदा के लिए अमर बनाए रखने के लिए, अपने परिवार के इतिहास को कायम रखने के लिये तथा अपने परिवार की श्रृंखला को, वंशावली की बेल को सदा हरी रखने और बढ़ती रहने के लिए आज से ही अपने परिवार की वंशावली को और उसके इतिहास को लिखना आरम्भ कर दो।

बाजार से आज ही एक बही खरीद लो और उस बही में अपने परिवार की वंशावली और इतिहास लिखना आरम्भ कर दो। बही तो आप जानते ही होंगे। दुकानदार जिस लम्बी बही में हिसाब-किताब लिखते है, वही बही आप भी ले आईए। बही इसलिए कहता हूं कि 1956 में विजय दशमी के दिन जब मैंने पहली बार अपने परिवार की वंशावली और उसका इतिहास लिखना आरम्भ किया तो एक मजबूत सा रजिस्टर तैयार कराया परन्तु कुछ वर्ष के बाद उस रजिस्टर के कागज फटने लगे, जिल्द तिड़कने लगी। मैंने सोचा कि यह रजिस्टर तो बहुत लम्बे समय तक अर्थात् सौ दो सौ, पांच सौ वर्ष तक ठहर नहीं सकता। इसलिए कुछ समय के बाद रजिस्टर के स्थान पर एक लम्बी बही का इस्तेमाल शुरु कर दिया। उसमें कागज फटने अथवा तिड़कने को गुंजाइश कम रहती है। अब प्रश्न यह है कि आप उस बही में अपने परिवार की वंशावली और इतिहास को किस प्रकार लिखें ? इसके लिये आप अपनी सुविधा और मान्यता के अनुसार जो भी दिन निश्चित करना चाहें, कर लें। जैसे दीपावली, दशहरा, अनन्त चौदस, बड़ा दिन, होली, बसंत-पंचमी, बुद्ध पूर्णिमा, नया सम्वत् आदि-आदि और प्रतिवर्ष उसी दिन, अपने परिवार के सदस्यों को अपने साथ बिठाकर उनके सामने उस बही के पन्ने पर अपने परिवार में पिछले एक वर्ष में जो कुछ भी घटित हुआ है, वह लिखिए। अब आप सोचते होंगे कि क्या लिखा जाए ?

सबसे पहले आपको अपने परिवार की वंशावली के विषय में जितनी भी जानकारी है, उसका एक नक्शा बना लीजिए। आप अपना नक्शा अपने बच्चों से शुरु कीजिए और बच्चों के पिता आप, आपके पिता कौन, उनके पिता कौन और पिता कौन, आदि-आदि। ऊपर की ओर चढ़ते चले जाइए। जहां तक भी आपकी जानकारी है ऊपर की ओर नक्शा बनाते चलेजाइए। दूसरे यह कि आपको अपने परिवार के बुजुर्गों

तथा पूर्वजों के विषय में जो कुछ भी जानकारी है, वह आप इस प्रकार लिख दीजिए जैसे-आपके किस बुजुर्ग अथवा पूर्वज का क्या नाम था ? वह कहां रहते थे ? वे क्या काम करते थे ? उनका विवाह कहां हुआ था ? उनकी पत्नी का क्या नाम था ? उनका स्वर्गवास कब हुआ ? उनके कितने बच्चे थे ? आदि-आदि। इसके अतिरिक्त परिवार के किसी पूर्वज ने जनहित का कोई कार्य किया हो जैसे-मन्दिर बनवाना, पाठशाला, तालाब, कुंआ, जोहड़ आदि बनवाने का विवरण भी आप लिख सकते हैं। इस प्रकार परिवार के वर्तमान सदस्यों और सदस्याओं का विवरण भी आप लिखें। अब आप सोचते होंगे कि प्रतिवर्ष हम उस बही में क्या लिखें ? प्रतिवर्ष उस बही में आप निम्न बातें लिख सकते हैं:-

आज (जैसे-बृहस्पतिवार आदि), दिन, तिथि (जैसे-आश्विन शुक्ल दशमी आदि।) विक्रम सम्वत् (जैसे-2059 आदि को परिवार के फलां- फलां व्यक्तियों (सभी स्त्री-पुरुष, बच्चों आदि के नाम) ने दशहरा (अथवा जिस पर्व को भी आप बही का पूजन करें) पूजन किया।

सबसे पहले यदि आपके परिवार में कोई बच्चा उत्पन्न हुआ है तो अपनी वंशावली नक्शे में उसका नाम बढ़ा दीजिए। फिर वर्ष भर में किस लड़के अथवा लड़की का किस दिन, किस समय जन्म हुआ ? किस व्यक्ति की, किस दिन, किस समय मृत्यु हुई ? किस लड़के अथवा लड़की का, किस दिन, किसके साथ सगाई हुई, विवाह हुआ ? किस व्यक्ति ने किस दिन, किस जगह पर नौकरी करना आरम्भ की अथवा व्यापार करना आरम्भ किया अथवा कोई उद्योग स्थापित किया, प्रतिष्ठान का संचालन आरम्भ किया। किस लड़के ने अथवा किस लड़की ने कौन सी कक्षा पास की ? किस लड़के अथवा लड़की ने पढ़ना आरम्भ किया ? कौन व्यक्ति, किस दिन देश में, विदेश में यात्रा करने के लिये गया और किस वापिस लौटा और कहां-कहां यात्रा करके आया ? किस व्यक्ति ने घर, दुकान, आफिस, पाठशाला, कुंआ, तालाब, पाठशाला आदि बनाने के लिये जमीन खरीदी, शिलान्यास करवाया, निर्माण कराया अथवा उद्घाटन हुआ। परिवार के किसी भी व्यक्ति ने अन्य कोई कार्य किया हो तो उसका विवरण भी आप लिख सकते हैं आदि-आदि। परिवार के विवरण के बाद आप समाज और राष्ट्र में घटित किसी विशेष घटना का विवरण भी लिख सकते हैं।

मेरे और आपके पूर्वजों ने यदि इस पारिवारिक इतिहास और वंशावली को लिखना आरम्भ कर दिया होता तो आज हमारे लिए वह सब कितनी उपयोगी जानकारी होती।

आज से जब आप अपने परिवार के इतिहास और वंशावली को लिखना आरम्भ कर देंगे तो सौ-दो सौ वर्षों के बाद इस बही का ऐतिहासिक दृष्टि से जो महत्व होगा, वह आने वाली पीढ़ियां एवं उनकी संतानें अनुभव कर सकेंगी और आनन्द ले सकेंगी। भविष्य की संतानें अपने परिवार से, अपने परिवार के लोगों से, अपने परिवार के लोगों द्वारा किये गये कार्यों से और परिवार के इतिहास की जानकारी से, परिवार की परम्पराओं से पूरी तरह परिचित होंगी।

परिवार कितना महत्वपूर्ण है, यह बात लोग भूलते जा रहे हैं। इसका कुप्रभाव पश्चिम के हर देश में दिखाई देता है। इसलिये परिवार की परिपाटी को बनाए रखना, चलायमान रखना, उसे महत्व देना बहुत आवश्यक है। कितना अच्छा हो यदि देश का हर परिवार, देश का ही क्यों, दुनिया का हर परिवार अपने परिवार की वंशावली तथा इतिहास लिखना शुरु कर दें।

तो कहिए, आई मेरी बात, समझ में आपको। यदि मेरी बात आपकी समझ में आ गई है और इस पर आप आचरण करना चाहते हैं तो अभी इसी समय एक बही खरीद लाइए और हां, एक कापी, एक पैंसिल लेकर अपने परिवार के इतिहास और वंशावली को लिखना आरम्भ कीजिए। आप उसे अपनी जानकारी के अनुसार और दूसरों से मालूम करके जितना भी लिख सकते हैं, लिख लीजिए। इसके बाद उसे साफ करके, बही में लिख दीजिए। तो यह बात एक लाख रुपये की ही नहीं, न जाने कितने लाख रुपये की सिद्ध होगी। यदि आपने आज से ही कार्य करना आरम्भ नहीं किया और कल-कल करते रहे तो कल कभी नहीं आएगा और मेरी यह बात आपके लिये एक कौड़ी की भी न होकर रह जाएगी। इसलिये पुनः कहता हूं, उठो ! अपने परिवार की वंशावली और उसका इतिहास लिखना आरम्भ करो।

✲ जीव के लिए, धर्म, अपनी कल्पना से या कल्पना प्राप्त अन्य पुरुष से, श्रवण करने, मनन करने या आराधना करने योग्य नहीं है, केवल जिसकी आत्म स्थिति है ऐसे सत्पुरुष से ही आत्मा या आत्मधर्म श्रवण करने योग्य है, यावत् आराधने योग्य है।

कल तुम्हारा है....

✻ डॉ. एम.एस. अग्रवाल

जीवन में आकस्मिक कुछ नहीं होता-आज जो कुछ हो रहा है- वह सब तुम्हारी देन है। कल अपने खेत में जो बोया था, समय पर पानी दिया और हरी भरी खेती लहलहाने लगी। लेकिन देखने में आया है छोटा सा तूफान सब उजाड़ कर चला जाता है। यह भी तुम्हारी देन है। ऐसे समय में घबराओ मत-सोचो भूल कहां हुई थी।

जीवन में जो कुछ हो रहा है- उसे जैसा है वैसा ही चलने दो। अपनी नोक-झोंक में मत उलझाओ। एक समय की बात है, छोटे से गांव में एक गरीब ब्राह्मण रहता था। उसकी एक ही लड़की थी लेकिन विवाह के लिये पैसों का जुगाड़नहीं हो पा रहा था। इसी चिन्ता में उसके दिन गुजरते जाते थे। पास के गांव में अच्छा लड़का भी मिल गया था लेकिन धन के अभाव में लड़के वालों को तारीख नहीं दे पाता था।

एक दिन वह पास के मंदिर से गुजर रहा था, पुजारी जी को अपनी रामकथा सुनाई। थोड़ा सोचकर बोले-देखो माधो अपने गांव में सेठ मंगल साहू रहते हैं। एक दिन उनकी दुकान पर चला जा, काम बन जायेगा। बड़े दयालु प्रवृत्ति के आदमी हैं।

दूसरे दिन वह सेठ की दुकान पर पहुंच गया। हाथ में पोथी लिए कुछ लिख रहे थे। छोटी गुल्लक पास रखी थी और उसी समय उनकी पत्नी आ गई और बोली- ''अंदर का घड़ा किसके लिए रखा है। उसमें से कुछ रुपये हमें दे दो, जेवर गढ़ाने है।'' सेठ, बोला-''देखो मेरे नहीं है किसी ओर के हैं-जब वह मांगेगा तो कहां से दूंगा। पत्नी बोली- ''रोज तो तुम अपने हाथ से डालते हो, दूसरे के कहां से हुए हमारे घर के हैं।'', ''अभी अन्दर जाओ, दुकान पर पंडितजी आए हैं। उनसे बात करने दे।'' कहो पंडितजी, कैसे आना हुआ ?

सेठ मैं इसी गांव का गरीब माधोदास ब्राह्मण हूं। बेटी की शादी के लिये 500 रुपये की जरुरत है। कुछ समय के लिये उधार दे दो तो बड़ी कृपा होगी। सेठ ने कहा- ''ऐसा करो बैठक की चाबी ले जाओ और घड़े में से पैसे ले लो। तुम्हारे होंगे मिल जायेंगे।

दबे पैर ब्राह्मण अन्दर चला गया। जैसे ही घड़े का ढक्कन हटाया, काला नाग फन फैलाकर फुंकारने लगा। उसी घबड़ाहट में ढक्कन रख दिया और बाहर आ गया और सेठ को सारी कथा कह सुनाई।

देखो पंडित मैंने पहले ही कहा था, पैसे मरे नहीं है, अब बोलो मैं क्या करुं।

बेचारे गरीब ब्राह्मण दुःखी मन से पास की नदी पर जाकर रोने लगा। उसी समय एक साधु आया और बोला- क्यों रोता है ?

''बाबा मेरी बेटी सियानी हो गई है, विवाह के लिये पैसे का इंतजाम नहीं हो रहा। कल मंगल सेठ के पास गया था लेकिन सांप ने बनता काम बिगाड़ दिया।''

अच्छा एक काम कर। यहां से दस कोस दूर चला जा, वहां के गांव में रामू और श्यामू नाम के दो भाई रहते हैं। पूछने पर सब पता चल जायेगा। उनसे चिट्ठी लिखवा ला और सेठ को दे देना। तेरा काम बन जायेगा।

मरता क्या नहीं करता। साधु के बताए गांव में पहुंच गया और ढूंढने पर रामू-श्यामू का घर भी मिल गया। रामू घर की चौपाल पर बैठा था। उसके पास जाकर बोला- देखो बहुत गरीब ब्राह्मण हूं। मेरे गांव में मंगल सेठ रहता है। उसके नाम एक चिट्ठी लिख दो। मुझे 500 रुपये मिल जायेंगे।

रामू ब्राह्मण की बात सुनकर बड़ा हंसा और बोला- देखो बाबा हम बहुत गरीब है दो जून की रोटी जुटाना मुश्किल होती है। हमारी चिट्ठी पर तुम्हारा सेठ रुपये नहीं देगा। अरे तुम्हें हमारा घर किसने बता दिया ?

बेचारा ब्राह्मण रामू की बात सुनकर घबरा गया। जो थोड़ी आस बनी थी वह टूटती देख जैसे ही चलने को हुआ श्यामू ने उसे रोक लिया और सारी बात सुनी और बोला-

देखो रामू अगर हमारी चिट्ठी लिखने से इसका काम बन जाता है, तो क्या हर्ज है ? अगर नहीं लिखेंगे बामना का शाप लगेगा। कुछ देर बाद दोनों भाईयों ने एक छोटी चिट्ठी दे दी और कहा- देखो बाबा, जाकर मंगल साहू को देना, तुम्हारा काम बन जायेगा।

माधोदास के पैरों में पता नहीं कहां से शक्ति आ गई। दोनों को आर्शीवाद देकर सेठ की दुकान पर जाकर चिट्ठी दिखाई।

सेठ ने उसे पढ़ा और बोला- देखो पंडित तुमको मैंने पहले भी कहा था। पैसे मेरे नहीं है, अन्दर चले जाओ तुम्हारे होंगे मिल जायेंगे।

ब्राह्मण भारी मन से अंदर घुसा, घड़े के ढक्कन को हटाया, वहां कोई सांप नहीं था। चिट्ठी अन्दर डाल दी और पांच सौ रुपये लेकर बाहर आ गया।

कुछ दिनों बाद उसी गांव में डाका पड़ा और संयोगवश सेठ का घर लूट गया और घड़ा श्यामू के हिस्से आया। जो खोला काफी धन था। उनकी सेठ को लिखी चिट्ठी उसी में पड़ी थी अपने आदमी को भेजकर पंडित को उसके गांव से बुलवाया और श्यामू बोला- देखो पंडित तुम्हारी चिट्ठी हमें मिल गई है। अब रुपये कब वापिस देने की सोच रहे हो। पंडित पहले तो घबराया लेकिन कुछ देर बाद बोला- देखो श्यामू भैया तुम्हारे पैसे की अमानत है, जुगाड़ होने पर चुका दूंगा।

रामू हंसा और बोला- देखो पंडित, जानता हूं कहां से इकट्ठा करेगा। देख इस घड़े से जो मिला है उसमें तेरा भी हिस्सा है और जो तू ने लिया था वह सब माफ किया। इतना कहकर चिट्ठी फाड़कर उसे दे दी और बहुत सा धन भी दिया।

मानव जीवन में ऐसी अनेक घटनाएं गुजर जाती है- अमीर गरीब उसके सामने कोई स्थान नहीं रखते जो अधिक पैसे होने पर अभिमान करने लगते हैं- उनकी लुटिया पता नहीं कहां कैसे डूब जाती है और ऐसे भी देखें है जिन्हें कल तक रोटी के लाले थे एक रुपये के लाटरी टिकट से लाखों के मालिक बन गए।

जीवन में अपने को देखो-समय को समझो। यह संसार जैसा है वैसा देखने में तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ेगा। इसमें खड़े होकर हबड़-हबड़ मचाने से सब बिगड़ जायेगा। अगर कुछ पाना चाहते हो अपने भावी जगत के खाते में कुछ पैसे डालो। कल जिस खंजाची से दो पैसे नहीं मिले थे-आज वही खजांची तुम्हारे चैक देखते ही लाखों रुपये दे देगा।

आज के जीवन में जो कुछ किया है, वह तुम्हारी तिजोरी में पड़ जाता है। जो चोरी, जुआ, धोखा देने के चक्कर में पड़ गए सांप वाला घड़ा ही हाथ लगेगा। सत्कर्मो का दिया तुम्हारा साथ देगा और संसार का सारा नाटक स्वयं पूर्ण हो जायेगा। जागो- उठो-इंसान बनो। समय तुम्हारा साथी बन जायेगा और आनेवाला कल स्वर्णिम होगा और प्रत्येक किरण आलोकित कर देगी।

आयंबिल

✼ अमंगल को टालने का उपाय है आयंबिल।

✼ मनोकामनाओं की पूर्ति का आधार है आयंबिल।

✼ रस परित्याग की साधना है आयंबिल।

✼ आध्यात्मिक उन्नति का अलंकार है आयंबिल।

✼ मनोवृत्तियों पर नियंत्रण की प्रक्रिया है आयंबिल।

✼ अणाहारी पद की आराधना है आयंबिल।

✼ दुर्भाग्य को दूर करने का तरीका है आयंबिल।

✼ सौभाग्यशाली जीवन का वरदान है आयंबिल।

✼ 60,000 साल तक आयंबिल कर सुंदरीजी ने शरीर की क्रांति को नष्ट किया।

✼ वर्धमान तप की अखंड 100 ओली पूरी करनेवाले प्रथम राजा- चंद्र राजा बने। उसका फल मिला केवलज्ञान और 800 चौबीसी तक उनका नाम अमर रहेगा।

✼ सनत चक्रवर्ती ने पूर्वभव में वर्धमान तप की ओली पूर्ण की थी।✼ श्री नेमिनाथजी के उपदेश से द्वारिका नगरी पर आये हुए उपद्रव को टालने के लिये 12 सालों तक ओली की अखंड आराधना हुई थी। ✼ पांच पांडवों ने पूर्वभव में वर्धमान तप की ओली आराधना की थी।✼ घातकी खंडके पद्मनाथ राजा के चुंगल में आने पर द्रौपदी ने छह महीने तक छट्ठ के पारणे आयंबिल किये जिससे संकट दूर हुआ।✼ महासती दमयंती ने पूर्वभव में तीर्थंकर तप 504 अखंड आयंबिल से करके 24 भगवान के ललाट पर रत्न के टिके किये।✼ चरम केवली जंबुस्वामी ने 12 साल तक छट्ठ के पारणे आयंबिल किये।✼ मुनिसुंदरसूरिजी जावजजीव आयंबिल करके संतिकरम स्त्रोत लिखा।

✼ सिंहसेन दिवाकर सूरी ने 9 वर्ष तक अखाण्ड आयंबिल आराधना की।

✼ सुधर्मा स्वामी की 44 वीं पाट पर जगतचंद्र सूरि ने जावजजीव आयंबिल तप था।

✼ धन्ना मुनि दीक्षा काल में बेले-बेले तप के पारणे आयंबिल करके चौदह हजार साधुओं में श्रेष्ठ कहलाये।

✼ तामली तापस ने आयंबिल करके लब्धियों प्राप्त की। भगवती सूत्रानुसार तामली तापस ने 60 हजार वर्ष तक एक अनाज आयंबिल जैसा उग्र तप कियाइससे वे लघु कर्मी बने।

चौबीस तीर्थकरों का परिचय

क्रम	भगवान का नाम	तीर्थकरों की माता का नाम	तीर्थकरों के पिता का नाम
1-	ऋषभदेव स्वामीजी	मरुदेवा	नाभिराजा
2-	अजितनाथजी	विजयारानी	जितशत्रु राजा
3-	संभवनाथजी	सेना रानी	जितारि राजा
4-	अभिनंदन स्वामी	सिद्धार्थ रानी	संवर राजा
5-	सुमतिनाथजी	मंगला रानी	मेघ राजा
6-	पद्मप्रभस्वामीजी	सुसीमा रानी	श्रीधर राजा
7-	सुपार्श्वनाथजी	पृथ्वी रानी	प्रतिष्ठ राजा
8-	चन्द्रप्रभस्वामीजी	लक्ष्मणा रानी	महासेन राजा
9-	सुविधिनाथजी	रामा रानी	सुग्रीव राजा
10-	शीतलनाथजी	नंदा रानी	दृढरथ राजा
11-	श्रेयांसनाथजी	विष्णु रानी	विष्णु राजा
12-	वासुपूज्य स्वामीजी	जया रानी	वसुपूज्य राजा
13-	विमलनाथजी	श्यामा रानी	कृतवर्मा राजा
14-	अनंतनाथजी	सुयशा रानी	सिंहसेन राजा
15-	धर्मनाथजी	सुव्रता रानी	भानु राजा
16-	शांतिनाथजी	अचिरा रानी	विश्वसेन राजा
17-	कुंथुंनाथजी	श्री रानी	शूर राजा
18-	अरनाथजी	देवी रानी	सुदर्शन राजा
19-	मल्लिनाथजी	प्रभावती रानी	कुंभ राजा
20-	मुनिसुव्रत स्वामीजी	पद्मावती रानी	सुमित्र राजा
21-	नमिनाथजी	वप्रा रानी	विजय राजा
22-	नेमिनाथजी	शिवा देवी	समुद्रविजय राजा
23-	पार्श्वनाथजी	वामा रानी	अश्वसेन राजा
24-	महावीर स्वामीजी	त्रिशला रानी	सिद्धार्थ राजा

आगमोद्धारक की सदस्यता एवं श्रुतभक्ति में दान देने के लिये ऑन लाईन बैंक की जानकारी

महोदय,

आगमोद्धारक की सदस्यता प्राप्त करने के लिये सदस्यता शुल्क एवं श्रुतभक्ति दान आप ऑन लाईन जमा कर सकते है। आपकी धनराशि भेजने के लिये:-

बैंक का नामः- इण्डियन ओवरसीज बैंक, शाखा नईसड़क उज्जैन (म.प्र.)

खाताः- श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं.:- 068002000001425 IFSC Code:- IOBA0000680

प.पू. उपकारी संगीत सम्राट आ.भ.श्री जिनचंद्रसागरजी म.सा. का गुणानुवाद

✻ मोक्षरत्नसागर

नवकार ना जे अतुल ध्यानी, श्रेष्ठ योगीश्वर ---,
जे आर्य संस्कृति तणा, सुविशुद्ध संयमधर हुवा।
आगम केरी वाणी ने, वससाववा बादल हवा,
पंन्यास गुरुवर अभयसागर, चरणो होजो वन्दना ॥

प्रभु श्रीमहावीर स्वामीजी की प्रभावक परंपरा में पू. बंधुबेलड़ी म. 76 वीं पाट में अयोध्या पुरम् तथा सुमेरु नवकार तीर्थ के प्रेरक मार्गदर्शक जिनशासनरत्न प.पू. उपकारी आ.भ. श्री जिनचंद्रसागरसूरीजी म.सा. हुए।

प.पू. द्वितीय उपधान तप निश्रादाता उपकारी आ.भ.श्री अशोकसागरसूरीजी म.सा. की पावन निश्रा में दादा आदिनाथजी (पालीताना) की छत्रछाया में श्री आगम मंदिर जैन धर्मशाला में मैंने संसारी जीवन में किया था।

पू.प्रवचन प्रभावीजी बंधुबेलड़ी उपकारी आ.भ.श्री हेमचंद्रसागरसूरीजी म.सा. की निश्रा में शंखेश्वरजी महातीर्थ से शंखेश्वरपुरम् (पालीताना) का छःरिपालित संघ में रहने का सौभाग्य देव-गुरुदेव कृपा से प्राप्त हुआ।

पू.आ.भ.श्री सागरचंद्रसागर म.सा. की निश्रा में सूरत (वेसु) में नूतन उपाश्रय का उद्घाटन प्रसंग में आपश्रीजी के संसारी पिताश्री मुनिश्री सत्वचंदसागरजी म. को मिला था।

प.पू.उपकारी गुरुदेव मालव भूषण भोपावर तीर्थोद्धारक आ.श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञा-आर्शीवाद से जब जंबुद्वीप धर्मशाला में रहकर शेषकाल में प्रायः तीसरी या चौथी बार 99 यात्रा की आराधना कर रहा था तथ प.पू. उपकारी आ.भ. श्री जिनचंद्र सागरसूरीजी म.सा.आदि ठाणा वहां विराजमान थे। बात प्रायः 16 साल पूर्व की है। मैंने पूज्यश्रीजी को कहा- ''मुझे 99 यात्रा में से करीबन 60 यात्रा हो गई, यदि आपश्री की कृपा होगी तो श्री जंबुद्वीप धर्मशाला (पालीताना) में रहकर शेष यात्रा की आराधना संपूर्ण करुं।'' आपश्रीजी का वहां से विहार था, सो आपश्रीजी ने वहां के मुनिमजी को कहकर मेरी 99 यात्रा तक वहां स्थिरता के लिये समुचित प्रयत्न किया। आपश्रीजी का यह उपकार मैं कैसे भूल जाऊं ?

आपश्रीजी के पास संगीत की कला थी। शायद सागर समुदाय के आपश्रीजी संगीत सम्राट थे। अंतिम अयोध्यापुरम् में पू.प्रसन्नचंद्रसागरजी म.सा. एवं पू.विरागचन्दसागरजी म.सा. की आचार्य पदवी प्रदान महोत्सव में साथ में हमारा -रहना हुआ था।

हमारे प.पू उपकारी बागड़ (राज.) विभूषण आ.भ.श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा. ''मैत्री'' के अयोध्यापुरम् तीर्थ से बिदा होते समय आपश्रीजी ने शब्द थे- ''मोहित म. आप सिपोर (बड़नगर-गुजरात), खानदान पिताश्री महासुख भाई के सबसे छोटे पुत्र और बिपीनभाई, कीर्तिभाई, कुमारपाल भाई, शैलेष भाई, रमीलाबेन, कल्पनाबेन के भाई हुए प. पू.आ.भ.श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा. एवं पू. 4700 सलंग आंयबिल तपाराधक उपाध्याय भ.श्री वैराग्यरत्नसागरजी म.सा. ''विभोर'' आ. पूज्य की उपस्थिति यह दो आचार्य पदवी प्रदान महोत्सव में सोना में सुहागा की तरह रही। आपश्रीजी भक्तों की भीड़ में भी हमारी उपस्थिति से बहुत खुश थे। सूरत (अठवा लाईन्स) में संसारी संगीताबेन ने आपश्रीजी की निश्रा में मोक्षमाला पहनी थी। आपश्रीजी जिनशासन को पाकर मोक्ष मार्ग की और अग्रसर बने यही शुभकामना छद्मस्था के कारण भूल हुई हो तो त्रिविदे मिच्छामि दुक्कड़ंप.पू. उपकारी गुरुदेवश्रीजी का चरण किंकर मोक्षरत्नसागर।

भरत ने राम-वनवास के समय उन्हीं की तरह साधुवेश बनाकर व्रतपूर्वक चौदह वर्ष काटे। इसका रहस्य बताते हुए सूतजी ने शौनकजी से कहा- ''हे शौनक, चारों बालक जब छोटे थे तब मिल-जुलकर गेंद खेलते और दूसरी प्रतिद्वंद्विताओं द्वारा विनोद करते थे। राम बड़े थे और बलिष्ठ भी, तो भी उनका यह प्रयत्न रहता था कि भाईयों को जिताने हेतु स्वयं हारने का उपक्रम करें। इससे छोटों का साहस-उत्साह बढ़ता और उन्हें श्रेय मिलता था। भाईयों ने उनकी इस उदारता को ताड़ लिया और सच्चे भ्रातृ-भक्त बन गये। बड़े होने पर वही बीजांकुर लक्ष्मण और भरत के आदर्श भाई के रुप में विकसित करने के निमित्त कारण बने और लक्ष्मण ने स्वेच्छापूर्वक वनवास लेकर उनका साथ दिया।

।। श्री परमात्माय नमः ।।

शेठ नगीनचंद कपुरचंद झवेरीना प्रयासथी

जीवदया फंड

श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी

सुभाष चौक, गोपीपुरा, सुरत - 1
मो.: 09825414470 / 9820078772
स्थापना वि. सं. 1962
इ.स. 1906 रजि. नं.- 1744
PAN : AAATS8024L

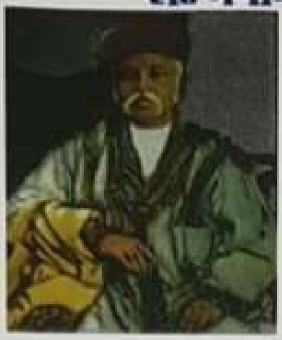

पैसा भेजने का पता :

प्रफुल अमीचंद झवेरी

26, खटाऊवाडी, गोरेगांवकर लेन,
सेन्ट्रल सिनेमानी पाछळ,
मुंबई - 400 004.
ऑफिस फोन : 2387 8476
मोबाईल : 98200 78772

धर्मप्रेमी सद्गृहस्थश्री, सादर प्रणाम !

जीवदया फंड संस्था सुरत के दानवीर शेठ श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी के प्रयासी के द्वारा स्थापित एक रजीस्टर्ड ट्रस्ट है। यह जीवदया फंड संस्था के द्वारा कतल के लीये जानेवाले ओर बीन उपयोगी जीवो की छुडवाकर के सुरत की पांजरापोल में भेजा जाता है। यह कार्य पीछले ११४ सालो से यह संस्था कर रही है। ओर शेठश्री के उत्तम पुन्यबल की वजह से यह कार्य के अंदर लगातार प्रतिवर्ष प्रगति हो रही है। जैसे की पीछले पांच सालो के दौरान (एप्रील - २०१४ से मार्च - २०१९) १०७९८ जीवो को छुडाया / बचाया गया है।

हमारे आंगन में आनेवाले बेझुबान जीवो को पांजरापोल के अंदर ट्रस्टीओ के द्वारा नीगरानी करके सोंपा जाता है। ओर पशु के संपूर्ण जीवनकाल तक उसको संभालकर रखा जाता है।

अनंत दया के सागर भगवान श्री महावीर प्रभु के शासन के दो स्तंभ है। अहिंसा ओर जीव के उपर मैत्री। सर्वज्ञश्री के यह संदेश को सार्थक करने के लिये दीनो का भी बहुत बडा महत्व है। जैसे की

आपके परिवार के कोई भी सभ्य का जन्मदिन

पशु परिवार के एक सभ्य को जीवनदान देकर मना सकते है।

आपके परिवार मे आये हुए शुभ लग्नोत्सव के दीन

एक पशु युगल को जीवनदान देकर उनका जीवन उत्सवमय बना सकते है।

कर्मसंयोग के कारन आई हुई बीमारी का दुःख ओर अशाता को टालने के लीये

कोई पशु को अभयदान प्रदान करके महाशाता का सुख प्रदान करे।

अपने स्वजन के मृत्यु के दुःखद समय में एक पशु को

मृत्यु के मुखमें से छुडवाने से आपश्री को सांत्वना भी प्राप्त होती है ओर आपके स्वजन की सदगति प्राप्ती की प्रार्थना भी कर सकते है।

पवित्र पर्व के धर्मोत्सव के समय एक जीवको

जीवनदान देकर पर्व उपासना को दया ओर करुणामय बनाये।

आपश्री हंमेशा के लीये तिथि का भी चयन कर सकते है। यह तिथि के दीन दान में दी गई रकम का जो ब्याज मीलता है उसमें से जीव को छुडवाया जायेगा।

यह संस्था के द्वारा एप्रील २०२० से मार्च २०२१ के एक वर्ष के समय जो की लोकडाउन था, उस समय में कुल २५९१ जीवो को छुडवाया गया है।

आपश्री चेक या ड्राफ्ट जीवदया फंड के नाम का बनाए। रोकड रकम में भी आप योगदान दे सकते है। (आपश्री का अनमोल योगदान सुरत ओर मुंबई में उपर दिये गये पते पर भीजवा सकते है।)

आपश्री आपका योगदान हमारे बेन्क खाते के अंदर भी जमा करवा सकते है। जीसकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारी संस्था का 80-G नंबर AAATS 8024 LF 20210 है।

Bank Name	: AXIS BANK LTD.	Bank Name	: BANK OF INDIA
A/c. Name	: JIVDAYA FUND	A/c. Name	: JIVDAYA FUND
IFSC	: UTIB0002274	IFSC	: BKID000001
A/c. No.	: 92101003362 1820	A/c. No.	: 0012010000 1219
Branch	: Charni Rd, Mumbai	Branch	: Mumbai Main Branch

जीवदया की शुभ भावना से कीये हुए कार्य से अक्षय सुख ओर मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है ओर नरकगति के कर्म का ओर अनेक भवो के पापो का क्षय भी जीवदया का कार्य करने से होता है। जीवदया का कार्य तीनो लोकमें श्रेष्ठ और सर्वोत्तम कार्य है।

दान ऐज सफल जीवन

लि. ट्रस्टीगण

प्रफुल अमीचंद झवेरी
पुष्पसेनभाई पानाचंद झवेरी
विरेन्द्र नेमचंद झवेरी

नलीनभाई फकीरचंद
शरदभाई गुलाबचंद कांटावाला
उषाकांत साकेरचंद झवेरी

वर्ग पहेली क्रमांक-347

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1	2		3	■	4	5	6	
7		■	8	9	■	10		■
■		■	■	11	12	■	13	14
15			■	■	16			
	■	■	17			■	■	
18	19			■	■	20	21	
22		■	23	24	■	■		■
■	25	26	■	27	28	■	29	
30				■	31			■

बाएं से दाएं:-

1- प्रभु दर्शन सुख संपदा, प्रभु दर्शन---
प्रभु दर्शन थी पामिये सकल पदारथ सिद्ध (4)

4- पार्श्व प्रभु के प्रथम भव में जन्म स्थली पोतनपुर के राजा का नाम---(4)

7- माता त्रिशला ने दसवें स्वप्न में देखा पद्म सरो--- (2)

8- सुर---मुनिजन जिनके चरणें, निशदिन शीश झुकाते है, जो गाते है प्रभु की महिमा, वो सब कुछ पा जाते है (2)

10- जब कोई नहीं आता मेरे दादा आते है,
मेरे दुख के दिनों में वो बड़े---आते है (2)

11- आबू रोड़ के पा--र नगर ही है,पूर्व काल का ओड़ शहर (1,1)

13- भ.महावीर की माता का नाम त्रिश--- वी (1,1)

15- जय जय आरती आदि--नाभि राजा मरु देवी के नंदा (3)

16- -- समरु सदा सोरठ देश मझार,मनुष्य जनम पामी करी, वंदू बारंबार (4)

17- भ.अजीतनाथजी की माता का नाम--- (3)

18- फालना के निकट पार्श्व प्रभु का प्राचीन तीर्थ, पूर्व काल का वरकनपुर अब है--- (4)

20- भ.अभिनंदन स्वामी का लांछन--- (3)

22- तेहरवें स्वप्न में माता त्रिशला ने देखी--राशि (2)

23- अश्वसेन के राजदुलारे,--देवी के सुत प्राण प्यारे
सबसे नेहा तोड़ा, जगसे मुख को मोड़ा.संयम धारा (2)

25- जल--जुगते करो, मेल अनादि विनाश
जल पूजा फल मुज होजो, मांगु एम प्रभु पास (2)

27- भ.ऋषभदेव का मोक्ष कल्याणक वाला महिना-- (2)

29- भरुच के निकट धर्मनाथ, आदिश्वर प्रभु के इस तीर्थ में सास बहू ने मंदिर खूब बनाए हैं---(2)

30- बामनवाड़ा तीर्थ के निकट स्थित वीरवाड़ा तीर्थ का प्राचीन नाम--- (4)

वर्ग पहेली क्रमांक-346 का परिणाम

कु	मा	र	■	का	ल	का	चा	र्य
र	■	पु	ख्या	■	क्षम	■	र	■
ग	न्धा	र	■	मा	णी	र	■	■
डु	■	■	भा	ण्ड	■	प	र	मो
ग	■	■	दे	व	ग	ति	■	क्षा
नि	र्धू	म	■	ग	ण	■	■	सा
■	■	ल	ग	ढ़	■	म	ग	धा
■	सा	■	रा	■	म	हा	■	न
ही	र	वि	ज	य	■	वी	र	म

31- माता मरुदेवी वाट जोवता, इतरे बधाई आई रे,
आज ऋषभजी उतर्या बाग में, सु--षाई रे (1,2)

ऊपर से नीचे:-

1- --कार मंत्र है महामंत्र इस मंत्र की महिमा भारी है (2)

2- तू मने भगवान एक---आपी दे, ज्या बसे छू तू मने त्यां स्थान आपी दे (4)

3- गोधन, गजधन, बाजिधन और रतन धन खान,
जब आवे संतोष धन सब--धूरि समान (2)

5- मैरी नैया चलती है, पतवार नहीं चलती,किसी और की अब मुझको, द--र नहीं होती, मैं डरता नहीं जग से दादा साथ होते है (2)

6- सिद्धाचल ना वासी,---ल ना वासी,जिनजी प्यारा, आदिनाथ ने वंदन हमारा (4)

9- मेरे मन में पारसनाथ, तेरे मन में पारसनाथ, रोम-रोम में बसे है पारसनाथ रे, मेरी सांसो में समाया पा--नाथ रे (2)

12- इस तीर्थ से ही निकला जैन वंश ओसवालों का (3)

14- आबू रोड के निकट वीर प्रभु का प्राचीन तीर्थ (4)

15- जीवड़ा--पूजिये, पूजा ना फल होय, राजा नमे प्रजा नमे आण न लोपे कोय (4)

17- वरदे,--दिनी वर दे, प्रिय स्वतंत्र रव, अमिय मंत्र नव भारत में भर दे (2,1)

19- भ.धर्मनाथजी की जन्मस्थली-- (4)

21- --मंत्र है न्यारा, इसने लाखों को तारा, इस महामंत्र का जाप करे, भवजल में मिले किनारा (4)

24- चेटक राजा रिश्ते में भ.महावीर के--होते थे (2)

26- हर शुभ कार्य को करने से पूर्व नवकार महामंत्र का --अवश्य करते है (2)

28- आवो आवो पारसनाथ, थारी--करु मनुहार,दादा मनड़ा में लागी घणी आस जी,म्हारेआंगणिये पधारो दीनानाथ जी (2)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-347

✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

प्रश्न-निम्न लिखित पर्व कब आते है ?

1- संवत्सरि, 2- ज्ञान पंचमी, 3- मौन एकादशी, 4- वर्षीतप प्रारंभ, 5- वर्षीतप पारणा 6- शासन स्थापना दिन, 7- शत्रुंजय आदिनाथ दादा प्रतिष्ठा दिन, 8- शत्रुंजय-6 गांव यात्रा, 9- महावीर जन्म वांचन, 10- दुबली आठम, 11- मेरु तेरस, 12- नूतन वर्ष।

अभक्ष्य क्या है ?

✻ दहीः- दो रात बीतने पर दही में दो इन्द्रिय (Two senses moving) जीवों की उत्पत्ति होने से अभक्ष्य।

✻ मक्खनः- छाछ से अलग होते ही तुरन्त दो इन्द्रिय चलते-फिरते असंख्य जीवों की उत्पत्ति होने से अभक्ष्य।

✻ बरफ- पानी जमने पर असंख्य एक इन्द्रिय जीवों की मृत्यु, फिर दो इन्द्रिय चलते-फिरते असंख्य जीवों की उत्पत्ति।

✻ आलू, प्याज (कंदमूल):- सुई के नोक जितने ही भाग में Unlimited अनंता जीवों की उपस्थिति।

✻ द्विदलः- (कच्चे दूध-दही के साथ दाल या दाल के अनाज का मिश्रण)- तुरन्त दो इन्द्रिय चलते-फिरते असंख्य जीवों की उत्पत्ति।

✻ Ice cream:- में- E-471 (मांसाहारी तत्व) की उपस्थिति।

✻ चीझ- बछड़े की आंत से बना ''रैनेट'' और सुअर के पेट से बना ''पेप्सीना'' से दूध जमाकर चीझ बनता है।

✻ जेजी, जेम्स, आइसक्रीम पावडर, केप्सूल के कवर, सोफ्ट सुगर केण्डी आदि में ''जिलेटीन'':- जानवरों की हड्डियों और चमड़ी को उबालकर बनता है।

✻ केडबरी आदि चाकलेटः- एक ही चाकलेट में 600-1380 Mg Nickel, अधिकतम सुरक्षा सीमा मात्र 4 Mg Nickel है।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

वर्ग पहेली क्रमांक-346 के परिणाम

विजेताः-

1-कृष्णकुमार जालोरी, विदिशा (म.प्र.) - प्रथम

2-श्रीमती चंदनबाला जैन, देवास (म.प्र.) - द्वितीय

3-श्रीमती प्रभा जैन, देवास (म.प्र.) - तृतीय

इनके भी उत्तर सही थेः-

भारती जैन, देवास

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-346 के परिणाम

सही उत्तर-

1- आदिनाथ, 2- महावीर स्वामी, 3- सुधर्मस्वामी 4- सिद्धसेन दिवाकर, 5- बप्प भद्र सूरि, 6- हरिभद्र सूरि, 7- परमदेव सूरि, 8- हेमचंद्राचार्य, 9- धर्मघोष सूरि, 10- हीर सूरि, 11- आनंदसागर (सागरानंद) सूरि।

नोटः-एक भी विजेता के उत्तर सही नहीं निकले।

✻ देह के लिए अनंतबार आत्मा को गलाया है। जो देह आत्मा के लिए गलायी जायेगी, उस देह में आत्म-विचार जन्म लेने योग्य है ऐसा मानकर, सब देहार्थो की कल्पना छोड़कर एक मात्र आत्मार्थ में उसका उपयोग करना है, ऐसा निश्चय मुमुक्षु जीव को अवश्य करना चाहिये।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-4-2024 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी को सागर समुदाय की प्रवर श्रमण समिति में लिया गया

यह गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरी महाराज का सम्मान देने जैसा निर्णय है।

✻ पूज्यपाद सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति वचनसिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराजा का हार्दिक आभार।

मध्यप्रदेश के बाद श्री सम्मेदशिखरजी महातीर्थ में प्रतिष्ठा और चैत्र नवपद ओली आराधना का मेला लगेगा

✻ श्री सम्मेदशिखरजी महातीर्थ में चैत्र नवपद ओली आराधना और अलौकिक प्रतिष्ठा चैत्र सुदी-13 को होने के साथ वर्तमान शासनाधिपति श्री वीर प्रभु का जन्म कल्याणक होने के साथ युवा जैनाचार्यश्री का 52 वां जन्मदिवस भी है, अनंत शुभकामनाएं।

✻ नूतन दीक्षित बालमुनि श्री देवर्धिरत्नसागरजी की बड़ी दीक्षा 8 मार्च को छतरपुर में हुई। महामांगलिक 11 मार्च को सतना में हुई।

✻ पूज्यपाद गुरुदेवश्री का 81 वां जन्मदिन 28 मार्च को सारे देश में अनुकम्पा दान और जीवदया के रुप में मनाया गया।

✻ चार्तुमास जयपुर में होगा, शिखरजी से जयपुर विहार होगा।

श्री सम्मेद शिखरजी में 400 वर्षो बाद प्रतिष्ठा 20 अप्रेल को वरघोड़ा श्री भोमियाजी पूजन	18 अप्रेल को क्षेत्रपाल पूजन सामूहिक श्री सिद्धचक्र महापूजन	19 अप्रेल को श्री नवग्रह-पाटला दस दिक्पाल पूजन 18 अभिषेक श्री पार्श्व भोमियाजी महापूजन
<u>सम्मेद शिखर</u> चैत्र ओली 15 अप्रेल से 23 अप्रेल 24	21 अप्रेल को प्रतिष्ठा श्री लघु शांति महापूजन	22 अप्रेल को द्वारोद्घाटन सत्तरभेदी पूजन

सोने में सुवागा

पूज्यश्री का 52 वां जन्मोत्सव सम्मेद शिखर में 21 अप्रेल को मनेगा

✻ मालवा में अंजन प्रतिष्ठा के साथ श्री वीर प्रभु के श्रमण समुदाय को वृद्धिवान बनाकर विश्वरत्न नाम को सार्थक किया। सागर समुदाय को दीर्घकाल तक के लिये समर्थ बनाया। अल्प समय में चार बाल मुनियों की भगवती प्रवज्या का संयोग बना नवरत्न गुरुकुल को श्रमण से समर्थ किया।

✻ श्री शिखरजी में अप्रेल का महिना यादगार बनेगा, प्रतिष्ठा महोत्सव 4 अप्रेल से होगा, 20 अप्रेल को ऐतिहासिक वरघोड़ा तथा भोमियाजी का हवन, 21 अप्रेल को ध्वजदण्ड कलश की प्रतिष्ठा होगी।

उज्जैन- संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधि पति गीतार्थ मूर्घनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्य पाद गच्छाधिपति श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी के 18 फरवरी को देहत्याग देने के बाद यह निश्चित हो गया था कि सुविशाल सागर समुदाय के आगामी गच्छाधिपति वचनसिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा होंगे।पूज्यश्री को गणनायक पद पर विराजमान करने के लिये 22 फरवरी को श्री आदिनाथ सोसायटी में पदवी प्रदान महोत्सव आयोजित किया गया। । इसके तुरन्त बाद आपश्री का पूना के विभिन्न संघों, बहुमान होने के बाद मुंबई की ओर विहार हुआ, वहां भी अनेक श्री संघों सत्कार सम्मान चल ही रहा है। इसी बीच **पूज्यश्री ने सागर समुदाय को मजबूती प्रदान करने के लिये महत्वपूर्ण निर्णय लेना आरंभ कर दिये है। सागर समुदाय की प्रवर श्रमण समिति का पुर्नगठन करते हुए पूज्यपाद युवा जैनाचार्यश्री विश्वरत्नसागरसूरीजी महाराजा को सागर समुदाय की श्रमण प्रवर समिति में सम्मिलित करते हुए पूज्यश्री की योग्यता को उचित सम्मान दिया गया। सभी गुरु भक्तों ने आपश्री की इस उपलब्धि पर इसे पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के प्रति दिये गये सम्मान के रुप में देखा जा रहा है।**

श्री सम्मेद शिखरजी महातीर्थ की ओर प्रयाण करते हुए मार्ग में आने वाले श्री संघों में अनेक शासन प्रभावना के कार्य आपश्री ने सम्पन्न किये। 11 मार्च को सतना श्रीसंघ में आपश्री की महामांगलिक का वृहत्त स्तर का भव्य आयोजन हुआ, इसके पूर्व मुनिराज श्री कीर्तिरत्नसागरजी म.सा. के नूतन दीक्षित सुशिष्य बाल मुनिश्री देवर्धिरत्न सागरजी म.सा.की बड़ी दीक्षा का आयोजन छतरपुर श्री संघ में किया गया। इधर पूज्यश्री के सुशिष्य मुनिश्री उदयरत्नसागर और उत्तमरत्नसागरजी म.सा. का चार्तुमास श्री नवरत्नधाम पालीताना में घोषित हुआ है। मुनिश्री तीर्थरत्नसागरजी म.सा. फागुणी तेरस पर पालीताना में ही विराजित है। मुनिश्री कीर्तिरत्नसागरजी आपश्रीजी के साथ श्री सम्मेद शिखरजी की यात्रा में साथ ही है।जिन शासन की अद्भूत भक्ति के साथ गुरुदेवश्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा की पाट परम्परा को उज्जवलता प्रदान करने का कार्य जो कार्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के द्वारा संयम जीवन में किया जा रहा है वह उसकी तुलना में करना आसान नहीं और न ही शब्दों से उसे बंधा जा सकता है। पूज्य युवाचार्यश्री का पुण्यबल और पुण्य का उदय होने के साथ यह निश्चित है कि पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा देह त्याग करने के बाद आपका भरपूर आर्शीवाद युवा आचार्य भगवंत को प्राप्त हो रहा है। सुवासरा में संयम बालमुनि बने श्री सिद्ध ऋषिरत्न सागरजी म.सा. और सैलाना में दिव्यांश से बालमुनि बने श्री देवर्धिरत्नसागर म.सा. से जितना नवरत्न गुरुकुल श्रमण समर्थ बना है उतना ही सागर समुदाय श्रमण प्रधान बना है। यह सब कुछ पूज्य जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी महाराजा की पुण्य समृद्धि है। क्रियाशील जैनाचार्य मालवा के आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा अपने प्रभाव पुण्य और पवित्राता से शासन प्रभावक कार्य से यादगार मिसाल बनते जा रहे हैं। युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागरसूरीजी महाराजा परमात्मा श्री वीर प्रभु के शासन की अभिवृद्धि के लिये अपने सम्पूर्ण पुण्यबल का सुनियोजित उपयोग कर

स्वयं और आपश्री ने गुरुकुल के युवा मुनिपुंग न जिन शासन की भरपूर प्रभावना कर देश भर में जैनत्व का नया इतिहास रच दिया हैं। युवा श्रमण भगवंतों ने अद्भूत शासन भक्तिकर युवा और वरिष्ठधर्मिष्ठों को आकृषित कर जैनत्व का सम्मान किया पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरसागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल ने श्री वीरप्रभु के शासन को उज्जवल बनाने के लिये वर्तमानकाल में जैनत्व का शंखनाद कर रहे है। पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल ने डंका बजा दिया है। श्री वीर प्रभु की पाट परम्परा में अपना योगदान देने के लिये बाल संयमी गुरुकुल से निरतंर जुड रहे है। 35 कल्याणक भूमि के अध्यक्ष श्री कमलसिंहजी रामपुरिया कोलकत्ता की पूज्यश्री से आग्रहभरी विनंती पर विश्वविख्यात महातीर्थ श्री सम्मेदशिखरजी के अधिष्ठायक देव श्री भौमियाजी मंदिर में प्रतिष्ठा 21 अप्रेल को निश्चित हुई है 15 से 23 अप्रेल तक चैत्र नवपद ओली का आयोजन भी होगा। श्री भौमियाजी मंदिर में प्रतिष्ठा सम्पन्न कर आपका विहार राजस्थान जयपुर में चार्तुमास के लिये होगा होगा।

श्री शांतिसूरी गुरु मंदिर में ध्वजारोहण

हैदराबाद- श्री चैतन्यपुरी स्थित श्री शांतिसूरीजी महाराजा के गुरु मंदिर की ध्वजारोहण का आयोजन शासन रत्न श्री मनोजकुमारजी हरण की प्रेरणा से दिनांक 21 मार्च को सम्पन्न हुआ। इस प्रसंग पर 108 जोड़े के साथ गुरु महापूजन 18 अभिषेक का आयोजन किया गया।

अनुयोगाचार्यश्री की 72 वीं जन्म जयंति मनाई

मातमोर- शिवपुर महातीर्थ के संस्थापक अनुयोगाचार्यश्री वीररत्न विजयजी म.सा. का 72 वां जन्म दिन पूज्य साध्वीवर्या श्री विजयप्रभा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा-4 की निश्रा में मनाया गया। दिनांक 12 मार्च को आयोजित महोत्सव में गुणानुवाद सभा श्री मणिभद्र महापूजन, स्वामी वात्सल्य का आयोजन हुआ।

सराक क्षेत्र में मंदिरजी का शिलान्यास

शंखेश्वरपुरम्- पुरुलिया जिले बंगाल के झांवड़ा में श्री आदिनाथ प्रभु के जिनालय का भूमि पूजन खात मुर्हूत और शिलान्यास का आयोजन दिनांक 3 एवं 4 अप्रेल को सम्पन्न हुआ। पूज्य गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री मुक्तिप्रभ सूरीजी एवं आचार्यदेव श्री डॉ. विनीत प्रभु सूरीजी आदि ठाणा की निश्रा में यह कार्यक्रम हुआ इसके साथ पुरुलिया जिले के तद्ग्राम में जिनमंदिर एवं उपाश्रयों का भूमि पूजन, खात मुर्हूत, शिलान्यास दिनांक 29 मार्च तथा 1 से 4 अप्रेल के मध्य सम्पन्न हुआ।

चैन्नई में छः गांव फागण फेरी

चैन्नई- भंसाली परिवार के द्वारा मुख्य लाभ लेकर छः गांव फागण फेरी का आयोजन एस.पी.आर. सिटी के प्रांगण में किया गया। पूज्यपाद आचार्य देवेश गच्छाधिपति श्री विज्ञानप्रभ सूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा की निश्रा में दिनांक 23 मार्च को यह आयोजन सम्पन्न हुआ।

श्री सम्मेद शिखर पहाड़ पर प्रतिष्ठा

शिखारजी- श्री चन्द्रानंद स्वामीजी की टूंक की प्रतिष्ठा का आयोजन पूज्य आचार्य देवेश श्री प्रशमेशप्रभ सूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में श्रीमती संघवी पानीदेवी मोहनलालजी मुथा सोनवाड़िया रिलिजियस ट्रस्ट के सहयोग से किया गया। तच्छवाड़ में श्री शिखरजी के संघयात्रा का प्रवेश 12 मार्च को हुआ। 18 अभिषेक का आयोजन किया गया दिनांक 13 मार्च को चरणपादुका ध्वजादण्ड कलश की प्रतिष्ठा हुई।

श्री जीरावला तीर्थ में नवपद ओली आराधना

जीरावला- शाश्वती चैत्र नवपद ओलीजी आराधना का आयोजन पूज्यपाद आचार्य देवश्री रत्नाकर सूरीजी एवं श्री रत्नसंयमसूरीजी महाराजा की निश्रा में होने जा रहा है। दिनांक 15 से 23 अप्रेल तक होगी। दिनांक 24 अप्रेल को पारणा के साथ आराधना की पूर्णाहुति होगी। दिनांक 21 अप्रेल चैत्र सुदी 13 को परमात्मा श्री वीरप्रभु के जन्म कल्याणक पर भव्य रथयात्रा का आयोजन भी होगा। ओली आयोजक श्रीमती संघवी पानीदेवी मोहनलालजी मुथा सोनवाड़िया रिलिजियस ट्रस्टतथा मोहन मुथा एक्सपोर्ट चैन्नई परिवार है।

✻ जिसकी कमर टूट गयी है उसका प्रायः सब बल परिक्षीण हो जाता है। जिस पर ज्ञानी पुरुष के वचन रुप लाठी का प्रहार हुआ है उस पुरुष में उस प्रकार से संसार संबंधी बल क्षीण होता है ऐसा तीर्थकर कहते हैं।

आबु देववाड़ा में ध्वजारोहण होगा

देववाड़ा- सेठ श्री कल्याणजी परमानंदजी पेढ़ी के अंतर्गत श्री आबु देलवाड़ा के जिन मंदिर का ध्वजारोहण महोत्सव 8 से 10 जून तक त्रिदिवसीय महोत्सव के साथ मनाया जायेगा। दिनांक 8 जून को मंदिरजी का शुद्धिकरण तथा दिनांक 9 जून विमल वसही जिनालय का 18 अभिषेक रात्रि भक्ति तथा आबु देववाड़ा पर विशिष्ट आयोजन होगा। 10 जून को ध्वजा रोहण तथा सत्तर भेदी पूजन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति होगी।

आगामी चार्तुमास

औरंगाबाद- यहां चार्तुमास हेतु विराजित पूज्य मुनिश्री हंसबोधि विजयजी म.सा. का तथा तपस्वी श्री भद्रकीर्तिविजयजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास अहमदाबाद के शांतिनगर जैन संघ उस्मानपुरा में घोषित हुआ है। पूज्य पंन्यास श्री मनोभूषणविजयजी म.सा. का चार्तुमास भी यहीं होगा।

आ.श्री हंसरत्न विजय सूरीजी का चार्तुमास जोधपुर में

जोधपुर- जैन जगत में अनेक बड़ी तपस्या करनेवाले आचार्य भगवंत श्री हंसरत्न सूरीश्वरजी महाराजा का चार्तुमास जोधपुर में होने जा रहा है। दिनांक 17 मार्च को मुंबई के कांदिवली श्री संघ में जोधपुर से बड़ी संख्या में श्री संघ के श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में जोधपुर चार्तुमास की जय बुलाई गई। जून माह में पूज्यश्री जोधपुर पधारेंगे इसके साथ ही जैन संत श्री विश्वरत्नविजयजी के साथ अनंक संत श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक रत्नप्रभ भवन में चार्तुमास करेंगे।

मोहनखेड़ा में शाश्वत नवपद ओली

मोहनखेड़ा-श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ में सर्व विघ्न विनाशली चैत्रमास की शाश्वती नवपद ओली आराधना का आयोजन होने जा रहा है। पूज्य कोंकण केशरी आचार्यदेव श्री लखेन्द्रविजय सूरीजी महाराज आदि ठाणा साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में यह आयोजन होगा। नवदिवसीय आराधना 15 अप्रेल से 23 अप्रेल तक होगी। दिनांक 24 अप्रेल को आराधकों का पारणा सम्पन्न होगा। आराधना क्रिया विधान और निश्रा प्रदान करने के लिये पूज्यश्री का प्रवेश दिनांक 14 अप्रेल को होगा।

पंन्यास पदवी प्रदान की जायेगी

जलगांव-पद्मभूषण, राज प्रति बोधक पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसुंदर सूरीश्वरजी महाराजा के शिष्यरत्न सरल स्वभावी पू.आ. श्रीमद् विजय पद्मसुन्दर सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न पूज्य गणिवर्य श्री वात्सल्यसुंदर विजयजी म.सा. तथा पू. गणिवर्य श्री परार्थसुन्दर विजयजी म.सा. का पंन्यास पदवी प्रदान करने का भव्य आयोजन चैत्र सूद-7 सोमवार 15 अप्रेल को जलगांव में होने जा रहा है। पदवी प्रदान महोत्सव की तैयारी चल रही है।

ॐकार तीर्थ में फागण फेरी का आयोजन

बड़ेदरा- बड़ेदरा के निकट स्थित ॐकार तीर्थ में 23 मार्च को फागण फेरी का आयोजन किया गया। पूज्यपाद आचार्यदेव श्री पुण्यानंदसूरीजी महाराजा के द्वारा स्थापित तीर्थ की ध्वजा थी, 26 फरवरी को हुई।

राष्ट्रसंत का चार्तुमास श्री नाकोड़ा तीर्थ में

मुंबई- सागर समुदाय के वरिष्ठ संत जैनाचार्य श्री चन्द्राननसागर सूरीजी महाराजा के गुरुभक्तों का मिलन समारोह दिनांक 8 दिसंबर को चेम्बुर वेस्ट के श्री ऋषभदेव जैन मंदिर में आयोजित किया गया। श्री नाकोड़ा दर्शन परिवार ने आयोजित किया था। पूज्यश्री का आगामी चार्तुमास श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ महातीर्थ से निश्चित हुआ। आपश्री की निश्रा में मुंबई में चार प्रतिष्ठा महोत्सव होने के बाद आपश्री ने दिनांक 23 दिसंबर को राजस्थान की ओर विहार किया है। राजस्थान में आपश्री की निश्रा में पांच अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव होनेवाले है। मुंबई में आपश्री के वरद हस्ते 136 अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव हो चुके है।

श्री गिरीराज की 99 यात्रा शाश्वत परिवार के द्वारा

मुंबई- पूज्य आचार्य श्री आनंदवर्धनसूरीजी महाराजा एवं आचार्य श्री आत्मदर्शनसूरीजी महाराज की निश्रा में दादा की 99 यात्रा का आयोजन दिनांक 27 अप्रेल से आरम्भ होगा। बिदाई बहुमान दिनांक 30 मई को होगा।

गिरनार में चार्तुमास

गिरनार- पूज्य अध्यात्मयोगी श्री कलापूर्ण सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य पूज्य आचार्य भगवंत श्री पूर्णचन्द्र सूरीश्वरजी महाराज आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद का आगामी सामूहिक चार्तुमास श्री गिरनार महातीर्थ में होने जा रहा है। सामूहिक रुप से 500 आराधक का चार्तुमास 50 दिवस का होगा।

उज्जैन में शाश्वती चैत्र ओली आराधना गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी म.सा.की निश्रा में होगी

✻ चार्तुमास अहमदाबाद में।

उज्जैन- पूज्यपाद आचार्य देवेश मालव भूषण श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के प्रशिष्य पूज्यपाद गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागर जी म.सा.गणिवर्य श्री अक्षतरत्नसागर जी म.सा.आदि ठाणा श्रमण-श्रमणी वृंद की निश्रा में पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्नसागर सूरी जी महाराजा का 81 वां जन्मदिन देपालपुर में मनाया। यहां 25 से 28 मार्च तक आयोजित कार्यक्रम में परमात्मा के 18 अभिषेक हुए, 26 मार्च को तथा 27 मार्च को गोशाला में 56 भोग द्वारा जीवदया का आयोजन हुआ। रात्रि में गुरुभक्ति हुई। दिनांक 28 मार्च को भव्य गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया।

उज्जैन में श्री पाल मैयणा सुन्दरी की आराधना स्थली **श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी** में नवपद चैत्र ओली आराधना का आयोजन गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागर जी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में होने जा रहा है। दिनांक 14 अप्रेल को उत्तर पारणा के साथ आराधना दिनांक 15 से 23 अप्रेल तक होगी। दिनांक 24 अप्रेल को पारणा के साथ आराधना की पूर्णाहुति होगी। दिनांक 21 अप्रेल चैत्र सुदी 13 को परमात्मा श्री वीरप्रभु के जन्म कल्याणक पर भव्य रथयात्रा का आयोजन भी होगा। आराधना के लाभार्थी श्रीमती पार्वती बहन स्व. श्री भूरमलजी ओसवाल परिवार है। यहां से आपश्री का विहार झाबुआ की ओर होगा जहां आपश्री की महामांगलिक होगी। आपश्री का चार्तुमास अहमदाबाद में होने की संभवना है

आचार्यदेवश्री हंसरत्नसूरीश्वरजी महाराजा को 100 वें मासक्षमण का पारणा 300 साधु-साध्वी की निश्रा में हुआ

मुंबई- पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देव श्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराजा, पूज्य आचार्य श्री जगवल्लभ सूरीश्वरजी महाराजा आदि 300 साधु-साध्वीजी महाराज की अमृत निश्रा में महातपस्वी आत्मन् आचार्यदेव श्री हंसरत्न सूरीश्वरजी म.सा. को 100 वें मासक्षमण की तपस्या का पारणा दिनांक 31 मार्च को भव्य महोत्सव पूर्वक हुआ। इस अवसर पर विशिष्ट तपावली का आयोजन हुआ। स्मरण रहे पूज्यश्री का आगामी चार्तुमास जोधपुर में होने जा रहा है।

ओली आराधना

मंदसौर- श्री वही पार्श्वनाथ प्राचीन तीर्थ में शाश्वती नवपद ओली आराधना का आयोजन होने जा रहा है। पूज्य साध्वीवर्या श्री शुद्धिप्रसन्ना श्रीजी, प्रवृद्धि श्रीजी, श्री समृद्धिश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में नवपद चैत्र ओलीजी का उत्तर पारणा 14 अप्रेल को होगा। 15 से 23 अप्रेल तक नव दिवसीय आराधना तथा 24 अप्रेल को पारणा होगा। ओली आराधना का सम्पूर्ण लाभ साध्वीश्रीजी म.सा. की संसारी बहन परिवार के द्वारा लिया गया है।

आयड़ में शाश्वती ओली आराधना होगी

उदयपुर- तपागच्छ उद्गम स्थली श्री आयड़ तीर्थ में शाश्वती चैत्र नवपद ओली आराधना का आयोजन पूज्यपाद आचार्य देव श्री पद्मभूषण सूरीजी महाराजा आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी की अमृत निश्रा में होगा। ओली के मुख्य लाभार्थी श्रीमती चौसाबाई शेषमलजी पोरवाल परिवार, बैंगलोर है।

श्री नाकोड़ा तीर्थ में शिविर और 99 यात्रा होगी

नाकोड़ा तीर्थ- सागर समुदाय के आचार्यदेव श्री नयचंद्रसागर सूरीजी के सुशिष्य मुनि श्री सुमतिचंद्रसागरजी, मुनि श्री शीतलचंद्रसागरजी म.सा. की निश्रा में नवयुवकों के लिये 15 दिवसीय शिविर का आयोजन होने जा रहा है। इसके अंतर्गत 99 यात्रा का आयोजन 12 मई से 26 मई तक होगा। माल 26 मई को होगी। 99 यात्रा श्री नाकोड़ा तीर्थ में 500 सीढ़ि के ऊपर बने जिनालय की होगी। आयोजक गजानो परिवार मालवाड़ा है।

कांदिवली में श्रमणी स्थिरवास बनेगा

मुंबई- चित्त प्रसन्न उपवन कांदिवली श्रमणी स्थिरवास भवन का शिलान्यास पूज्य आचार्य श्री देवमूर्ति सूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा की निश्रा में दिनांक 14 मार्च को सम्पन्न हुआ। इस प्रसंग पर जिनालय की दो शिला तथा उपाश्रय की एक शिला की स्थापना का आदेश दिया गया। तीनों शिला का आदेश दिनांक 10 मार्च को गीताजंली जैन संघ बोरिवली वेस्ट में दिया गया।

मालव मार्तण्ड जैनाचार्य श्री मुक्तिसागरसूरीजी उज्जैन में 40 वर्षीतपाराधकों के पारणा महोत्सव में निश्रा प्रदान करेंगें

✻ 7 मई को मंगल प्रवेश के साथ 8 मई से 10 मई त्रिदिवसीय महोत्सव मनेगा।✻ चार्तुमास प्रवेश इन्दौर में 14 जुलाई को होगा।

उज्जैन- गच्छाधिपति पूज्यपाद आचार्य देवेश वचनसिद्ध श्री नरदेव सागर सूरीजी महाराज की मंगल प्रेरणा और मार्गदर्शन में विगत वर्ष श्री ऋषभ देव छगनीराम पेढ़ी, श्री सिद्ध चक्राराधन तीर्थ पर 120 वर्षीतप आराधकों का सामुहिक वर्षीतप आरम्भ हुआ था सभी आराधकों की आराधना पूज्यश्री के आर्शीवाद से निर्विघ्न सम्पन्नता की ओर आगे बढ़ रही है। वर्षीतप का पारणा अक्षय तृतीय दिनांक 10 मई शुक्रवार को आ रहा है। लगभग40 आराधकों का पारणा महोत्सव का आयोजन पंचान्हिका महोत्सव के साथ 3-7 से 10 मई तक श्री आलौकिक पार्श्वनाथ महातीर्थ हासामपुरा में आयोजित किया जायेगा,पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री अभ्युदय सागरजी महाराज के सुशिष्य पूज्य आचार्यदेव श्रीजैनाचार्य श्री मुक्ति सागर सूरीजी एवं आचार्य देव श्री अंचल मुक्ति सागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा ने पारणा समिति के आग्रह विनंती पर निश्रा प्रदान करने के लिये स्वीकृति प्रदान कर दी है पूज्यश्री के साथ साध्वीवर्या दमिताश्रीजी, चारुधर्मा श्रीजी, साध्वीवर्या मुक्तिरेखा श्रीजी, शीलरेखाश्री सम्यगदर्शनाश्रीजी आदि ठाणा की वर्षीतप पारणा महोत्सव में निश्रा रहेगी। आसपास विराजमान साधु-साध्वी भगवंतों से पधारने की विनंती समिति के द्वारा की जा रही। महोत्सव के अंतर्गत पूज्यश्री और साध्वीमंडल आदि ठाणा का मंगल प्रवेश दिनांक 7 मई को कांच के मंदिर से श्री ऋषभदेवजी छगनीराम पेढ़ी पर होगा जहां सामायिक प्रवचन, प्रभावना होगी। दिनांक 8 मई को श्री सिद्ध गिरिराज का वधामणा एवं भावयात्रा पूज्यश्री की निश्रा में संगीत के साथ होगी। रात्रि भक्ति का आयोजन होगा। दिनांक 9 मई को प्रातः पूज्यश्री के प्रवचन होगें इसके ब ाद दोपहर 12.39 बजे विजय मुर्हूत में श्री सिद्धचक्र महापूजन होगी। रात्रि में 8 बजे से श्री अवंति पार्श्वनाथ मंदिरजी परिसर में मुंबई के संगीतकार श्री प्रतिक गेमावत की परमात्म भक्ति का भव्य आयोजन होगा। परमात्मा की भव्य अंगरचना और जिन मंदिर को फूलों से सजाया जायेगा। दिनांक 10 मई को श्री अलौकिक पार्श्वनाथ महातीर्थ के पास से वर्षीतप आराधकों का भव्य वरघोड़ेका आयोजन पूज्यश्री और साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में किया जायेगा। श्री अलौकिक पार्श्वनाथ तीर्थ परिसर में पूज्यश्री की निश्रा में पच्चखाण के बाद श्री श्रेयांस राजा के द्वारा सभी आराधकों को गन्ने के रस से पारणा करवाया जावेगा। साधर्मिक भक्ति का आयोजन होगा। पारणा महोत्सव के लिये तैयारियां आरंभ हो गई है। पारणा महोत्सव समिति के अध्यक्ष शेखर कोचर एवं संयोजक सचिव डॉ. सुभाष जैन आगमोध्दारक है।

इसके स ाथ ही आपश्री की अमृत निश्रामें श्री अभ्युदयपुरम् तीर्थ में उपधान तप दिनांक 14 अप्रेल 2024 को प्रथम तथा दिनांक 16 अप्रेल को द्वितीय प्रवेश होगा। उपधान तप का वरघोड़ा 1 जून को आयोजित होगा। मालारोपण विधान दिनांक 2 जून को सम्पन्न होगा। श्रीमती ज्योति बहन नलिनभाई दलाल परिवार पूना सम्पूर्ण लाभार्थी है। **आपका आगामी चातुर्मास श्री अर्बुजगिरी जैन श्वेतांबर उपाश्रय इन्दौर में होने की घोषणा की गई है चार्तुमासिक प्रवेश 14 जुलाई को होगा।**

श्री अंतरिक्ष तीर्थ में नवपद ओलीजी

अंतरिक्ष तीर्थ- अंतरिक्ष तीर्थ में शाश्वत नवपद ओली की आराधना का आयोजन होने जा रहा है। दिनांक 15 से 23 अप्रेल तक होने वाली आयंबिल तपाराधना का लाभ शाह परिवार ने लिया है। श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ महाराज संस्थान शिरपुर तथा गिरनार भक्ति युवा समिति बड़ोदरा आयोजक है।

नूतन आचार्यश्री का चार्तुमास पूना में

पूना-पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य नूतन आचार्य देवेश वैराग्यरत्नसागर सूरीश्वर जी महाराज का 2024 का चार्तुमास पूना में होने जा रहा है। आपका चार्तुमास सोमवार पेठ पूना में निश्चित हुआ है। आप अभी मुंबई में विराजमान है।

अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक की प्रेरणा मार्गदर्शन में बंधु त्रिपुटी मुनिश्री की निश्रा में प्रतिष्ठा के आयोजन

✻ चार्तुमास हेतु गदक कर्नाटक की ओर विहार होगा।

सीतामऊ- सीतामऊ-जैनाचार्य अपूर्व मंगल रत्नसागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल के बंधु त्रिपुटी मुनि प्रवर श्री आगम प्रश्म- व्रजरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में मालवा राजस्थान में प्रतिष्ठा की बाहर आई हुई है।सुखेड़ा में 4 अप्रेल, गौतमपुरा में 15 अप्रेल, सीतामऊ जहाज मंदिर में 26 अप्रेल तथा सीतामऊ के गांव मंदिर में 28 अप्रेल को प्रतिष्ठा आयोजन सम्पन्न होंगे। इस हेतु अंतराष्ट्रीय जैन विधि कारक शासनरत्न श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन प्रेरणा से श्री सिद्धाचलधाम प्रतिष्ठा जाजम 4 मार्च को तथा दिनांक 16 मार्च को श्री केशरिया आदिनाथ जिनालय की प्रतिष्ठा हेतु जाजम हुई। सभी चढ़ावे अच्छे हुए। अप्रेल माह की प्रतिष्ठा के बाद मुनि भगवंतों का मुनि भगवंतों का यहां से गदक कर्नाटक की ओर आपका विहार होगा जहां आपका आगामी चार्तुमास निश्चित हुआ है।

प्रतिष्ठाचार्य श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीजी म.सा. के आगामी कार्यक्रम

✻ श्री शंखेश्वर महातीर्थ में श्री कुमार पाल चैत्र मास ओली समिति, चैन्नई द्वारा1100 से अधिक आराधकों के साथ सामुदायिक ओली आराधना प्रारंभ दिनांक 15 से तथा समाप्त 23 अप्रेल2024 को होगी। ✻ श्री शंखेश्वर महातीर्थ में श्री पार्श्व-भैरव-सुशील धाम के परिसर में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ चौमुख जिन मंदिर, श्री गौतम गुरु मंदिर, श्री नाकोड़ा भैरवजी का चौमुखा मंदिर का खनन मुर्हूत एवं शिलान्यास मंगल मुर्हूत खानन मुर्हूत16अप्रेल 2024 को, शिलान्यास मुर्हूत18अप्रेल को होगा। **आपका आगामी चार्तुमास श्री शिवगंज राज. के जैन श्वेतांबर उपाश्रय में होने की घोषणा हुई है।**

नूतन साध्वीश्री ज्ञानार्षिनिधिजी म.सा. की बड़ी दीक्षा हुई

उज्जैन- श्री ऋषभदेवजी छगनी राम पेढ़ी पर दिनांक 7 मार्च को गणिवर्यश्री की निश्रा में बड़नगर में दीक्षित पूज्य साध्वीश्री ज्ञानार्षिनिधि श्रीजी म.सा. की बड़ी दीक्षा का आयोजन किया गया। इस प्रसंग पर साध्वीश्री दमिताश्रीजी, चारुधर्मा श्रीजी, श्री सम्यग्दर्शना श्रीजी, श्रीअर्चितगुणा श्रीजी ,मुक्तिरेखा श्रीजी आदि ठाणा की मंगलमय उपस्थिति रही। साध्वी वर्या श्री अर्चितगुणा श्रीजी म.सा. काविहार उज्जैन अहमदाबाद की ओर हुआ है।

जोधपुर में चार्तुमास

जोधपुर- श्री भेरुबाग पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर तीर्थ में पूज्य आचार्यदेव श्री तत्वदर्शन सूरीश्वरजी महाराज का आगामी चार्तुमास निश्चित हुआ है। आपश्री कलापूर्ण सूरीश्वरजी म.सा. के प्रशिष्य है।

आगामी चार्तुमास की जय बोलाई गई

मुंबई- यहां के विलेपार्ले श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ की आग्रहभरी विनंती पर पूज्य आचार्य देवेश श्री अक्षयबोधि सूरीजी तथा आचार्यदेव श्री महा बोधि सूरीजी महाराज का आगामी वि.सं. 2080 ईस्वी सन् 2024 का चार्तुमास विलेपार्ले श्री संघ में करेंगे। संघ में चार्तुमास की घोषणा से हर्ष छा गया।

पालीताना में चार्तुमास

पालीताना- सनतर भवन पालीताना में 2024 का चार्तुमास होने जा रहा है। पूज्य आचार्यश्री आनंद वर्धना सूरीजी एवं श्री आत्मदर्शन सूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में चार्तुमास दिनांक 20 जुलाई से आरंभ होगा तथा समापन 8 सितंबर को होगा।

राजगढ़ में चार्तुमास होगा

राजगढ़- जिनागमसेवी पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देव श्री दौलत सागर सूरीजी महाराज साहब की आज्ञावृत्ति पूज्य साध्वी श्री हेमेन्द्र श्रीजी महाराज की शिष्या पूज्यश्री चारुव्रता श्रीजी महाराज की शिष्या पूज्य नम्रवृता श्रीजी महाराज श्री मग्नवृता श्रीजी महाराज मीतवृता श्रीजी महाराज आदि ठाणा-3 का आगामी चार्तुमास राजगढ़ निर्धारित हुआ है।

अयोध्यापुरम् महातीर्थ में ओली आराधना का आयोजन शासन प्रभावक जैनाचार्य श्री अशोकसागरसूरीजी की निश्रा में

अयोध्यापुरम्- बंधु बेलड़ी आचार्य देव श्री जिनचंद्रसागर सूरीश्वरजी महाराजा की पुण्य स्मृति में यहां चैत्र नवपद ओली आराधना का भव्य आयोजन होने जा रहा है। पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री अशोकसागर सूरीजी महाराजा के साथ आचार्यदेव श्री हेमचंद्र सागरसूरीजी, जैनाचार्य श्री पूर्णचंद्र सूरीजी, श्री अक्षयचंद्रसागर सूरीजी, श्री सौम्यचंद्रसागरसूरीजी, श्री विवेक चंद्रसागर सूरीजी, श्री लब्धिचंद्रसागर सूरीजी, श्री प्रसन्नचंद्रसागरसूरीजी, श्री विरागचंद्रसागरसूरीजी, श्री अपूर्व चन्द्रसागरसूरीजी आदि विशाल संख्या में श्रमण-श्रमणीवृंद की निश्रा में ओली आराधना होगी।दिनांक 14 अप्रेल को उत्तर पारणा के साथ आराधना दिनांक 15 से 23 अप्रेल तक होगी। दिनांक 24 अप्रेल को पारणा के साथ आराधना की पूर्णाहुति होगी। दिनांक 21 अप्रेल चैत्र सुदी 13 को परमात्मा श्री वीरप्रभु के जन्म कल्याणक पर भव्य रथयात्रा का आयोजन भी होगा।लाभार्थी श्रीमती राजन बहन कांतिलाल चौहान परिवार है।

तपागच्छीय प्रवर समिति के कार्यवाहक पूज्य गच्छाधिपतिश्री का चार्तुमास मंडार (राज.) में

✻ सतना में अंजन प्रतिष्ठा करावद वही पार्श्वनाथ पधारेंगे।

सतना- तपागच्छीय प्रवर समिति कार्यवाहक पूज्य गच्छाधिपति आचार्य भगवंत विजय श्री अभयदेव सूरीश्वर जी म.सा. एवं उनके शिष्यरत्न मार्ग दर्शक प.पू.आचार्य भगवंत श्री विजय मोक्षरत्न सूरीजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणीवृंद मालवा का विहार चल रहा है। दिनांक 6 से 25 अप्रेल पूज्यश्री सतना में अंजन-प्रतिष्ठा का भव्य कार्यक्रम सम्पन्न होगा। एवं भवन का उद्घाटन, चैत्र नवपद आयंबिल ओली का कार्यक्रम 24 अप्रेल तक सतना में विराजमान रहेंगे। दिनांक 9 अप्रेल को आपश्री की महामांगलिक होगी 9 मई की बेसते महिने की महामांगलिक सागर के आसपास म.प्र. में होगी। पूज्य गुरुदेव का अभय अमृत महोत्सव 7 जून को बेसते महिने के महामांगलिक साथ में अभिनव समेत शिखरजी वही तीर्थ मंदसौर के पास म.प्र. में बड़ी धूमधाम से मनाया जायेगा। **आपश्री का चातुमार्सिक प्रवेश आषाढ़ सुदी-8 रविवार दिनांक 14 जुलाई को श्री मंडार जैन श्वेतांबर श्री संघ पोस्ट मंडार तहसील रेवदर जिला सिरोही मंडार (राज.) में होगा।**

99 यात्रा का आयोजन होगा

पालीताना- आरोहण के नाम से नव्वांणु यात्रा का आयोजन श्री सिद्धगिरी महातीर्थ में होने जा रहा है। दिनांक 15 अप्रेल से यात्रा आचार्य श्री विजय संयम बोधि सूरीजी महाराजा आदि ठाणा की निश्रा में होगा।

विरति उपधान तप का आयोजन

पालीताना- पूज्य आचार्यदेव श्री ललितप्रभसूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में उपधान तप दिसंबर में आरंभ हुआ। उपधान तप का मालारोपण दिनांक 16 फरवरी 24 को हुआ। उपधान का आयोजन श्री पन्नारुपा धर्मशाला में हुआ।

लक्ष्यवेध उपधान तप

चैन्नई- पूज्य आचार्य देवेश श्री अभयशेखर सूरीजी महाराज आदि ठाणा की अमृत निश्रा में वाराही मंडण श्री शांतिनाथ प्रभु की छत्रछाया में उपधान तप का आयोजन कोलाट हित के दक्षिण भारत में प्रथम बार होने जा रहा है। उपधान में प्रथम प्रवेश दिनांक 16 अप्रेल को होगा। उपधान मोक्षमाल दिनांक 5 जून को होगी।

श्री शत्रुंजय गिरिराज की नव्वांणु यात्रा

पालीताना- पूज्यपाद आचार्य श्री विजयसंयमबोधि सूरीजी म.सा.आदि श्रमण-श्रमणीवृंद की निश्रा में श्री शत्रुंजय गिरिराज की नव्वांणु यात्रा का आयोजन होने जा रहा है। यह यात्रा दिनांक 15 अप्रेल 2024 सोमवार से आरंभ होगी। लाभार्थी हंसा बहन मुलाणी परिवार है।

आचार्य श्री महासेन सूरीजी का चार्तमास

प.पू. कविकुलकीरिट आ.श्री लब्धिसूरीजी म. के दिव्य साम्राज्य पू. शंखेश्वर प्रेमी आ. महासेनसूरीजीआदि साध्वी विरतिपूर्णाश्री आदि ठाण का वि.सं. 2080 का चार्तुमास बैंगलोर-जयनगर संघ में जय बुलाई गई।

सारे देश में मालव भूषण सूरीजी महाराजा 81 वां जन्मोत्सव जीवदया-अनुकम्पा सद्कार्यों के साथ बनाया

✻ जन्मोत्सव पर त्रिदिवसीय ✻ प्रेरणा मार्गदर्शन जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी की है।

उज्जैन- मालवा के भगवान के रुप में जिन्हें मान्यता गुरुभक्तों ने दी है ऐसे गुरुदेव पूज्यपाद मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा का 81 वां जन्मोत्सव त्रिदिवसीय महोत्सव के रुप में दिनांक 28 से 30 मार्च तक मनाया जायेगा। पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा की और प्रेरणा और मार्गदर्शन में गुरुदेव के जन्मोत्सव पर जीवदया अनुकम्पा दान के साथ सदकार्यो से मनाया गया साथ ही श्री संघ में पूज्यश्री की गुणानुवाद सभा का आयोजन भी भारतभर के जैन श्री संघों में किया गया। चैत्र वदी-3 दिनांक 28 मार्च को जन्म का शुभ दिन जिनालय में स्नात्र पूजन-आंगी भक्ति के आयोजन भी हुवे।

मोक्षदायिनी शाश्वत नवपद ओली गणिवर्य आनंदचंद्रसागरजी की श्री नागेश्वर तीर्थ में निश्रा होगी

✻ 14 से 24 अप्रेल तक महोत्सव मनेगा।

नागेश्वर- अनेक साधु-साध्वी की दीक्षा स्थलीय बड़नगर में एक बार फिर से दीक्षा की शहनाई बजी। मेहता परिवार की मुमुक्षु बहन कुमारी सलोनी का भगवती प्रवज्या हुई यहां उज्ञैन संघ की विनंती पर पूज्य साध्वीवर्या श्री अमितगुण श्रीजी म.सा. का चार्तुमास उज्जैन श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर होने की घोषणा हुई। पूज्य गणिवर्य श्री की निश्रा में विश्व विख्यात श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ में चैत्र मास की शाश्वती नवपद ओली की आराधना का आयोजन दिनांक 14 से 24 अप्रेल तक महोत्सव पूर्वक होगा। ओलीजी के आयोजक बदासिया परिवार सूरत है। ओलीजी के मध्य में वर्तमान तीर्थाधिपति प्रभुवीर के जन्म कल्याणक महोत्सव भव्य रथयात्रा का आयोजन भी होगा।

दयालकिला से नव्वांणु यात्रा

कांकरोली- श्री ऋषभदेव भगवान की पेढ़ी कांकरोली में दयाल शाह किला से नव्वांणु यात्रा का आयोजन दिनांक 19 मई से 9 जून तक होने जा रहा है। पूज्य आचार्यदेव श्री निपुणरत्नसागर सूरीजी महाराजा आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में यह आयोजन होगा। रोज पांच यात्रा करने के लिये सिर्फ 250 सीढ़ियां की चढ़ाई करना है। गर्मी में अपने छोटे बच्चों के साथ तीर्थ और प्रकृति का आनन्द लेने का यह स्वर्णिम अवसर है।

जाजम का मुर्हूत 28 अप्रेल को

मुंबई- श्री 108 पार्श्वनाथ में समाहित श्री 108 सेसली पार्श्वनाथ जिनालय की प्रतिष्ठा निमित्त प्रथम चरण के चढ़ावों की जाजम का मुर्हूत पंजाब केसरी आचार्यश्री वल्लभ सूरीश्वरजी समुदाय गच्छाधिपति शांति दूत प.पू. आचार्य भगवंत श्री नित्यानंद सूरीश्वरजी म.सा. के प्रथम शिष्य आचार्यश्री चिदानंद सूरीश्वरजी म.सा. द्वारा रानी गांव में प्रतिष्ठा महोत्सव के पावन अवसर पर रानी गांव में दिनांक 20 फरवरी को अत्यंत हर्षोल्लास भरे वातावरण में वैशाख सुद-4, रविवार दिनांक 28 अप्रेल का मुर्हूत प्रदान किया।

श्री सिद्धाचल महातीर्थ में 99 यात्रा

पालीताना- शाश्वत तीर्थराज श्री सिद्धाचल महातीर्थ में 99 यात्रा का आयोजन सिर्फ श्रावक के लिये दिनांक 15 अप्रेल से होने जा रहा है। यह यात्रा पूज्य आचार्यदेवश्री संयमबोधि सूरीश्वरजी महाराज आदि साधु-साध्वी ठाणा की निश्रा में होगी। सुनतर भवन पालीताना से यात्रा आरंभ होगी।

उदयपुर में गुरु वधावणा का आयोजन हुआ

उदयपुर- न्यू भूयालपुरा में राष्ट्र संत श्री चन्द्राननसागर सूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा की निश्रा में गुरु वधावणा के साथ मातृ-पित् वंदना का भव्य आयोजन किया गया। यह आयोजन दिनांक 21 मार्च को सम्पन्न हुआ। रात्रि भक्ति का आयोजन भी किया गया। मेहता परिवार ने लाभ लिया।

श्री सिद्धाचल गिरिराज की भावयात्रा करवाकर वागड़ नरेश ने सुखेड़ में प्रतिष्ठा सम्पन्न करवाई

✻ चार्तुमास श्री सिद्धगिरीराज की छत्रछाया में होगा।
✻ मालवा के सुखेड़ में प्रतिष्ठा के आगमन होगा।

शिवगढ़- सूरत-पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य देवेश वागड़ नरेश श्री मृदुरत्न सागरसूरीजी म. सा. पू. मुनिश्री पद्म रत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा म में शिवगढ़ में फागण फेरी के दिन दिनांक 23 मार्च को श्री सिद्धाचल गिरीराज की जोरदार भावयात्रा करवाई। श्री संघ के द्वारा 9 पाल भी लगाई गई थी। यहां से आपश्री का विहार सुखेड़ा की ओर हुआ यहां से आपश्री का विहार मालवा के सुखेड़ा के लिये हुआ है जहां आपश्री की निश्रा में अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन होने जा रहा है। दिनांक 4 अप्रेल को यहां प्रतिष्ठा होगी। यहां से आपश्री का विहार मोटागांव, बांसवाड़ा (राज.) के लिये होगा जहां श्री नाकोड़ा भैरव मंदिर की प्रतिष्ठा दिनांक 21 अप्रेल को होगी। श्री सिद्धक्षेत्र शत्रुंजय महातीर्थ पालीताना में आपश्री का आगामी चार्तुमास होने जा रहा है जहां चार्तुमासिक प्रवेश 19 जुलाई को होगा। **चार्तुमास के लाभार्थी श्रीमती सम्पत्तबाई बापूलालजी चौधरी परिवार जीरण (नीमचवाले) है। चार्तुमास साबरमती धर्मशाला में होगा।**

संयमी मुस्कान सेठिया को युगलबंधु मालव जैनाचार्य ने रजोहरण प्रदान कर श्री वीरप्रभु की श्रमण परंपरा को आगे बढ़ाया

✻ चार्तुमास हुगली में होगा

मोहन बड़ोदिया- साध्वी श्री अक्षय ज्योतिश्रीजी म.सा. के चरणों का शिष्यत्व ग्रहण कर परमात्मा श्री वीरप्रभु की श्रमण परम्परा को आगे बढ़ाने का दायित्व ग्रहण कर प्रभुवीर के परिवार में सम्मिलित होकर कुमारी मुस्कान सेठिया जिनशासन की प्रभावना करेगी।जैनाचार्य वाणी के जादूगर पूज्य पाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्न सागर सूरीजी महाराजआयंबिल आराधक जैनाचार्यश्री चन्द्ररत्न सागर जी म.सा. को आयंबिल तप की 268 वीं ओलीजी आराधक मुनिश्रीचैत्यरत्न सागर जी मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनिश्री पवित्र रत्नसागरजी म.सा. मुनि श्री गोयमसागरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में 22 से 26 मार्च तक प्रवज्या महोत्सव सम्पन्न हुआ। दिनांक 22 मार्च को गुरुदेव के प्रवेश के साथ दीक्षा महोत्सव की विधिवत शुरुवात हुई। दिनांक 24 मार्च को भव्य स्नात्र महोत्सव का आयोजन हुआ। दिनांक 25 मार्च को दीक्षार्थी बहन के वस्त्र रंगने का आयोजन तथा श्री सिद्धचक्र महापूजन हुई। दिनांक 26 मार्च को मोहन बड़ोदिया में यादगार वर्षीदान वरघोड़ा निकला। रात्रि में अंतिम बिदाई का आयोजन हुआ। दिनांक 27 मार्च को प्रातःकाल दीक्षार्थी संयम ग्रहण करने के लिये दीक्षा मंडप आगमन हुआ। यहां आचार्य भगवंत ने शुभ लग्नांश बेला में दीक्षा क्रिया विधि आरंभ करवाई और मुर्हूत आने पर रजोहरण कु. मुस्कान सेठिया के करकमलों में सौंपा। 28 मार्च को नूतन दीक्षार्थी के पगलिये हुए। इसके बाद **आपश्री का विहार हुगली कर्नाटक की ओर होगा जहां आपश्री का चार्तुमास होगा।**

आचार्यश्री मृदुरत्नसागर सूरीजी के आगामी कार्यक्रम

✻ 11 मार्च बेसता महिना की महामांगलिक,लीमड़ी जैन श्री संघ में। ✻ 23-24 मार्च, फागण सुद-13-14 की आराधना शीवगम। ✻ 23 मार्च से 4 अप्रेल अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव-सुखोड़ा✻ 9 अप्रेल बेसता महिना की महामांगलिक-घाटोल ✻ 18 अप्रेल से 22 अप्रेल प्रतिष्ठा महोत्सव-मोटागांव। ✻ 9 मई, बेसता महिना की महामांगलिक-उंठई (बड़नगर)। ✻ 12 से 13 मई,सीपोर से तारंगा तीर्थ का पैदल संघ (पूज्यश्री के गांव से)।✻ 18, 20 मई, दो मंदिर में ध्वजा महोत्सव-विसनगर। ✻ 7 जून बेसता महिना की महामांगलिक-अहमदाबाद। ✻ 14 जून पू. आ.श्री की 41वीं दीक्षा तिथि,अर्हत् महापूजन-अहमदाबाद।✻ 6 से 7 जून बेसता महिना की महामांगलिक-भावनगर। ✻ 19 जून चार्तुमास प्रवेश साबरमती धर्मशाला में पालीताना।

श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ महातीर्थ में चार्तुमास

नाकोड़ा- राष्ट्रसंत पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री चन्द्राननसागर सूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा की निश्रा में चार्तुमास का भव्य आयोजन होने जा रहा है। श्री नाकोड़ा दर्शन चार्तुमास 2024 के अंतर्गत चार्तुमास करनेवाले धर्मिष्ठों से फार्म भरवाये जा रहे हैं। सम्पर्क सूत्र-9821154051

संयम जीवन स्वीकार का पराक्रम

मुंबई- वर्धमान संस्कारधाम मुलुंड एवं श्री सिमंधर जिन भक्ति मंडल से जुड़े हुए मुमुक्षु आत्मन् परमात्मा श्री प्रभुवीर के शासन की श्रमण परम्परा को आगे बढ़ाने के लिये तत्पर बने है। श्री जिगरभाई-श्रीमती किरण बहन एवं ध्वनि बहन जिनका विवाह 38 वर्ष पूर्व ही हुआ है। दिनांक 6 जून को सूरत में दीक्षित होने जा रहे है साथ ही बाल मुमुक्षु जिनयभाई की दीक्षा 24 जून को भुज में होने जा रही है। आगमोद्धारक परिवार को बहुत-बहुत अनुमोदना।

श्री आदिनाथ सोसायटी में ध्वजारोहण

पूना- क्रांतिकारी आचार्यदेव श्री विरागसागर सूरीश्वरजी महाराजा एवं साध्वीवर्या श्री सिद्धपूर्णा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में श्री आदिनाथ सोसायटी जिनमंदिर में 49 वीं ध्वजारोहण का त्रिदिवसीय आयोजन दिनांक 14 से 16 मार्च तक सम्पन्न हुआ। परमात्मा के 18 अभिषेक, शांतिस्नात्र महोत्सव तथा दिनांक 16 मार्च को ध्वजारोहण की क्रिया सम्पन्न हुई।

साध्वीश्री अमितगुणा श्रीजी का चार्तुमास उज्जैन में

उज्जैन- पूज्य साध्वीवर्या मातृ हृदया श्री अमितगुणा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री ऋषभदेवजी छगनीरामजी की पेढ़ी उज्जैन में होगा। विगत दिनों श्री संघ उज्जैन की विनंती पर बड़नगर में चार्तुमास की घोषणा हुई है।

भायंदर में उपधान तप

मुंबई- श्री पार्श्वप्रेम श्वेतांबर मूर्ति पूजक तपागच्छ संघ भायंदर वेस्ट के श्री सीमंधर स्वामी जिनालय परिसर में उपधान तप होने जा रहा है। पूज्य पंन्यास प्रवर श्री देवर्यकवल्लभ विजयजी म.सा. गणिवर्य आदि ठाणा की निश्रा में होने जा रहे उपधान तप में 12 से 45 वर्ष के आराधक सम्मिलित हो सकेंगे। अठारिया में प्रवेश 1 मई को तथा द्वितीय प्रवेश 3 मई को होगा। उपधान तप की माल 2 जून को होगी।

फागुनी तेरस पर भावयात्रा का आयोजन हुआ

महिदपुर-श्री शत्रुंजय आदिनाथ तीर्थधाम में फागुनी तेरस दिनांक 13 मार्च को भव्य यात्रा का आयोजन किया गया। पूज्य साध्वीवर्या श्री पद्मलता श्रीजी, श्री पूर्णलताश्रीजी, श्री तत्वरुचि श्रीजी, श्री दौलतलताश्रीजी एवं श्री आज्ञारुचि श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में पंचान्हिका महोत्सव के अंतर्गत 22 से 26 मार्च तक हुए महोत्सव में पूज्य गच्छ नायक श्री सूर्योदयसागर सूरीजी का 101 वां जन्म दिन मनाया गया। भावयात्रा हुई, चौरासी आराधना तथा शक्रस्तव एवं संतिकरम अभिषेक का आयोजन किया गया।

श्री गिरनार में चार्तुमास एवं उपधान तप

गिरनार- श्री गिरनार महातीर्थ में पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जिनेशरत्न सूरीश्वरजी महाराजा का चार्तुमास गिरनार दर्शन धर्मशाला में होने जा रहा है। चार्तुमास प्रवेश आषाढ़ सुदी 13, दिनांक 19 जुलाई को होगा। चार्तुमास का आरंभ आषाढ़ सुदी-14, 20 जुलाई से होगा। महापर्व आराधना दिनांक 31 अगस्त से 7 सितंबर तक होगी। उपधान तप का प्रथम मुर्हूत दिनांक 13 अक्टूबर तथा द्वितीय प्रवेश 15 अक्टूबर को होगा। तपस्वियों की शोभायात्रा 29 नवंबर को तथा माल परिधान 30 नवंबर को होगा। आयोजक गांधी परिवार है।

बीकानेर में अंजन प्रतिष्ठा की जाजम हुई

बीकानेर- सैकड़ों वर्ष प्राचीन श्री गंगेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय में जिनबिम्ब की अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव के चढ़ावा बोलने के लिये जाजम का आयोजन दिनांक 17 मार्च को किया गया। स्मरण रहे यहां जिन मंदिर की अंजन प्रतिष्ठा जून माह में होने जा रही है। प्रतिष्ठा 30 जून को होगी। जीर्णोद्धार का कार्य पूज्य प्रवृनीय श्री चन्द्रप्रभा श्रीजी म.सा. है, जाजम के चढ़ावे अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई मनोज कुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन में हुए। प्रतिष्ठा का आयोजन भी आपके निर्देशन में होगा।

✲ सांसारिक कामों में कर्म को याद न करना परन्तु पुरुषार्थ को ऊपर लाना-मुख्य करना। कर्म का विचार करने से वे जानेवाले नहीं, परन्तु धक्का दोगे तब वे जाएँगे, इसलिए पुरुषार्थ करना।

एक इतिहास सर्जक महापुरुष के महाप्रयाण से जैन जगत की दौलत लूट गई : मंगल स्मरण

✻ सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति देवलोक के वासी बने।

✻ जैन जगत स्तब्ध रह गया : बहुत ही सहजता से देह त्यागी।

पूना- सब कुछ अच्छा चल रहा था। सोलापुर में 16 फरवरी को प्रतिष्ठा महोत्सव में निश्रा प्रदान कर त्रिदिवसीय महोत्सव में निश्रा प्रदान करने के लिये संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधि पति गीतार्थ मूर्घनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्य पाद श्री दौलत सागरसूरीजी महाराजा ने सूयश गार्डन में 18 फरवरी को प्रातःकाल प्रवेश किया था। सुबह प्रवेश करते है, श्रीसंघ का 7.30 बजे लगभग मांगलिक प्रदान की, सभी विसर्जित हुए पूज्यपादश्री के मुनि भगवंतों ने उपाश्रय में व्यवस्थित रुप से विराजमान करवाया और धर्म क्रिया में निमग्न बने वर्तमान नूतन गच्छाधिपति वचनसिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराजा भी साथ ही थे। पूज्यपाद आचार्य देवेश बड़ी तनमंयता से सागर की दौलत का ध्यान रख रहे थे। प्रातः 10 बजे पूज्यश्री नवकारसी करवाई और लगभग 10.31 बजे पूज्यश्री में कुछ विचलन दिखाई दिया। सभी गुरु भगवंत आसपास एकत्र हो गये थे, कुछ ही समय में सहजता से आपश्री ने देह त्याग कर कुछ ही समय में सहजता से आपश्री ने देहत्याग कर देवलोक का वासी बनने के लिये महाप्रयसा कर दिया। कोई रोग नहीं, किसी को कोई तकलीफ नहीं और पूज्यश्री छोड़कर चल दिया, तत्काल ही पूना श्रीसंघ वरिष्ठों को अवगत कराया गया और कुछ ही समय में यह समाचार सम्पूर्ण विश्व और देशभर के जैन जगत में प्रचारित हो गया कि संघ स्थिवर 103 वर्षीय 85 वर्ष के संयमी ने देह त्याग दी है। हजारों की संख्या में पूना के उपकारी गुरु भगवंत के दर्शन करने के लिये आने लगे। रात देर तक लाईन लगाकर धर्मिष्ठों ने दर्शन किया। वरिष्ठ श्रावकों और गुरु भगवंतों ने विचार विमर्श कर वर्धमान जैन आगम मंदिर जिसके सर्जनकर्त्ता पूज्यश्री के सह अग्नि संस्कार करने का निश्चय किया गया। रात्रि भक्ति में सुयश गार्डन में अंग्नि संस्कार को छोड़कर अन्य सभी चढ़ावे बोले गये। सागर समुदाय की श्रावक समिति श्री निरंजनभाई चौकसी श्री शैलेषभाई जवेरी आदि का आगमन होते ही विचार विमर्श कर गुरु भगवंतों से संपर्क कर यह निर्णय लिया गया कि सागर समुदाय के आगामी गच्छाधिपति पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री देवेन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य दीर्घ संयमी वचनसिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा को सागर गच्छाधिपति पद पर प्रतिष्ठित किया जाता है और पूज्यपाद श्री दौलतसागर सूरीजी का अंग्नि संस्कार कात्रज में 19 फरवरी को प्रातःकाल शुभ लग्नांश बेला में किया जायेगा पर समाचार जैन जगत के सभी श्री संघों में भेज दिया गया।

प्रातःकाल सुयश गार्डन से हजारों धर्मिष्ठों के साथ जय जय नंदा जय जय भदा के नारों से पूना का आकाश गुंजायमान करते हुए पालकी निकली। जो प्रसिद्ध जैन तीर्थ कात्रज पहुंची।पालकी यात्रा में हजारों की संख्या में गुरु भक्तों की उपस्थिति रही। लगभग 5 किलोमीटर का मार्ग गुलाल से भर गया। जय-जय नंदा जय-जय भदा, दौलतसागरजी अमर रहे के नारे से आकाश गुंज उठा था। कात्रज तीर्थ पहुंचने के पूर्व ही हजारों की संख्या में भक्त पहुंच गये थे। यहां पर जैन शास्त्र विधान कर पूज्यश्री की देह गुरु भगवंतों ने श्रावकों को सौंप दी उसके बाद अग्नि संस्कार की क्रिया आरंभ हुई। लगभग 1 क्विंटल चंदन की लकड़ी के गुटके का उपयोग अग्नि संस्कार में किया गया। देववंदन की क्रिया की गई।

साध्वी श्री चन्द्ररत्ना श्रीजी का चार्तुमास

पाली- जिनागमसेवी पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देव श्री दौलत सागर सूरीजी महाराज साहब की आज्ञावृत्ति सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या रही तपस्वी साध्वी कुसुम श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री चन्द्ररत्ना श्रीजी म.सा. एवं बाल साध्वी श्री ध्वनिरत्ना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास पाली के गुजराती जैन आराधना भवन में होगा। चार्तुमासिक आराधना के अंतर्गत अनेक विविध तप, जप, अनुष्ठान महोत्सव के आयोजन की बड़ी श्रृंखला है।यहां पर पूज्य मुनिराज श्रीसुमतिचन्द्रसागरजी म.सा. का श्री चार्तुमास होने जा रहा है।

सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति पद पर वचनसिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराजा

✻ जो महापुरुष लगातार 36-36 वर्षों से श्री भगवतीजी आगम के चातुमार्सिक प्रवचन दे रहे है।✻ जो महापुरुष गुजरात के वाव के प्रथम आचार्य भगवंत है।✻ जो महापुरुष ज्योतिष के प्रकांड विद्वान है।✻ जो महापुरुष वचनसिद्ध है और जिनका संयम शुद्ध है।✻ जो महापुरुष 64 वर्ष से अखंड नवपदजी ओली की आराधना कर रहे है।✻ जो महापुरुष 9-9 वर्षीतप के आराधक है।✻ जो महापुरुष न्याय-व्याकरण-काव्य छंदशास्त्र-आगमों के विशिष्ट जाता है। ✻ जो महापुरुष संस्कृत भाषा के मास्टर है। ✻ जो महापुरुष भारतभर के अनेक संघों में वर्षीतप की प्रेरक बन हजारों तपस्विओं के उपकारी है। ✻ जो महापुरुष भोपावर तीर्थ अभ्युदयपुरम् कल्याण मंदिर तीर्थ जैसे तीर्थों के मुख्य प्रतिष्ठाचार्य है।✻ जो महापुरुष सरलता के भंडार है। ✻ ऐसे महासंयमी-महापवित्र महापुरुष अब सागर समुदाय के गच्छाधिपति है।

कारजण में पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा की प्रेरणा से वर्षीतप आराधना होगी

कारजण- सागर समुदाय के सिरताज पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा एवं वर्धमान तप आराधक पूज्य मुनिराज श्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. की प्रेरणा और मार्गदर्शन के साथ पूज्य साध्वीवर्या आत्मज्ञा श्रीजी म.सा. की प्रेरणा से कारजण श्री संघ वर्षीतप आराधना का शुभारंभ 2 अप्रेल से होने जा रहा है। पूज्यश्री की भावना से अवगत होने के साथ श्री संघ में जाग्रति आई और 58 नाम अभी तक वर्षीतप करनेवाले आराधक के आ चुके है। वर्षीतप आराधना के मुख्य लाभार्थी श्रीमती चन्द्रकांता बहन महेन्द्रकुमार शाह है और नाम आने की संभावना है।

आशना श्रीवीरपथ स्वीकार करेंगी

मुंबई- भायंदर निवासी श्रीमती कल्पना बहन चेतनभाई मुथा की सुपुत्री कुमारी आशना बहन ने दीक्षित होकर परमात्मा श्री वीरप्रभु का पथ स्वीकार करने का निश्चय किया है। आपकी दीक्षा सूरत में दिनांक 15 अप्रेल को सम्पन्न होगी। दीक्षा दाता पूज्य आचार्य देवेश श्री कुलचंद्र सूरीश्वरजी म.सा. है।

आजीविका आदि की प्राप्ति पूर्व के उपार्जित शुभ-अशुभ कर्मों के अनुसार होगी ऐसा विचार कर मुमुक्षु जीव को मात्र निमित्त रुप प्रयत्न करना उचित है, परन्तु भयाकुल होकर चिंता या न्याय का त्याग करना उचित नहीं, क्योंकि यह तो केवल व्यामोह है जो शमन करने योग्य है।

संयम स्पर्शीय उपधान तप का आयोजन

ऋजुवालिका- श्री वीर परमात्मा की केवलज्ञान भूमि ऋजुवालिका में संयम स्पर्शीय उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। पूज्य विजयश्री मुक्तिप्रभ सूरीश्वरजी महाराज आदि ठाणा की अमृत निश्रा में होने जा रहे उपधान तप का प्रथम प्रवेश दिनांक 12 अक्टूबर तथा द्वितीय प्रवेश दिनांक 14 अक्टूबर को होगा। उपधान तप माल विधान की शोभायात्रा दिनांक 14 अक्टूबर को होगा। उपधान तप माल विधान की शोभायात्रा दिनांक 28 नवंबर को आयोजित की गई। उपधान माल 29 नवंबर को सम्पन्न होगी।

दादा के 18 अभिषेक और ध्वजा चढ़ाई जावेगी

पालीताना- श्री शत्रुंजय तीर्थाधिपति श्री आदिश्वर दादा के दीक्षा कल्याणक पर दादा के 18 अभिषेक के साथ दादा की 493 वीं वर्षगांठ पर मूलनायक प्रभु की जिनालय के शिखर पर ध्वजा चढ़ाने के लिये दिनांक 26 नवंबर को बोली हुई। बोली सुबह 10 बजे से भाताघर जय तलेटी पर के पास बोली गई। दादा के अट्ठारह अभिषेक दिनांक 2 अप्रेल को होंगे तथा वर्षगांठ पर ध्वजा 19 मई को चढ़ाई जावेगी।

बंधु बेलड़ी आचार्य भगवंत की जोड़ी टूट गई : पू.आ.श्री जिनचंद्रसागर सूरीजी महाराजा ने देह त्यागी

✻ अयोध्यापुरम् तीर्थ में अंतिम संस्कार विधि हुई। ✻ सारे देश में गुणानुवाद सभा के आयोजन हुए।

अयोध्यापुरम्- पूज्य बंधुबेलड़ी आचार्य भगवंत श्री जिनचंद्रसागर सूरीजी महाराजा ने विगत माह अयोध्यापुरम् तीर्थ में रात्रि में अंतिम सांस लेकर देहत्याग दी। आपश्री के भाई महाराज श्री हेमचंद्रसागर सूरीजी महाराजा के साथ जैन जगत में बंधु बेलड़ी के नाम से प्रसिद्ध आचार्य भगवंत की जोड़ी टूटने से जैन जगत को बड़ी क्षति पहुंची है। आपश्री अयोध्यापुरम् सुमेरु तीर्थ की मंगल स्थावन जैन जगत अनुपम भेंट है। अंतिम संस्कार में देशभर के श्री संघों के गुरुभक्तों का आगमन हुआ था। अंतिम संस्कार का चढ़ावा 62,62000/- रुपये में श्रीमती सीता बहन कांतिलाल भीखालाल शाह परिवार ने लिया। लगभग 1.50 करोड़रुपये की बोलियां हुई। आपश्री के अवसान के बाद देशभर के श्री संघों में गुणानुवाद सभा के आयोजन हुए। आगमोद्धारक परिवार द्वारा भावांजलि अर्पित की गई है।

12 जून को संयम पालरेचा रतलाम में श्री प्रभुवीर के श्रमण पथ को स्वीकार करेंगे

रतलाम- मुमुक्षु श्री संयम पालरेचा संयम जीवन ग्रहण कर बंधु बेलड़ी आचार्य भगवंत के गुरुकुल में सम्मिलित होकर परमात्मा प्रभुवीर के शासन को आगे बढ़ायेंगे। आपकी दीक्षा 12 जून को रतलाम में होगी। विगत दिनों बंधु बेलड़ी आचार्यश्री की निश्रा में अयोध्यापुरम् तीर्थ में आपको दीक्षा मुर्हूत प्रदान किया गया था श्री देवासर चार थुई तपागच्छ श्री संघ के साथ आपके पिताश्री ने अयोध्यापुरम् तीर्थ में पहुंचकर पूज्यश्री से संयम पालरेचा की दीक्षा का मुर्हूत पूज्य आचार्यश्री प्रसन्नचंद्रसागरसूरीजी आदि ठाणा के साथ बड़ी संख्या में साधु-साध्वी का आगमन रतलाम दीक्षा में होगा। बंधु बेलड़ी आचार्य भगवंत की निश्रा में विगत दो वर्षों में रतलाम में होनेवाली यह चौथी दीक्षा है।

श्री धमनार में मेला आयोजित हुआ

मंदसौर- अति प्राचीन श्री हंस मुखा ऋषभदेव तीर्थ घमनार में प्रथम तीर्थंकर परमात्मा श्री ऋषभदेव प्रभु के जन्म एवं दीक्षा कल्याणक पर भव्य मेला आयोजित किया गया। दिनांक 2 अप्रेल को मेला, वरघोड़ा का आयोजन किया गया। वार्षिक बोलियां हुई तथा वर्षीतप की आराधना करनेवाले का बहुमान किया गया। महोत्सव की प्रेरणा पूज्य साध्वी श्री शुद्धिप्रसन्ना श्रीजी के द्वारा प्रदान की गई।

चार्तुमास.... चार्तुमास....!

✻ सेठ श्री धार्मचंद पेढ़ी जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ सावड़ी में पूज्य पंन्यास प्रवर श्री प्रशांतशेखरविजयजी आदि ठाणा का चार्तुमास सादड़ी नगर में होने जा रहा है।

✻ पूज्य आचार्यदेव श्री रत्नसेन सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश 17 जुलाई को श्री जैन पोसली पार्श्वनाथ श्वेतांबर ट्रस्ट, श्री पोसालिया जैन संघ पोसालिया जिला सिरोही-307028 (राज.)

श्री नागेश्वर तीर्थ में पारिवारिक शिविर

नागेश्वर- विश्व विख्यात श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ में पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री भुवनभानु सूरीश्वरजी महाराज के समुदायवर्तीय पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री कुलबोधि सूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा की अमृत निश्रा में पारिवारिक शिविर का आयोजन होने जा रहा है। दिनांक 3 से 5 मई तक आयोजित शिविर में 1 से 55 वर्ष की वय वाले श्रावक-श्राविका भाग ले सकेंगे। 500/- रुपये रजिस्ट्रेशन फीस है। सम्बोधि परिवार मुंबई आयोजक है।

कन्या 99 यात्रा का आयोजन

पालीताना- पूज्य साध्वीवर्या श्री तत्वपूर्णा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में श्री शत्रुंजय गिरीराज की कन्या 99 यात्रा का आयोजन होने जा रहा है। नव्वांणु यात्रा का शुभारंभ दिनांक 14 अप्रेल से होगा तथा पूर्णाहुति दिनांक 5 जून को होगी।

हमारे तीज-त्यौहार

1- चैत्र वदी-8	मंगलवार	2-4-2024	श्री ऋषभदेव जन्म दीक्षा कल्याणक वर्षीतप आरंभ
2- चैत्र वदी-9	बुधवार	3-4-2024	पंन्यास प्रवर श्री अभ्युदयसागरजी म.सा. का कालधर्म दिन
3- चैत्र सुदी-1	मंगलवार	9-4-2024	गुड़ी पड़वा हिन्दु नववर्ष विक्रम संवत् 2081 आरंभ
4- चैत्र सुदी-7	सोमवार	15-4-2024	चैत्र नवपद शाश्वती ओली आरंभ
5- चैत्र सुदी-13	रविवार	21-4-2024	श्री महावीर स्वामीजी का जन्म कल्याणक
6- चैत्र सुदी-15	मंगलवार	22-4-2024	श्री शत्रुंजय की चैत्री पूनम यात्रा 5 करोड़ मुनि पुण्डरीक स्वामी के साथ मोक्ष गये

पंचक :- **आरम्भः-** चैत्र वदी-11,शुक्रवार, दिनांक 5-4-2024 समय- 7.14 बजे से आरंभ
समाप्तः- चैत्र सुदी-1, मंगलवार, दिनांक 9-4-2024 समय- 7.33 बजे तक

पुष्प नक्षत्र :- **आरम्भः-** चैत्र सुदी-8, मंगलवार, दिनांक 16-4-2024 समय- 3.07 बजे से आरंभ
समाप्तः- चैत्र सुदी-9, बुधवार, दिनांक 17-4-2024 समय- 5.17 बजे तक

अहो सत्पुरुष के वचनामृत, मुद्रा और सत्समा-गम ! सुपुप्त चेतना को जगानेवाले; पतित वृत्ति को स्थिर रखनेवाले दर्शनमात्र से भी निर्दोष, अपूर्व स्वभाव के प्रेरक; स्वरुप प्रतीति, अप्रमत्त संयम और पूर्ण वीतराग निर्विकल्प स्वभाव के कारणभूत और अन्त में अयोगी स्वभाव को प्रकट करके अनंत अव्याबाध स्वरुप में स्थिति करानेवाले ! त्रिकाल जयवन्त हो !

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

सबके बिंदु- दुःख का सागर

तिलमित्तं विसयसुहं दुहं च गिरिराय-सिंग-तुंगयरं
भवकोडिहिं न निट्ठइ जं जाणसु तं करिज्जासु ॥

संसार में सुख तिलमात्र जितना है और करोड़ों भवों में निपटे इतना मेरु पर्वत के शिखर जितना उतुंग दुःख है, इतना जानकर, अब तुझे जो उचित लगे वह कर।

सादर आमंत्रण

✲ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✲ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✲ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✲ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

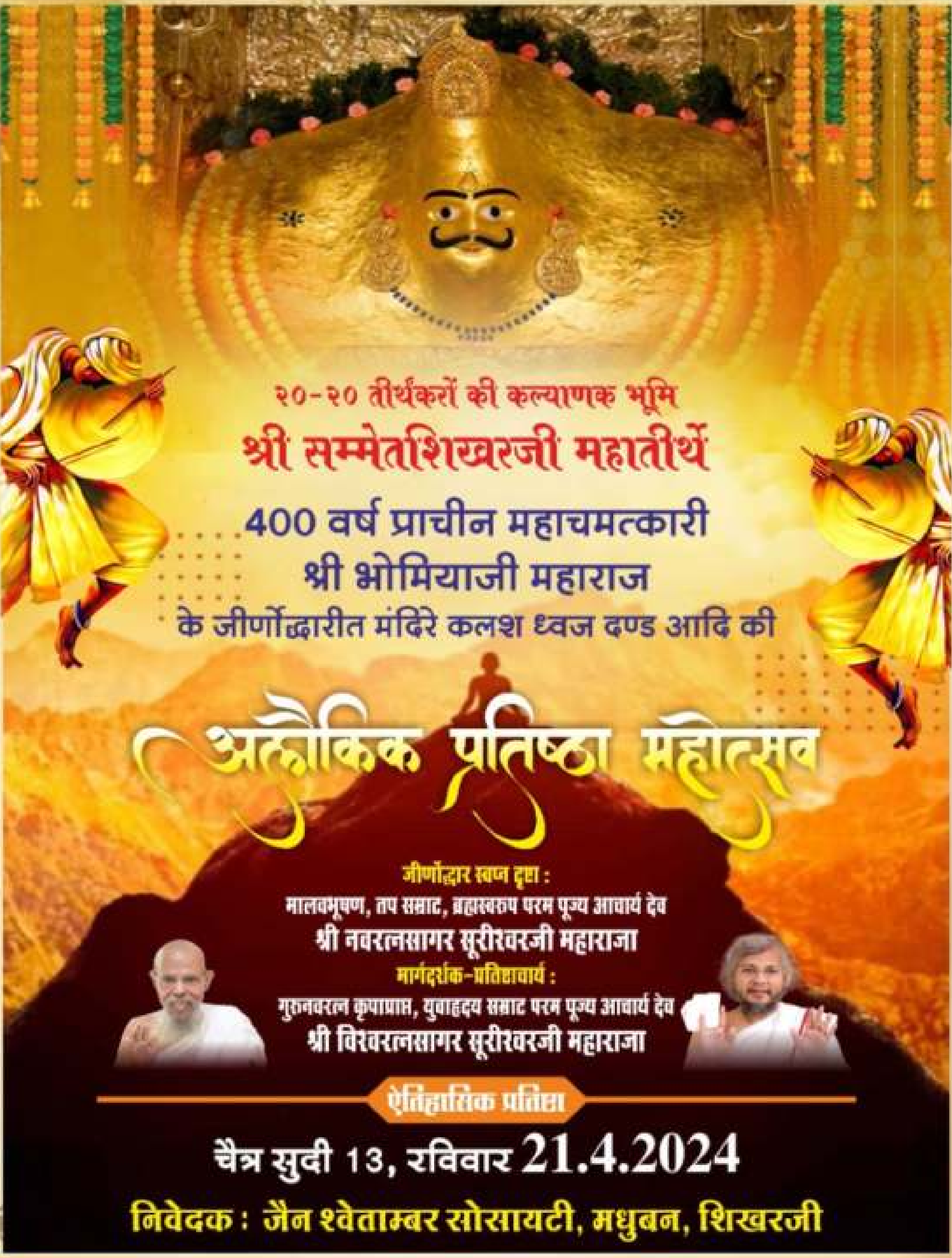

वर्ष 29 | चैत्र-वैशाख | अप्रैल-2024 | अंक 04 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2024-2026

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-
डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

प्रति, बुक पोस्ट

श्रीमान् ....

....

....

स्टाम्प टिकिट

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड़, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897